केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) एवं NCTE नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

CTET

जूनियर स्तर (कक्षा VI-VIII)

बाल विकास एवं शिक्षण

भाषा- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत

अध्यायवार

सॉल्व्ड पेपर्स

प्रधान सम्पादक

आनन्द कुमार महाजन

लेखक

परीक्षा विशेषज्ञ समिति

सम्पादकीय कार्यालय

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com/ www.yctfastbooks.com/ www.yctbooksprime.com

© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP YCT BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

बाल विकास और अध्यापन..... 9-182

- बाल विकास (प्रारम्भिक विद्यालय का बालक).....9-142
  - विकास की अवस्था तथा अधिगम से उसका संबंध 9
  - बालक के विकास के सिद्धांत 19
  - आनुवांशिकता और पर्यावरण का प्रभाव.....27
  - सामाजिकीकरण दबाव : सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, अभिभावक और मित्रगण)....32
  - पियाजे, कोहलबर्ग और बायगोत्सकी : निर्माण और विवोचित संदर्श.....40
  - बाल-केंद्रित और प्रगामी शिक्षा की अवधारणाएं.....81
  - बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श.....90
  - बहु-आयामी बौद्धिकता 94
  - भाषा और चिंतन.....102
  - समाज निर्माण के रूप में लिंग : लिंग भूमिकाएँ, लिंग-पूर्वाग्रह और शैक्षणिक व्यवहार.....108
  - शिक्षार्थियों के मध्य वैयक्तिक विभेद, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता पर आधारित विभेदों को समझना करना.....116
  - अधिगम के लिए मूल्यांकन और अधिगम के मूल्यांकन के बीच अंतर; विद्यालय आधारित मूल्यांकन, सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन : संदर्श और व्यवहार.....124
  - शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर के मूल्यांकन के लिए; कक्षा में शिक्षण और विवेचित चिंतन के लिए तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि के लिए उपयुक्त प्रश्न तैयार करना।.....132
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा निवेश आवश्यकता वाले बालकों को समझना.....142-182
  - गैर-लाभप्राप्त और अवसर-वंचित शिक्षार्थियों सहित विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना 147
  - अधिगम संबंधी समस्याओं, 'कठिनाई' रखने वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना.....156
  - मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट, प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना 174

हिन्दी 183-413

- ❑ भाषा बोधगम्यता 183-264
  - (अनदेखे अनुच्छेदों को पढ़ना) 183
- ❑ भाषा विकास का अध्यापन.....265-413
  - अधिगम अर्जन..... 265
  - भाषा अध्यापन के सिद्धांत..... 291
  - सुनने और बोलने की भूमिका, भाषा का कार्य तथा बालक इसे किस प्रकार एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं।..... 311
  - मौखिक और लिखित रूप में विचारों के सम्प्रेषण के लिए किसी भाषा के अधिगम में व्याकरण की भूमिका पर विवेचित संदर्श..... 321
  - एक भिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की चुनौतियाँ, भाषा की कठिनाइयां, त्रुटियाँ और विकार 352
  - भाषा कौशल 360
  - भाषा बोधगम्यता और प्रवीणता का मूल्यांकन करना : बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना... 375
  - अध्यापन-अधिगम सामग्री : पाठ्यपुस्तक, मल्टीमीडिया सामग्री, कक्षा का बहुभाषायी संसाधन 396
  - उपचारात्मक अध्यापन..... 411

English 414-634

- ❑ LANGUAGE COMPREHENSION 414-507
  - (Reading unseen passage-two passage one prose or drama and one poem with question on comprehension, inference, grammar and verbal ability (Prose passage may be literary, scientific, narrative or discursive)..... 414
- ❑ PEDAGOGY OF LANGUAGE DEVELOPMENT.....508-634
  - Language Learning and Language Acquisition 508
  - Principles of Language Teaching..... 533
  - Role of Listening and Speaking function of Language and How Children use it as a tool 547
  - A Critical Perspective on the Role of Grammar in Learning a Language for Communicating Ideas Verbally and in Written form 553

- **Challenges of Teaching Language in a Diverse Classroom; Language Difficulties, Errors and Disorders** **577**
- **Language Skills** **582**
- **Evaluating/Assessment Language Comprehension and Proficiency : Speaking,Listening, Reading and Writing** **588**
- **Teaching-Learning Materials : Textbook, Multimedia Materials, multilingual resource of the classroom.** **618**
- **Remedial Teaching/Diagnostic** **633**

संस्कृत 634-784

❑ **भाषाबोध** **634-703**

- **अपठितखण्डानां पठनं- द्वे खण्डे, एकः गद्यात् वा नाटकात् एकः च काव्यात्। अवगमनस्य, अंतर्ज्ञानस्य, व्याकरणस्य, वाचिकक्षमतायाः च प्रश्नाः (गद्य साहित्यिकं, वैज्ञानिकं, कथात्मकं वा विमर्शात्मकं वा भवितुम् अर्हति)** **634**

❑ **भाषाविकासस्य शिक्षाशास्त्रम्** **704-784**

- **भाषा अधिगम अधिग्रहणं च** **704**
- **भाषाशिक्षणस्य सिद्धान्ताः** **720**
- **श्रवणस्य वक्तुं च भूमिका, भाषायाः कार्य तथा च बालकाः तस्याः उपयोगं कथं साधनरूपेण कुर्वन्ति इति** **727**
- **मौखिकरूपेण लेखनरूपेण च विचारणां संप्रेषणार्थं भाषाशिक्षणे व्याकरणस्य भूमिकायाः समीक्षात्मकदृष्टिकोणः** **731**
- **विविधकक्षायां भाषाशिक्षणस्य आव्हानानि; भाषाकष्टानि, दोषाः, विकाराः च** **746**
- **भाषा कौशलम्** **750**
- **भाषाबोधस्य प्रवीणतायाः च मूल्याङ्कनम्: वक्तुं, श्रवणं, पठनं, लेखनं च** **756**
- **अध्यापकशिक्षणसामग्रीः पाठ्यपुस्तकानि, बहुमाध्यमसामग्री, बहुभाषिककक्षासंसाधनम्** **774**
- **उपायात्मक निदानात्मक शिक्षणम्** **784**

प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण

बाल विकास और अध्यापन					
क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न	क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न
1.	**CTET, 2024 (VI-VIII) (21-01-2024)**	1 × 30 = 30	*30.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (11-01-2022)**	1 × 30 = 30
2.	**CTET, 2023 (VI-VIII) (20-08-2023)**	1 × 30 = 30	*31.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (12-01-2022)**	1 × 30 = 30
3.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-12-2022)**	1 × 30 = 30	*32.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (17-01-2022)**	1 × 30 = 30
4.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (09-01-2023)**	1 × 30 = 30	*33.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-01-2022)**	1 × 30 = 30
5.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (11-01-2023)**	1 × 30 = 30	*34.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (20-12-2021)**	1 × 30 = 30
6.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (12-01-2023)**	1 × 30 = 30	*35.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-12-2021)**	1 × 30 = 30
7.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (13-01-2023)**	1 × 30 = 30	*36.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (22-12-2021)**	1 × 30 = 30
8.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (17-01-2023)**	1 × 30 = 30	*37.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (23-12-2021)**	1 × 30 = 30
9.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (18-01-2023)**	1 × 30 = 30	*38.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (24-12-2021)**	1 × 30 = 30
10.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (19-01-2023)**	1 × 30 = 30	*39.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (27-12-2021)**	1 × 30 = 30
11.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (20-01-2023)**	1 × 30 = 30	*40.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (28-12-2021)**	1 × 30 = 30
12.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (23-01-2023)**	1 × 30 = 30	*41.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (29-12-2021)**	1 × 30 = 30
13.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (24-01-2023)**	1 × 30 = 30	*42.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (30-12-2021)**	1 × 30 = 30
14.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (25-01-2023)**	1 × 30 = 30	*43.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (31-12-2021)**	1 × 30 = 30
15.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (27-01-2023)**	1 × 30 = 30	*44.*	**CTET, 2020 (VI-VIII) (31-01-2021)**	1 × 30 = 30
16.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-01-2023)**	1 × 30 = 30	*45.*	**CTET, 2019 (VI-VIII) (08-12-2019)**	1 × 30 = 30
17.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (29-01-2023)**	1 × 30 = 30	*46.*	**CTET 2019 (VI-VIII) (07-07-2019)**	1 × 30 = 30
18.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (30-01-2023)**	1 × 30 = 30	*47.*	**CTET 2018 (VI-VIII) (09-12-2018)**	1 × 30 = 30
19.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (01-02-2023)**	1 × 30 = 30	*48.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (18-09-2016)**	1 × 30 = 30
20.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (03-02-2023)**	1 × 30 = 30	*49.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (21-02-2016)**	1 × 30 = 30
21.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (06-02-2023)**	1 × 30 = 30	*50.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (20-09-2015)**	1 × 30 = 30
22.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (01-01-2022)**	1 × 30 = 30	*51.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (22-02-2015)**	1 × 30 = 30
23.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (03-01-2022)**	1 × 30 = 30	*52.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (21-09-2014)**	1 × 30 = 30
24.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (04-01-2022)**	1 × 30 = 30	*53.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (16-02-2014)**	1 × 30 = 30
25.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (05-01-2022)**	1 × 30 = 30	*54.*	**CTET 2013 (VI-VIII) (28-07-2013)**	1 × 30 = 30
26.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (06-01-2022)**	1 × 30 = 30	*55.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (18-11-2012)**	1 × 30 = 30
27.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (07-01-2022)**	1 × 30 = 30	*56.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (29-01-2012)**	1 × 30 = 30
28.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (08-01-2022)**	1 × 30 = 30	*57.*	**CTET 2011 (VI-VIII) (26-06-2011)**	1 × 30 = 30
29.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (10-01-2022)**	1 × 30 = 30			
				कुल प्रश्न-पत्र = 57	**1710**

हिन्दी					
क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न	क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न
1.	**CTET, 2024 (VI-VIII) (21-01-2024)**	1 × 60 = 60	*30.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (11-01-2022)**	1 × 60 = 60
2.	**CTET, 2023 (VI-VIII) (20-08-2023)**	1 × 60 = 60	*31.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (12-01-2022)**	1 × 60 = 60
3.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-12-2022)**	1 × 60 = 60	*32.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (17-01-2022)**	1 × 60 = 60
4.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (09-01-2023)**	1 × 60 = 60	*33.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-01-2022)**	1 × 60 = 60
5.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (11-01-2023)**	1 × 60 = 60	*34.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (20-12-2021)**	1 × 60 = 60
6.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (12-01-2023)**	1 × 60 = 60	*35.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-12-2021)**	1 × 60 = 60
7.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (13-01-2023)**	1 × 60 = 60	*36.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (22-12-2021)**	1 × 60 = 60
8.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (17-01-2023)**	1 × 60 = 60	*37.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (23-12-2021)**	1 × 60 = 60
9.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (18-01-2023)**	1 × 60 = 60	*38.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (24-12-2021)**	1 × 60 = 60
10.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (19-01-2023)**	1 × 60 = 60	*39.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (27-12-2021)**	1 × 60 = 60
11.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (20-01-2023)**	1 × 60 = 60	*40.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (28-12-2021)**	1 × 60 = 60
12.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (23-01-2023)**	1 × 60 = 60	*41.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (29-12-2021)**	1 × 60 = 60
13.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (24-01-2023)**	1 × 60 = 60	*42.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (30-12-2021)**	1 × 60 = 60
14.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (25-01-2023)**	1 × 60 = 60	*43.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (31-12-2021)**	1 × 60 = 60
15.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (27-01-2023)**	1 × 60 = 60	*44.*	**CTET, 2020 (VI-VIII) (31-01-2021)**	1 × 60 = 60
16.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-01-2023)**	1 × 60 = 60	*45.*	**CTET, 2019 (VI-VIII) (08-12-2019)**	1 × 60 = 60
17.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (29-01-2023)**	1 × 60 = 60	*46.*	**CTET 2019 (VI-VIII) (07-07-2019)**	1 × 60 = 60
18.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (30-01-2023)**	1 × 60 = 60	*47.*	**CTET 2018 (VI-VIII) (09-12-2018)**	1 × 60 = 60
19.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (01-02-2023)**	1 × 60 = 60	*48.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (18-09-2016)**	1 × 60 = 60
20.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (03-02-2023)**	1 × 60 = 60	*49.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (21-02-2016)**	1 × 60 = 60
21.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (06-02-2023)**	1 × 60 = 60	*50.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (20-09-2015)**	1 × 60 = 60
22.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (01-01-2022)**	1 × 60 = 60	*51.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (22-02-2015)**	1 × 60 = 60
23.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (03-01-2022)**	1 × 60 = 60	*52.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (21-09-2014)**	1 × 60 = 60
24.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (04-01-2022)**	1 × 60 = 60	*53.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (16-02-2014)**	1 × 60 = 60
25.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (05-01-2022)**	1 × 60 = 60	*54.*	**CTET 2013 (VI-VIII) (28-07-2013)**	1 × 60 = 60
26.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (06-01-2022)**	1 × 60 = 60	*55.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (18-11-2012)**	1 × 60 = 60
27.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (07-01-2022)**	1 × 60 = 60	*56.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (29-01-2012)**	1 × 60 = 60
28.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (08-01-2022)**	1 × 60 = 60	*57.*	**CTET 2011 (VI-VIII) (26-06-2011)**	1 × 60 = 60
29.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (10-01-2022)**	1 × 60 = 60			
				कुल प्रश्न-पत्र = 57	**3420**

अंग्रेजी

क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न	क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न
1.	**CTET, 2024 (VI-VIII) (21-01-2024)**	1 × 60 = 60	*30.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (11-01-2022)**	1 × 60 = 60
2.	**CTET, 2023 (VI-VIII) (20-08-2023)**	1 × 60 = 60	*31.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (12-01-2022)**	1 × 60 = 60
3.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-12-2022)**	1 × 60 = 60	*32.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (17-01-2022)**	1 × 60 = 60
4.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (09-01-2023)**	1 × 60 = 60	*33.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-01-2022)**	1 × 60 = 60
5.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (11-01-2023)**	1 × 60 = 60	*34.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (20-12-2021)**	1 × 60 = 60
6.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (12-01-2023)**	1 × 60 = 60	*35.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-12-2021)**	1 × 60 = 60
7.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (13-01-2023)**	1 × 60 = 60	*36.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (22-12-2021)**	1 × 60 = 60
8.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (17-01-2023)**	1 × 60 = 60	*37.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (23-12-2021)**	1 × 60 = 60
9.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (18-01-2023)**	1 × 60 = 60	*38.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (24-12-2021)**	1 × 60 = 60
10.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (19-01-2023)**	1 × 60 = 60	*39.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (27-12-2021)**	1 × 60 = 60
11.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (20-01-2023)**	1 × 60 = 60	*40.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (28-12-2021)**	1 × 60 = 60
12.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (23-01-2023)**	1 × 60 = 60	*41.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (29-12-2021)**	1 × 60 = 60
13.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (24-01-2023)**	1 × 60 = 60	*42.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (30-12-2021)**	1 × 60 = 60
14.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (25-01-2023)**	1 × 60 = 60	*43.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (31-12-2021)**	1 × 60 = 60
15.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (27-01-2023)**	1 × 60 = 60	*44.*	**CTET, 2020 (VI-VIII) (31-01-2021)**	1 × 60 = 60
16.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-01-2023)**	1 × 60 = 60	*45.*	**CTET, 2019 (VI-VIII) (08-12-2019)**	1 × 60 = 60
17.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (29-01-2023)**	1 × 60 = 60	*46.*	**CTET 2019 (VI-VIII) (07-07-2019)**	1 × 60 = 60
18.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (30-01-2023)**	1 × 60 = 60	*47.*	**CTET 2018 (VI-VIII) (09-12-2018)**	1 × 60 = 60
19.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (01-02-2023)**	1 × 60 = 60	*48.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (18-09-2016)**	1 × 60 = 60
20.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (03-02-2023)**	1 × 60 = 60	*49.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (21-02-2016)**	1 × 60 = 60
21.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (06-02-2023)**	1 × 60 = 60	*50.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (20-09-2015)**	1 × 60 = 60
22.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (01-01-2022)**	1 × 60 = 60	*51.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (22-02-2015)**	1 × 60 = 60
23.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (03-01-2022)**	1 × 60 = 60	*52.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (21-09-2014)**	1 × 60 = 60
24.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (04-01-2022)**	1 × 60 = 60	*53.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (16-02-2014)**	1 × 60 = 60
25.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (05-01-2022)**	1 × 60 = 60	*54.*	**CTET 2013 (VI-VIII) (28-07-2013)**	1 × 60 = 60
26.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (06-01-2022)**	1 × 60 = 60	*55.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (18-11-2012)**	1 × 60 = 60
27.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (07-01-2022)**	1 × 60 = 60	*56.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (29-01-2012)**	1 × 60 = 60
28.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (08-01-2022)**	1 × 60 = 60	*57.*	**CTET 2011 (VI-VIII) (26-06-2011)**	1 × 60 = 60
29.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (10-01-2022)**	1 × 60 = 60			
				कुल प्रश्न-पत्र = 57	**3420**

संस्कृत

क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न	क्र.	परीक्षा का नाम एवं परीक्षा तिथि	कुल परीक्षा प्रश्न
1.	**CTET, 2024 (VI-VIII) (21-01-2024)**	1 × 60 = 60	*30.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (11-01-2022)**	1 × 60 = 60
2.	**CTET, 2023 (VI-VIII) (20-08-2023)**	1 × 60 = 60	*31.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (12-01-2022)**	1 × 60 = 60
3.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-12-2022)**	1 × 60 = 60	*32.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (17-01-2022)**	1 × 60 = 60
4.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (09-01-2023)**	1 × 60 = 60	*33.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-01-2022)**	1 × 60 = 60
5.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (11-01-2023)**	1 × 60 = 60	*34.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (20-12-2021)**	1 × 60 = 60
6.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (12-01-2023)**	1 × 60 = 60	*35.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (21-12-2021)**	1 × 60 = 60
7.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (13-01-2023)**	1 × 60 = 60	*36.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (22-12-2021)**	1 × 60 = 60
8.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (17-01-2023)**	1 × 60 = 60	*37.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (23-12-2021)**	1 × 60 = 60
9.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (18-01-2023)**	1 × 60 = 60	*38.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (24-12-2021)**	1 × 60 = 60
10.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (19-01-2023)**	1 × 60 = 60	*39.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (27-12-2021)**	1 × 60 = 60
11.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (20-01-2023)**	1 × 60 = 60	*40.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (28-12-2021)**	1 × 60 = 60
12.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (23-01-2023)**	1 × 60 = 60	*41.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (29-12-2021)**	1 × 60 = 60
13.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (24-01-2023)**	1 × 60 = 60	*42.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (30-12-2021)**	1 × 60 = 60
14.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (25-01-2023)**	1 × 60 = 60	*43.*	**CTET, 2021 (VI-VIII) (31-12-2021)**	1 × 60 = 60
15.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (27-01-2023)**	1 × 60 = 60	*44.*	**CTET, 2020 (VI-VIII) (31-01-2021)**	1 × 60 = 60
16.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (28-01-2023)**	1 × 60 = 60	*45.*	**CTET, 2019 (VI-VIII) (08-12-2019)**	1 × 60 = 60
17.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (29-01-2023)**	1 × 60 = 60	*46.*	**CTET 2019 (VI-VIII) (07-07-2019)**	1 × 60 = 60
18.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (30-01-2023)**	1 × 60 = 60	*47.*	**CTET 2018 (VI-VIII) (09-12-2018)**	1 × 60 = 60
19.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (01-02-2023)**	1 × 60 = 60	*48.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (18-09-2016)**	1 × 60 = 60
20.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (03-02-2023)**	1 × 60 = 60	*49.*	**CTET 2016 (VI-VIII) (21-02-2016)**	1 × 60 = 60
21.	**CTET, 2022 (VI-VIII) (06-02-2023)**	1 × 60 = 60	*50.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (20-09-2015)**	1 × 60 = 60
22.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (01-01-2022)**	1 × 60 = 60	*51.*	**CTET 2015 (VI-VIII) (22-02-2015)**	1 × 60 = 60
23.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (03-01-2022)**	1 × 60 = 60	*52.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (21-09-2014)**	1 × 60 = 60
24.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (04-01-2022)**	1 × 60 = 60	*53.*	**CTET 2014 (VI-VIII) (16-02-2014)**	1 × 60 = 60
25.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (05-01-2022)**	1 × 60 = 60	*54.*	**CTET 2013 (VI-VIII) (28-07-2013)**	1 × 60 = 60
26.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (06-01-2022)**	1 × 60 = 60	*55.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (18-11-2012)**	1 × 60 = 60
27.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (07-01-2022)**	1 × 60 = 60	*56.*	**CTET 2012 (VI-VIII) (29-01-2012)**	1 × 60 = 60
28.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (08-01-2022)**	1 × 60 = 60	*57.*	**CTET 2011 (VI-VIII) (26-06-2011)**	1 × 60 = 60
29.	**CTET, 2021 (VI-VIII) (10-01-2022)**	1 × 60 = 60			
				कुल प्रश्न-पत्र = 57	**3420**

नोट- उपरोक्त प्रश्न-पत्रों के सम्यक विश्लेषण के उपरान्त **बाल विकास और अध्यापन** से सम्बन्धित **1710** प्रश्नों, **हिन्दी** से संबंधित **3420** प्रश्नों, **अंग्रेजी** से संबंधित **3420** प्रश्नों एवं **संस्कृत** से संबंधित **3420** प्रश्नों, को अध्यायवार प्रस्तुत किया गया है। दुहराव वाले प्रश्नों का परीक्षा वर्ष एवं परीक्षा नाम यथास्थान निर्दिष्ट कर दिया गया है।

Trend Analysis of previous year question Papers

बाल विकास और अध्यापन

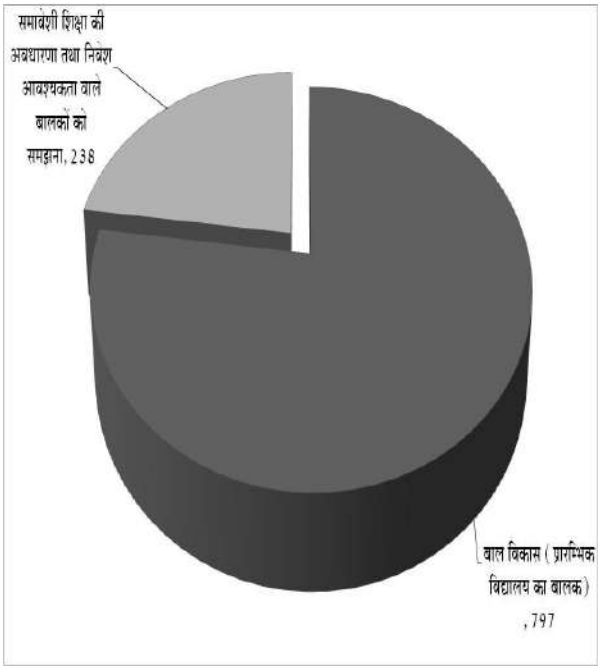

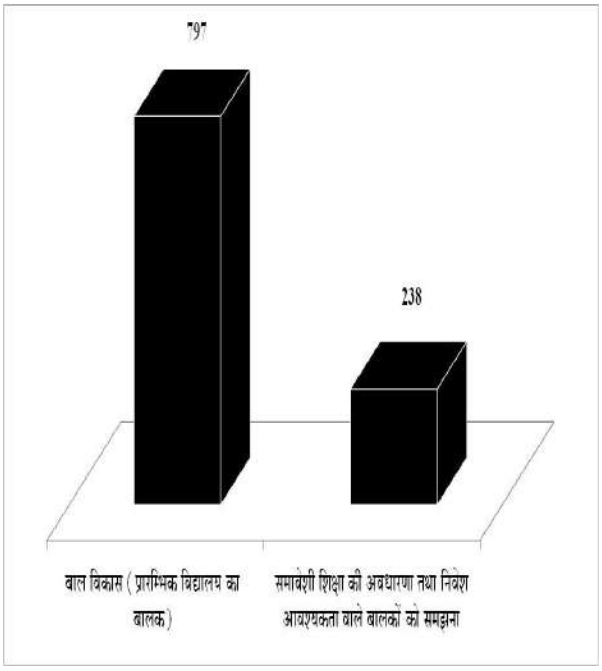

हिन्दी

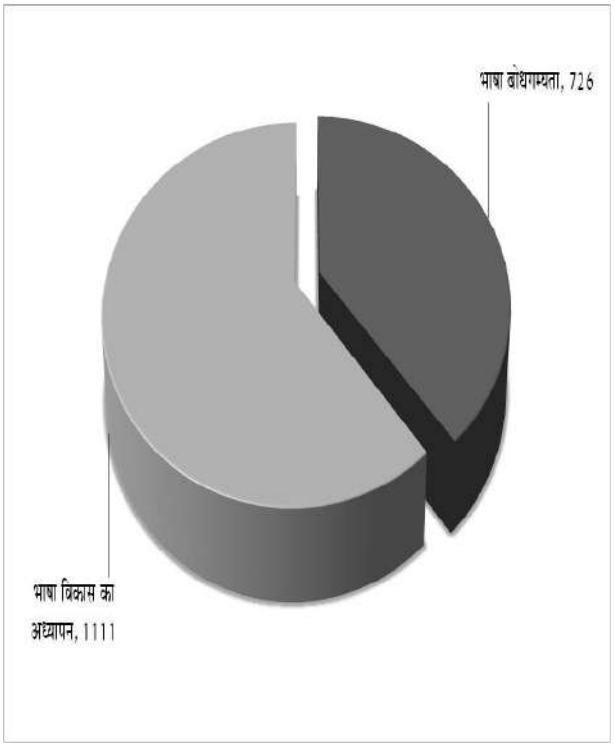

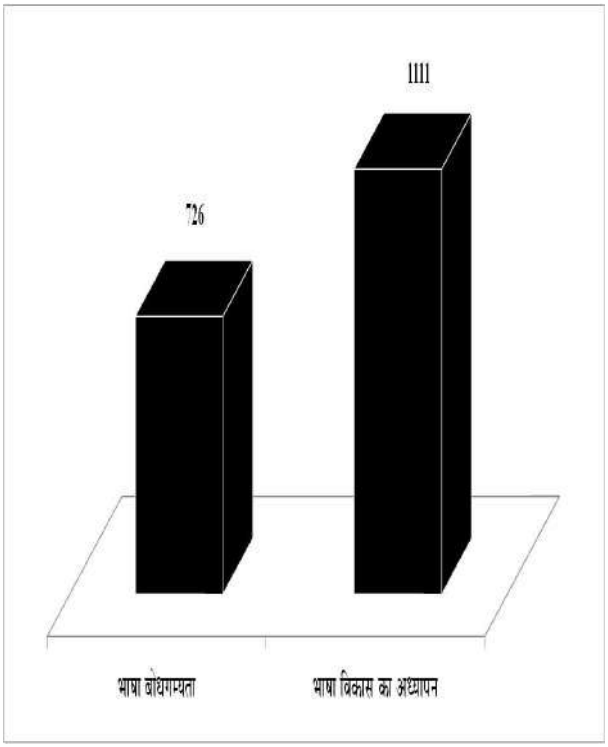

अंग्रेजी

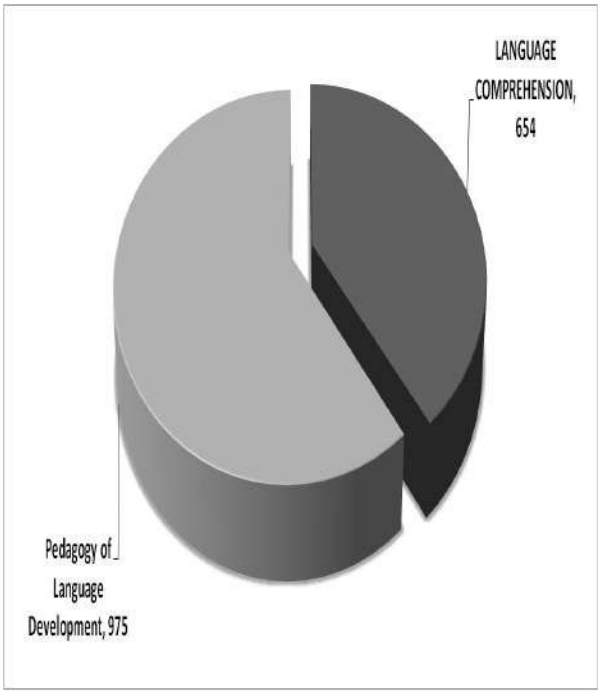
LANGUAGE COMPREHENSION, 654
Pedagogy of Language Development, 975

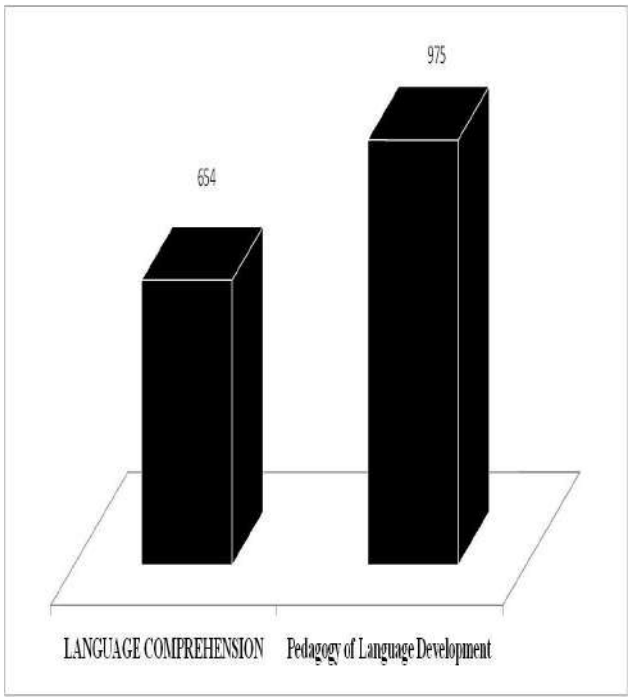
975
654
LANGUAGE COMPREHENSION
Pedagogy of Language Development

संस्कृत

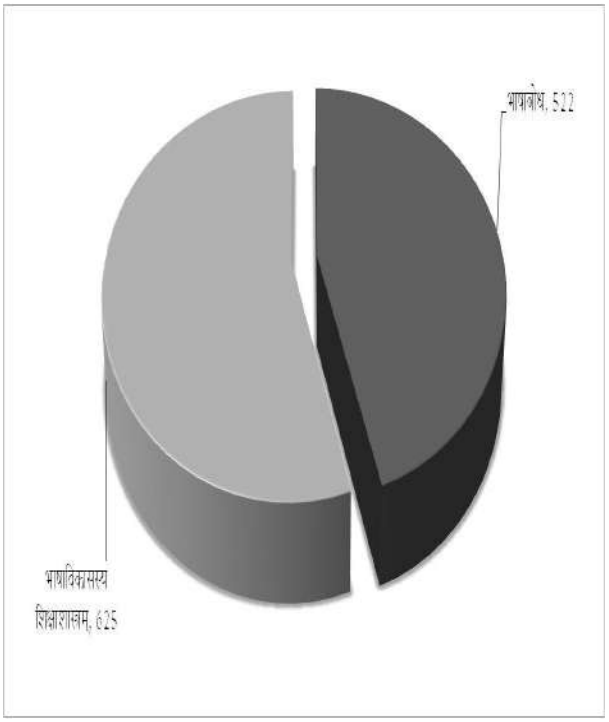
भाषाबोध, 522
भाषाविकासस्य शिक्षाशास्त्रम्, 625

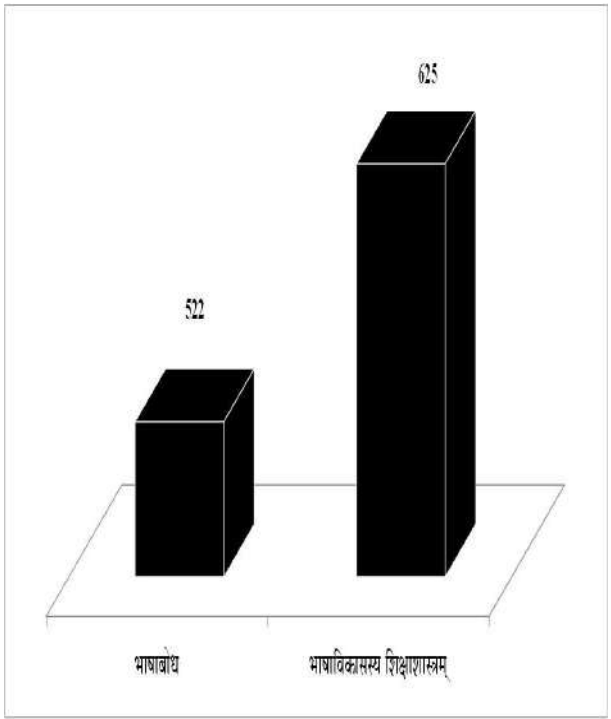
625
522
भाषाबोध
भाषाविकासस्य शिक्षाशास्त्रम्

बाल विकास और अध्यापन

कक्षा (VI-VIII)

1. बाल विकास (प्रारम्भिक विद्यालय का बालक)

1. विकास-

(a) अव्यवस्थित होता है। (b) पूरी तरह से अप्रत्याशित है।
(c) एक आयामी है। (d) गतिशील है।

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (d) : विकास गतिशील हैं। विकास कुछ कम से कुछ अधिक बनाने के बारे में है, उदाहरण के लिए एक असहाय शिशु से चलने और बात करने वाला बच्चा। एक वर्तमान सैद्धांतिक ढ़ांचा विकासात्मक प्रक्रिया को एक जटिल गतिशील प्रणाली के भीतर परिवर्तन के रूप में देखता है। विकास को वास्तविक समय में होने वाली कई विकेन्द्रीकृत और स्थानीय अंतः क्रियाओं के उभरते उत्पाद के रूप में देखा जाता है।

2. विकास की प्रक्रियाः

(a) बहुआयामी है (b) एकरूपी है
(c) रैखिक है (d) स्थिर है

CTET (VI-VIII) 04/02/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसका अर्थ है कि इसमें शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास जैसे कारकों की गतिशील अंतःक्रिया शामिल है।

3. विकास की प्रक्रिया की क्या विशेषताएँ हैं?

(i) यह प्रक्रिया बचपन तक सीमित है।
(ii) यह जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।
(iii) इसकी शुरूआत जन्म के समय होती है।
(iv) इसकी शुरूआत गर्भधारण के समय होती है।
सही विकल्प चुनें–

(a) (i), (iii) (b) (i), (iv)
(c) (ii), (iii) (d) (ii), (iv)

CTET (VI-VIII) 28/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : प्रत्येक व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक परिपेक्ष्य में समय-समय पर बदलाव आता है। जन्म के समय वह शिशु कहलाता है, कुछ समय के बाद बालक, फिर किशोर, वयस्क, और अंत में प्रौढ़ एवं वृद्ध कहलाता है। बालक की आयु के साथ शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक, नैतिक आदि पक्षों का विकास होता है। व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में परिवर्तन को अभिवृद्धि एवं विकास के नाम से जाना जाता है। हरलॉक के अनुसार, ''विकास अभिवृद्धि तक सीमित नहीं है, अपितु इसमें परिवर्तनों का वह प्रगतिशील क्रम निहित है जो परिपक्वता के लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती है।''

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

* यह जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।
* इसकी शुरूआत गर्भधारण के समय से ही होती है।
* वृद्धि की तुलना में विकास अधिक व्यापक है।
* इसमें शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी होता है।

1.(i) विकास की अवस्था तथा अधिगम से उसका संबंध

4. बाल्यावस्था की अवधि में विकास-

(a) में केवल परिमाणात्मक परिवर्तन होते हैं।
(b) अनियमित और असंबद्ध होता है।
(c) धीमी गति से होता है एवं उसे मापा नहीं जा सकता।
(d) बहुस्तरीय और मिश्रित होता है।

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (d) : बाल्यावस्था में विकास बहुस्तरीय और मिश्रित होता है। सामान्य तौर पर बाल्यावस्था की अवधि 6-12 वर्ष तक की आयु को माना जाता है। इस अवस्था में बालक में अनेक परिवर्तन होते हैं। शिक्षा का आरम्भ इसी आयु से होता है इसलिए शिक्षाशास्त्रियों ने इसे 'प्रारम्भिक विद्यालय की आयु' कहा है। इस अवस्था को 'समूह की आयु' (Gang Age) और 'चुस्ती की आयु' (Smart Age) भी कहा जाता है। इस प्रकार देखा जाए तो बाल्यावस्था की अवधि में विकास विभिन्न पक्षों, यथा शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि में होता है और ये आपस में अंतःसंबधित भी होते हैं। इसलिए बाल्यावस्था के विकास को बहुस्तरीय और मिश्रित माना जाता है।

5. निम्नलिखित में से मध्य बाल्यावस्था की अवधि का मुख्य प्रमाण चिन्ह कौन सा है?

(a) पेशीय कौशल और समग्र शारीरिक वृद्धि का तेजी से विकास।
(b) वैज्ञानिक तर्क और अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता का विकास।
(c) प्रतीकात्मक-खेल का उभरना।
(d) तर्कसंगत विचारों का विकास जो कि प्राकृतिक रूप से मूर्त हैं।

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (d) : 'तर्कसंगत विचारों का विकास जो कि प्राकृतिक रूप से मूर्त है।' मध्य बाल्यावस्था की अवधि का मुख्य प्रमाण चिन्ह है। पियाजे के अनुसार, मध्य बाल्यावस्था की अवधि 7-11 या 12 वर्ष तक होती है, जिसको इन्होंने मूर्त संक्रियात्मक अवस्था का नाम दिया है। इस अवस्था में बालक में मूर्त रूप से सोचने, तर्क करने, संरक्षण, विलोमीयता जैसे गुणों का विकास हो जाता है। वह वस्तुओं को उनके गुणों के आधार पर वर्गीकृत कर सकता है, उनका श्रेणीकरण कर सकता है और उनमें सम्बन्ध स्थापित कर सकता है।

6. बाल्यावस्था की अवधारणा से क्या अभिप्राय है ?

(a) समकालीन सामाजिक-संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह एक सामाजिक संरचना है।
(b) यह है कि बच्चे दुष्ट रूप में पैदा होते हैं और उन्हें सभ्य बनाना होता है।

(c) यह कि बच्चे शून्य से शुरुआत करते हैं और उनके गुण पूरी तरह से परिवेश के द्वारा निर्धारित किए जाते हैं।

(d) यह विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भो में सार्वभौम रूप से समान है।

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (a) समकालीन सामाजिक-संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बाल्यावस्था एक सामाजिक संरचना की अवस्था है। बाल्यावस्था में समाजीकरण की गति तीव्र हो जाती है। बालक समाज के प्रत्यक्ष संपर्क में आता है, जिसके फलस्वरूप उसका सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। बाल्यावस्था में समूह सदस्यता, सामाजिक गुण, बहिर्मुखी प्रवृत्ति, सामाजिक स्वीकृति की चाह, मित्र चयन आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है।

7. निम्नलिखित में से कौन सी 'मध्य बाल्यावस्था' की विशेषता है ?

(a) अमूर्त रूप से सोचने तथा वैज्ञानिक तर्क का प्रयोग करने की योग्यता विकसित होती है।

(b) बच्चे तार्किक एवं मूर्त रूप से सोचना प्रारंभ कर देते हैं।

(c) अधिगम मुख्य रूप से संवेदी एवं चालक गतिविधियों द्वारा घटित होता है।

(d) शारीरिक वृद्धि एवं विकास बहुत तेज गति से होता है।

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (b) मध्य बाल्यावस्था में बच्चे तार्किक एवं मूर्त रूप से सोचना प्रारम्भ कर देते हैं। **कोल** के अनुसार मध्य बाल्यावस्था 6-12 वर्ष की आयु होती है। **पियाजे** ने इस अवस्था को मूर्त संक्रियात्मक अवस्था कहा है जिसमें बालक तार्किक और मूर्त रूप से चिंतन करने लगता है। इसी अवस्था में विलोमीयता और संरक्षण जैसे गुणात्मक मानसिक योग्यताओं का विकास होता है।

8. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा विकास एवं अधिगम के बीच संबंध को सही तरीके से सूचित करता है?

(a) अधिगम विकास का ध्यान किए बिना घटित होता है।

(b) अधिगम की दर विकास की दर से काफी अधिक होती है।

(c) विकास एवं अधिगम अंतःसंबंधित और अंतःनिर्भर होते हैं।

(d) विकास एवं अधिगम संबंधित नहीं हैं।

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (c) : विकास और अधिगम के संबंध में निम्नलिखित कथन सत्य है–

- विकास एवं अधिगम अंतःसम्बन्धित और अंतः निर्भर होते हैं।
- विकास एवं अधिगम दोनों अनवरत गति से जीवनपर्यंत चलती हैं।
- विकास एवं अधिगम के संबंध को इस तरह समझा जा सकता है कि बालक का जैसे–जैसे विकास होता जाता है उसका व्यवहार भी परिष्कृत होता जाता है। अर्थात् उसके विकास के साथ-साथ अधिगम के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परितर्वन भी होता जाता है।

9. एक प्राथमिक कक्षा-कक्ष में एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) केवल गैर–उदाहरण देने चाहिए।

(b) उदाहरण एवं गैर उदाहरण दोनों देने चाहिए।

(c) उदाहरण या गैर–उदाहरण दोनों नहीं देने चाहिए।

(d) केवल उदाहरण देने चाहिए।

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (b) : एक प्राथमिक कक्षा–कक्ष में एक शिक्षक को उदाहरण एवं गैर उदाहरण दोनों देने चाहिए। एक शिक्षक को कक्षा शिक्षण करते समय उदाहरण को बच्चों के वास्तविक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए ताकि बच्चे अपने अनुभवों से जोड़ते हुए अवधारणाओं को समझ सकें। साथ ही बच्चों के सामने ऐसे उदाहरण भी प्रस्तुत करने चाहिए जो नियमों या सिद्धांतों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित न होते हुए भी उनके वास्तविक जीवन से संबंधित हो। इससे वे स्वयं चिंतन करने के लिए प्रेरित होंगे जिससे उनमें सृजनात्मकता का विकास होगा।

10. निम्नलिखित रणनीतियों में से कौन सी बच्चों में अर्थ निर्माण को बढ़ावा देगी?

(a) सूचनाओं का संचरण

(b) दंडात्मक साधनों का प्रयोग करना

(c) एकरूप एवं मानकीकृत परीक्षण

(d) अन्वेषण एवं परिचर्चा

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (d) : अन्वेषण एवं परिचर्चा बच्चों में अर्थ निर्माण को बढ़ावा देगी। अन्वेषण एवं परिचर्चा दोनों बच्चों के सक्रिय सहभागिता के द्वारा ज्ञान निर्माण में योगदान करते हैं। इन दोनों में छात्र शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्रिय रहते हुए ज्ञान की खोज करते हैं अर्थात् स्वयं सीखते हैं। इसमें शिक्षक ऐसे वातावरण का निर्माण करता है कि छात्रों के सामने समस्या उत्पन्न हो जाये। सभी छात्र समस्या के संबंध में चिंतन तथा निरीक्षण करते हैं तथा अंत में निर्णय निकालते हैं। इन दोनों नीतियों के अंतर्गत सभी छात्र अपनी–अपनी क्रियाओं द्वारा सत्य की खोज करते हैं।

11. ..... महीनों की आयु के बीच अधिकांश बच्चे शब्दों को मिलाकर छोटे–छोटे वाक्यों में बोलना शुरू कर देते हैं।

(a) 12 से 18 (b) 18 से 24

(c) 24 से 30 (d) 30 से 36

CTET (VI-VIII) 09/12/2018

Ans. (b) : 18 से 24 महीनों की आयु के बीच अधिकांश बच्चे शब्दों को मिलाकर छोटे–छोटे वाक्यों में बोलना शुरू कर देते हैं। प्रारम्भ में उनके वाक्य अस्पष्ट व भाषा विज्ञान की दृष्टि से अपूर्ण होते हैं। वे अपने बनाए टूटे–फूटे वाक्यों को बोलने के साथ–साथ तदनुरूप हाव–भाव भी दिखाते हैं जिससे सुनने वालों को उनका अर्थ स्पष्ट हो जाता है। ढाई से तीन वर्ष की आयु में बालक संज्ञाओं तथा क्रियाओं, शब्दों को मिलाकर एक छोटा वाक्य बनाने का प्रयास करते हैं।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन विकास और अधिगम के बीच संबंध को सर्वश्रेष्ठ रूप में जोड़ता है?

(a) विकास अधिगम से स्वतंत्र है।

(b) अधिगम विकास के पीछे रहता है

(c) अधिगम और विकास समानार्थक पारिभाषित शब्द हैं।

(d) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंतःसंबंधित है।

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (d) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंतः सम्बन्धित है क्योंकि व्यक्ति अपनी दैनिक क्रियाओं और अनुभवों द्वारा कुछ न कुछ सीखता है। फलस्वरूप उसका शारीरिक और मानसिक विकास होता है। सीखने की इस विशेषता को पेस्टालॉजी ने वृक्ष और फ्रोबेल ने उपवन का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है।

13. छिपी हुई वस्तुएँ ढूढ़ निकालना इस बात का संकेत है कि शिशु निम्नलिखित में से किस संज्ञानात्मक कार्य में दक्षता प्राप्त करने लगा है?

(a) साभिप्राय व्यवहार (b) वस्तु-स्थायित्व
(c) समस्या-समाधान (d) प्रयोग करना

CTET (VI-VIII) 21/09/2014

Ans. (b) छिपी हुई वस्तुएँ ढूँढ़ निकालना इस बात का संकेत है कि शिशु वस्तु–स्थायित्व संज्ञानात्मक कार्य में दक्षता प्राप्त करने लगा है। अर्थात शिशु में वस्तु के संप्रत्यय का विकास हो चुका है।

14. निम्न में से कौन सा कथन बच्चे के विकास में परिवेश की भूमिका का समर्थन करता है?

(a) पिछली कुछ दशाब्दियों में बुद्धि लब्धांक परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है।
(b) एक समान जुड़वां बच्चे जिनका लालन-पालन भिन्न घरों में हुआ है, उनकी बुद्धिलब्धि 0.75 के समान उच्च है।
(c) शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चे अक्सर नैतिक रूप से अच्छे पाए जाते हैं।
(d) कुछ शिक्षार्थी सूचनाओं का जल्दी प्रक्रमण करते हैं जबकि उसी कक्षा के अन्य विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते।

CTET (VI-VIII) 28/07/2013

Ans. (a) पिछले कुछ दशकों में बुद्धि लब्धांक परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है। यह तथ्य दर्शाता है कि पिछले कुछ दशकों में कुछ ऐसा अधिगम वातावरण बन रहा है जिसमें बच्चे सुलभता से अपने आपको समायोजित कर पा रहे है और बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

15. एक शिक्षिका अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है क्योंकि –

(a) वे शिक्षक को आराम देते हैं
(b) के प्रभावी आकलन को सुगम बनाते हैं
(c) वे शिक्षार्थियों को वैविध्य उपलब्ध कराते हैं
(d) इनमें अधिकतम इंद्रियों का उपयोग सीखने को संवर्द्धित करता है

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (d) अधिगम का एक सिद्धान्त यह है कि यदि अधिगम करते समय शरीर के अधिकतम इंन्द्रियों को सक्रिय रखा जाय तो वह अधिगम अधिक प्रभावी होता है। इसलिए शिक्षिका जब अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है तो इससे अधिगम संवर्द्धित व पुस्ट होता है।

16. व्यवहार का 'करना' पक्ष ..... में आता है।

(a) सीखने के गतिक (कोनेटिव) क्षेत्र
(b) सीखने के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र
(c) सीखने के संज्ञानात्मक क्षेत्र
(d) सीखने के भावात्मक क्षेत्र

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (a) व्यवहार 'करना' सीखने के शरीर गतिक क्षेत्र के अंतर्गत आता है। शरीर गतिक क्षेत्र के अंतर्गत शारीरिक संचालन, शारीरिक क्रिया, शरीर पर नियंत्रण, दृढ़ीकरण आदि आते है, जिनके माध्यम से ही व्यवहार किया जा सकता है।

17. इरफ़ान खिलौनों को तोड़ता है और उसके पुर्जों को देखने के लिए उन्हें अलग-अलग कर देता है। आप क्या करेंगे?

(a) उसके जिज्ञासु स्वभाव को प्रोत्साहित करेंगे और उसकी ऊर्जा को सही दिशा में संचारित करेंगे
(b) उसे समझाएंगे कि खिलौनों को कभी तोड़ना नहीं चाहिए
(c) इरफ़ान को खिलौनों से कभी भी नहीं खेलने देंगे
(d) उस पर हमेशा नजर रखेंगे

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (a) बच्चों द्वारा खिलौनों को तोड़ना तथा उनके पुर्जों को देखना यह दर्शाता है कि वह बालक इस तरह का कार्य उत्सुकता पूर्वक करता है। अतः इस प्रकार के बालक को जिज्ञासु स्वभाव को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उसकी ऊर्जा को सही दिशा में संचारित की जा सके तथा बालक का मानसिक विकास सही दिशा में हो सके।

18. निम्नलिखित में से किस कथन को 'सीखने' के लक्षण के रूप में नहीं माना जा सकता?

(a) व्यवहार का अध्ययन सीखना है
(b) अन-अधिगम (unlearning) भी सीखने का एक हिस्सा है
(c) सीखना एक प्रक्रिया है जो व्यवहार में मध्यस्थता करती है।
(d) सीखना कुछ ऐसी चीज है जो कुछ अनुभवों के परिणामस्वरूप घटित होती है

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (a) व्यवहार का अध्ययन सीखना, यह किसी भी प्रकार से सीखने का लक्षण नहीं है क्योंकि व्यवहार का अनुकरण करके उसे सीखा जा सकता है न कि व्यवहार का अध्ययन सीखा जाता है।

19. सबसे अधिक गहन और जटिल समाजीकरण होता है।

(a) पूर्व बाल्यावस्था के दौरान (b) प्रौढ़ावस्था के दौरान
(c) व्यक्ति के पूरे जीवन में (d) किशोरावस्था के दौरान

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (d) सबसे अधिक गहन और जटिल सामाजीकरण किशोरावस्था के दौरान होता है। इस अवस्था में किशोरो में समूह निर्माण की प्रवृत्ति, मैत्री भावना का विकास, सामाजिक गुणों का विकास, समूह के प्रति भक्ति, सामाजिक परिपक्वता की भावना का विकास, बहिर्मुखी प्रवृत्ति आदि का विकास होता है जो सामाजीकरण की प्रक्रिया को समृद्ध, गहन व जटिल बनाते है।

20. अभिकथन (A) :
वह कोई उद्देश्यात्मक निश्चित क्षण नहीं होता जब कोई बच्चा मध्य बाल्यावस्था या किशोरावस्था में प्रवेश करता है।
कारण (R) :
विकास, प्रकृति में निरंतर होता रहता है।
सही विकल्प चुनें-

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (A) की (R) सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (a) : विकास से तात्पर्य अंगों के बेहतर और बढ़ते हुए कार्य के लिए संरचना में वृद्धि के होने से है। यह एक व्यापक और सतत प्रक्रिया हैं, इस प्रकार वह कोई उद्देश्यात्मक निश्चित क्षण नहीं होता जब कोई बच्चा मध्य बाल्यावस्था या किशोरावस्था में प्रवेश करता हैं क्योंकि विकास की प्रकृति निरंतर चलने वाली हैं विकास प्रक्रिया में नई विशेषताओं का समावेश होता हैं और पुरानी विशेषताएँ गायब हो जाती हैं। मनोवैज्ञानिक ने विकास को इन परिवर्तनों गुणों और विशेषताओं की क्रमिक और नियमित उत्पत्ति कहा हैं। अतः अभिकथन (A) व कारण (R) दोनों सही हैं एवं (A) की (R) सही व्याख्या कर रहा हैं।

21. किशोरावस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) किशोरावस्था एक सामाजिक रचना है।
(b) किशोरावस्था को आमतौर पर यौवन को शुरू करने के लिए माना जाता है- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो यौन परिपक्वता और पुनरुत्पादन की क्षमता की ओर ले जाती है।
(c) किशोरावस्था बचपन और वयस्कता के बीच विकासात्मक संक्रमण है जिसमें शारीरिक, संज्ञानात्मक और मनोसामाजिक परिवर्तन होते हैं।
(d) विभिन्न संस्कृतियों के बच्चे एक समान तरीके से किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं और इसे अनुभव करते हैं।

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (d) : विभिन्न संस्कृतियों के बच्चे एक समान तरीके से किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं और इसे अनुभव करते हैं। सही नहीं है यह कथन किशोरावस्था में प्रभावित करने वाले कारक :

- जैविक कारक-यौवन की शुरूआत, हार्मोन का स्तर, शारीरिक विकास
- मनोवैज्ञानिक कारक-आत्म-सम्मान, पहचान, जोखिम लेने का व्यवहार
- सामाजिक-सांस्कृतिक कारक : परिवार, समुदाय, मीडिया, सामाजिक दंड

22. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए :

अभिकथन (A) : बच्चों के बीच विकासात्मक दरों में काफी भिन्नताएँ मौजूद होती हैं।

कारण (R) : विकासात्मक अंतर, आनुवंशिक और अनुभवात्मक विविधताओं की जटिल अंतः क्रिया का एक अनिवार्य परिणाम हैं।

(a) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) और (R) दोनों गलत हैं।
(d) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : बच्चों के बीच विकासात्मक दरों में काफी भिन्नताएँ मौजूद होती हैं क्योंकि विकासात्मक अंतर, आनुवंशिक और अनुभवात्मक विविधताओं की जटिल अंतः क्रिया का एक अनिवार्य परिणाम है। विकासात्मक अंतर में कार्यप्रणाली और भावनात्मक विनियमन की प्रभावशीलता में परिवर्तन शामिल है।
अतः (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

23. किस स्तर पर बच्चे नियमों के साथ खेलों में भाग लेने में सक्षम होते हैं, उनकी एथलेटिक क्षमताओं का विकास होता है और तार्किक विचार प्रक्रिया भी बढ़ जाती है, हालांकि यह ठोस अनुभवों तक ही सीमित होती है?

(a) बचपन (b) मध्य बचपन
(c) किशोरावस्था (d) शैशवास्था

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (b) : बच्चे का विकास विभिन्न अवस्थाओं में होता है। यद्यपि प्रत्येक अवस्था का अन्य अवस्थाओं के साथ एक व्यापक संबंध होता है, लेकिन इसकी अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ और माँगे होती हैं। मध्य बचपन या बाल्यावस्था की समय अवधि 6 वर्ष से 12 वर्ष की आयु तक होती है। इस समय के दौरान, विकास दर धीमा लेकिन स्थिर होता है। इस स्तर पर बच्चे नियमों के साथ खेलों में भाग लेने में सक्षम होते हैं, उनकी एथलेटिक क्षमताओं का विकास होता है और तार्किक विचार प्रक्रिया भी बढ़ जाती है, हालांकि यह ठोस अनुभवों तक ही सीमित होती हैं।

24. व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत बताता है कि :

(a) सभी बच्चों के शारीरिक विकास की गति एकसमान होती है।
(b) सभी बच्चों की वृद्धि की गति एक जैसी होती है।
(c) विभिन्न बच्चों के विकास और वृद्धि की गति में अंतर हो सकता है।
(d) सभी बच्चों के भाषायी विकास की गति एकसमान होती है।

CTET (VI-VIII) 10/01/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त बताता है कि विभिन्न बच्चों के विकास और वृद्धि की गति में अंतर हो सकता है। जिसका एक कारण आयु और बुद्धि भी है। आयु के साथ-साथ बालक का शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास होता है, इसलिए विभिन्न आयु के बालकों में अन्तर मिलता है।

25. वह कौन सी अवस्था है जिसमें बच्चे परिवार से स्वायत्तता स्थापित करते हैं और अपने व्यक्तिगत मूल्यों एवं लक्ष्यों को परिभाषित करते हुए अपनी खुद की एक पहचान का निर्माण करते हैं?

(a) प्रारंभिक बाल्यावस्था
(b) मध्य बाल्यावस्था
(c) उत्तर बाल्यावस्था
(d) किशोरावस्था

CTET (VI-VIII) 12/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : किशोरावस्था में बच्चे परिवार से स्वायत्तता स्थापित करते हैं और अपने व्यक्तिगत मूल्यों एवं लक्ष्यों को परिभाषित करते हुए अपनी खुद की एक पहचान का निर्माण करते हैं। विद्वानों ने (13-21) वर्ष की अवस्था को किशोरावस्था माना है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार किशोरावस्था यौनिक परिपक्वता से प्रारम्भ होती है और वैधानिक परिपक्वता पर समाप्त हो जाती है। परिवर्तन की इस अवस्था में माता पिता, शिक्षक, अभिभावक तथा अन्य लोग जो बालकों के कल्याण में रुचि रखते हैं और परिवार समाज व राष्ट्र की प्रगति चाहते हैं तो उन्हें किशोरों के विकास पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये क्योंकि किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भविष्य की आशा है। स्टेनले हॉल के अनुसार, ''किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तूफान व विरोध की अवस्था है।''

26. कथन (A): शारीरिक विकास के संदर्भ में बच्चों के विकास को समझने के लिए यह ज़रूरी है कि बजाए एक विशिष्ट उम्र को देखने के, विकास की 'सीमा क्षेत्र' को देखा जाए।

तर्क (R): बच्चों की वृद्धि व विकास में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं।

सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता हैं (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं हैं (A) की।

(c) (A) सही है लेंकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 12/01/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : शारीरिक विकास के संदर्भ में बच्चों के विकास को समझने के लिए यह जरूरी है कि बजाए एक विशिष्ट उम्र को देखने के, विकास की 'सीमा क्षेत्र' को देखा जाए क्योंकि बच्चों की वृद्धि व विकास में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती है। कभी-कभी वृद्धि और विकास दोनों को पर्याय मान लिया जाता है लेकिन इनमें अंतर है। वृद्धि को मानव के कोशीय वृद्धि के संदर्भ में समझा जाता है वहीं विकास का संदर्भ वृद्धि के साथ मानव के सम्पूर्ण पक्ष में वृद्धि से है। अर्थात् विकास में वृद्धि तो निहित है ही, साथ ही साथ व्यक्ति के मानसिक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक आदि पक्षों में परिवर्तन से है। अतः (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

27. बाल विकास की गति :

(a) एकसमान, मानकीय और अव्यवस्थित होती है।

(b) में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं और यह अव्यवस्थित होती है।

(c) एकसमान, मानकीय और कुछ हद तक सुनियोजित और क्रमानुसार होती है।

(d) में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं और यह कुछ हद तक सुनियोजित और क्रमानुसार होती है।

CTET (VI-VIII) 13/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : बाल विकास की गति में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं और यह कुछ हद तक सुनियोजित और क्रमानुसार होती है। एक बच्चा एक क्रमबद्ध क्रम में विकसित होता है। जो सभी बच्चों में लगभग समान होता है। विकास की दर और गति अलग-अलग मामलों में भिन्न हो सकती है, लेकिन सभी बच्चों में विकास स्वरूप का क्रम लगभग समान है। इस प्रकार मानव विकास कुछ सिद्धान्तों पर आधारित है। जन्म के पूर्व और प्रसव के बाद मनुष्य का विकास एक स्वरूप या एक सामान्य अनुक्रम का पालन करता है। शारीरिक विकास, पेशीय या भाषा विकास और बौद्धिक निश्चित क्रमों में होता है।

28. किस उम्र में बच्चों के क्रियाकलाप प्रमुखतः बड़ी मांसपेशियों के स्थूल गति के प्रयोग पर केन्द्रित होते हैं बजाए सूक्ष्म गति कार्य के?

(a) शैशवावस्था (b) प्रारंभिक बाल्यावस्था

(c) किशोरावस्था (d) माध्यमिक बाल्यावस्था

CTET (VI-VIII) 13/01/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : शैशवावस्था में बच्चों के क्रियाकलाप प्रमुखतः बड़ी मांसपेशियों के स्थूल गति के प्रयोग पर केन्द्रित होते हैं बजाए सूक्ष्म गति कार्य के। स्थूल गत्यात्मक कौशल वे हैं जिन्हें, चलने संतुलन बनाने, दौड़ने और घिसटकर चलने जैसे कार्यों को करने के लिये बड़ी मांसपेशियों के समूह के उपयोग की आवश्यकता होती है।

सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल वे हैं जिनमें कलाई, हाथ, अंगुलियों, पैरों की उंगलियों और अंगूठों के साथ सूक्ष्म कार्य करने के लिए छोटी मांसपेशियों के समूह के उपयोग की आवश्यकता होती है।

29. कथन (A) : स्कूल में सीखने के लिए बच्चों के गति कौशल का समन्वय महत्वपूर्ण नहीं है।

तर्क (R) : सीखना और विकास एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।

सही विकल्प चुनें।

(a) A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या नहीं करता है (A) की।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 24/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : स्कूल में सीखने के लिए बच्चों के गति कौशल का समन्वय महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि सीखना और विकास एक दूसरे से स्वतंत्र है; ये दोनों (A) और (R) गलत हैं। क्योंकि स्कूल में सीखने के लिए बच्चों में मोटर समन्वय महत्वपूर्ण है। इससे बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया का पता लगाने में भी मदद मिलती है। तथा मोटर समन्वय के द्वारा बच्चा चलना, दौड़ना, कूदना जैसी क्षमताओं को प्राप्त करता है। अतः सीखना और विकास एक दूसरे के अंतर्संबंधित है।

30. कथन (A) : सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों द्वारा की गई त्रुटियों को उनके संज्ञानात्मक विकास के एक भाग के रूप में देखा जाना चाहिए।

तर्क (R) : बच्चे व्यस्कों की तुलना में चीजों को अलग तरह से सीखते हैं।

सही विकल्प चुनें–

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 28/01/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : उपयुक्त कथन (A) तथा तर्क (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या है (A) की।

सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों द्वारा की गई त्रुटियों को उनके संज्ञानात्मक विकास के एक भाग के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि बच्चे वयस्कों की तुलना में चीज़ों को अलग तरह से सीखते हैं। वयस्कों को यह जानने की जरूरत होती है कि कुछ क्यों सीखना है; जैसे ही वे इस प्रश्न का उत्तर देते हैं, वे आरम्भ करने के लिए तैयार होते हैं दूसरी ओर, बच्चों को आमतौर पर बताया जाता है कि उन्हें क्या सीखना है। इसीलिए बच्चे वयस्कों की तुलना में अलग तरह से सीखते हैं। बच्चे गुणात्मक रूप से वयस्कों से भिन्न होते हैं।

31. विकास की 'संवेदनशील अवधि' से क्या तात्पर्य है?

(a) वह समय अवधि जब बच्चे अधिगम के कुछ प्रकारों के प्रति तत्पर हैं।
(b) वह समय अवधि जब बच्चे बहुत भावुक होते हैं।
(c) गर्भधारण से जन्म तक की समय अवधि
(d) शैशवावस्था से किशोरावस्था तक की समय अवधि

CTET (VI-VIII) 28/01/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : 'वह समय अवधि जब बच्चे अधिगम के कुछ प्रकारों के प्रति तत्पर है' यह विकास की 'संवेदनशील अवधि' कहलाती है। संवेदनशील अवधि वह होती है जब बच्चा एक कौशल प्राप्त करने के लिए परिपक्व होता है। इस अवधि के दौरान बच्चे के पास अनुकूल अनुभव होना चाहिए जो उसे कौशल प्राप्त करने में मदद करते हैं। एक संवेदनशील अवधि जीवन में वह समय अवधि होती है जब बच्चे के विकास पर पर्यावरणीय प्रभाव का सबसे अधिक और गहरा प्रभाव पड़ता है।

32. स्नेहा का कद बहुत तेजी से बढ़ रही है और अब उसका हाथ उसकी लंबी अलमारी के हैंडल तक आसानी से पहुँच सकता है जिससे वह बहुत आसानी से अलमारी खोल सकती है। स्नेहा की कद में बदलाव को _____ कहा जाता है?

(a) पाड़ (b) वृद्धि
(c) सीखना (d) अनुकूलन

CTET (VI-VIII) 02/02/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : स्नेहा का कद बहुत तेजी से बढ़ रही है और अब उसका हाथ उसकी लंबी अलमारी के हैंडल तक आसानी से पहुँच सकता है जिससे वह बहुत आसानी से अलमारी खोल सकती है। स्नेहा की कद में बदलाव को वृद्धि कहा जाता है। वृद्धि मात्रात्मक होती है और एक समय पर रूक जाती है जबकि विकास गुणात्मक होता है और जीवन पर्यंत तक चलता ही रहता है।
पाड़ या मचान बच्चों को संकेत व इशारे करने से सम्बन्धित होता है।

33. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थूल गामक कौशलों का उदाहरण है?

(a) चित्र बनाना (b) सुई पकड़ना
(c) तेज चलना (d) धागे में मोती पिरोना

CTET (VI-VIII) 03/02/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : स्थूल कौशल के अन्तर्गत वे बड़ी गतिविधियाँ आती हैं जो शिशु अपनी बाजुओं, टांगों, पैरों या पूरे शरीर के जारिये करते हैं। घुटनों के बल चलना, खड़े होकर चलना,तेज चलना, दौड़ना और कूदना आदि स्थूल कौशलों के उदारहण हैं।

34. विकास का 'अधोगामी' सिद्धान्त बताता है कि विकास किस ओर से किस तरफ बढ़ता है?

(a) जटिल से सरल (b) सिर से पैर
(c) केन्द्र के बाह्य (d) सामान्य से विशिष्ट

CTET (VI-VIII) 03/02/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : विकास का 'अधोगामी' सिद्धान्त यह बताता है कि विकास शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर होता है अर्थात् पहले स्पाइनल कॉर्ड बनेगी, फिर हृदय और इसी क्रम में विकास होता चला जायेगां जैसे- बच्चों का खड़े होने से पहले बैठने में सक्षम होना, बच्चे हाथों और पैरों को हिलाना सीखने से पहले अपने सिर को हिलाना सीखते हैं; ये सभी अधोगामी सिद्धान्त को स्पष्ट करते है।

35. बच्चों के विकास की दिशा _____ होती है और प्रत्येक बच्चा _____।

(a) एक जैसी; अपनी गति से विकसित होता है।
(b) अलग-अलग; अपनी गति से विकसित होता है।
(c) एक जैसी; समान रूप से विकसित होता है।
(d) अलग-अलग रूप से विकसित होता है।

CTET (VI-VIII) 04/02/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : बच्चों की विकास की दिशा 'अलग' होती है और प्रत्येक बच्चा 'अपनी गति से विकसित होता है'। आनुवंशिकता तथा पर्यावरण प्रभावों के बीच परस्पर अंतःक्रिया से बालकों के विकासात्मक रूप में व्यक्तिगत भिन्नता होती है तथा प्रत्येक बालक के विकास की गति समान नही होती अपितु वे अपनी स्वयं की गति से विकास करते हैं।

36. कथन (A) : सभी बच्चों को बचपन में खेलने के अवसर और समय नहीं मिलता है।
तर्क (R) : सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर बच्चे बचपन को अलग-अलग तरह से अनुभव करते हैं।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 04/02/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : सभी बच्चों को बचपन में खेलने के अवसर और समय नहीं मिलता है क्योंकि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भो के आधार पर बच्चे बचपन को अलग-अलग तरह से अनुभव करते हैं। संस्कृति प्राकृतिक होती है जो स्थान, समय, समुदाय और वंश के अनुसार भिन्न होती है। हर बालक का जीवन उसके समाज और संस्कृति से प्रभावित होता है जो कि उसे घेरती है और उसे वैसे ही अपनाती है जैसे वह है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि (A) और (R) दोनों सहीं है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की। अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

37. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए :
अभिकथन (A) : बच्चों के बीच विकासात्मक दरों में काफी भिन्नताएँ मौजूद होती हैं।
कारण (R) : विकासात्मक अंतर, आनुवंशिक और अनुभवात्मक विविधताओं की जटिल अंतः क्रिया का एक अनिवार्य परिणाम हैं।

(a) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) और (R) दोनों गलत हैं।
(d) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : बच्चों के बीच विकासात्मक दरों में काफी भिन्नताएँ मौजूद होती हैं क्योंकि विकासात्मक अंतर, आनुवंशिक और अनुभवात्मक विविधताओं की जटिल अंतः क्रिया का एक अनिवार्य परिणाम है। विकासात्मक अंतर में कार्यप्रणाली और भावनात्मक विनियमन की प्रभावशीलता में परिवर्तन शामिल है।
अतः (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

38. कक्षा में एक बच्चा अपने सहपाठियों से इस तरह व्यवहार करता है और जैसे उससे उसके घर में बर्ताव किया जाता है। यह किसका उदाहरण है?

(a) संरचनावाद (b) सामाजिक संरचनावाद

(c) अवलोकन अधिगम (d) मानववादी अधिगम

CTET (VI-VIII) 21/12/2021

Ans. (c) : कक्षा में एक बच्चा अपने सहपाठियों से इस तरह व्यवहार करता है और उससे उसके घर में बर्ताव किया जाता है। यह अवलोकन अधिगम का उदाहरण है। अवलोकन अधिगम सीखने का एक रूप है। जिसमें लोग किसी अन्य व्यक्ति को उस व्यवहार को देखकर नया व्यवहार प्राप्त करते हैं। व्यवहार करने वाले व्यक्ति को मॉडल के रूप में जाना जाता है। अवलोकन अध्ययन अनुसंधान के प्रणेता अल्बर्ट बंडुरा है। संज्ञानात्मक और समस्या–समाधान के कौशल को दूसरों को देखकर और उसकी नकल करके सीखा जा सकता है।

39. कथन (A) : बच्चों और बचपन के बारे में समनायिकृत दावा करना कठिन हैं क्योंकि इसमें बहुत बहुलता/विविधता है।

तर्क (R) : बचपन एक सामाजिक-सांस्कृतिक संकल्पना है।

सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 21/12/2021

Ans. (a) : (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

तर्क (R) बचपन एक सामाजिक सांस्कृतिक संकल्पना है। बचपन पर समाज और संस्कृति का विशेष प्रभाव पड़ता है।

कारण (A) बच्चों और बचपन के बारे में समनायिकृत दावा करना कठिन हैं, क्योंकि इसमें बहुत बहुलता/विविधता है। क्योंकि इन दोनों में बहुत से विभिन्नता रहती है सभी बालकों का विकास अलग-अलग होता है।

40. समकालीन सिद्धान्त 'बचपन' को _____ मानते हैं -

(a) एक सामाजिक संरचना

(b) सभी संस्कृतियों में पवित्र काल

(c) बहुत अधिक तनाव और चिंता काल

(d) किशोरावस्था तक का विकास काल

CTET (VI-VIII) 23/12/2021

Ans. (a) : समकालीन सिद्धान्त बचपन को एक सामाजिक संरचना मानते है। सामाजिक संरचना का अभिप्राय समाज की इकाइयों की क्रमबद्धता से होता हैं। सामाजिक इकाइयां जैसे समूह, समितियां, संस्थाएं, परिवार, सामाजिक प्रतिमान आदि की क्रमबद्धता को सामाजिक संरचना कहा जाता हैं।

कार्ल मैनहीम के अनुसार, ''सामाजिक संरचना शक्तियों के ताने बाने को कहते हैं, जिसके फलस्वरूप अवलोकन तथा सोचने विचारने के तरीके या ढंग विकसित होते हैं।''

41. सामाजिक संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में बच्चों को किस तरह से देखते हैं?

(a) जानकारी के निष्क्रिय ग्रहणकर्ता

(b) अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से स्वतंत्र

(c) ज्ञान के सक्रिय सृजनकर्ता

(d) आनुवंशिकता से पूर्व-क्रमादेशित

CTET (VI-VIII) 27/12/2021

Ans. (c) : सामाजिक संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में बच्चों को ज्ञान के सक्रिय सृजनकर्ता के रूप में देखते हैं। सामाजिक संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में सीखने का एक दृष्टिकोण है जो वास्तविक जीवन स्थितियों से संबंधित चर्चा और परियोजनाओं में शिक्षार्थियों को शामिल करके सहयोगी शिक्षण को प्रधानता देता है। शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करता है और सहपाठियों को पढ़ाने को बढ़ावा देता है। सामाजिक संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में बच्चों को ज्ञान के सक्रिय सृजनकर्ता और अर्थ निर्माता के रूप में देखते हैं। यह सीखने वालों को गतिविधि करने के लिए अधिगम की अपनी रणनीति को बढ़ावा देने की अनुमति देता है।

42. विकास का वह चरण जब कोई जीव सबसे तेजी से किसी विशेष कौशल या विशेषता को प्राप्त कर सकता है, क्या कहलाता है?

(a) संवेदनशील अवधि

(b) समीपस्थ विकास का क्षेत्र

(c) विकासात्मक विलंब

(d) संज्ञानात्मक स्थिरता

CTET (VI-VIII) 24/12/2021

Ans. (a) : विकास का वह चरण जब कोई जीव सबसे तेजी से किसी विशेष कौशल या विशेषता को प्राप्त कर सकता है, यह संवेदनशील अवधि (Sensitive Period) कहलाता है। यह वह चरण है जो बालक के सम्पूर्ण भावी जीवन को प्रभावित करती है। इसलिए इसे मानव जीवन का आधार माना जाता है। इस अवस्था में बालक को जो कुछ भी सिखाया जाता है या करवाया जाता है उसका बालक के ऊपर अमिट प्रभाव तत्काल पड़ता है। जीवन के इस चरण में उनका शरीर तथा मस्तिष्क अत्यंत ग्रहणशील रहते हैं। इस चरण में अन्य चरणों की तुलना में सीखने का क्षेत्र तथा तीव्रता अधिक व्यापक होता है।

43. कथन (A) : मानव अपने पूरे जीवन काल के दौरान गत्यात्मक और संज्ञानात्मक क्षेत्रों में नई चीज़ें सीखने और स्मरण रखने के योग्य है।

कथन (R) : एक गंभीर रूप से पीड़ित बचपन के परिणामों को बाद के वर्षों में आसानी से बदला जा सकता है।

सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं करता है (A) की।

(c) (A) सही हैं लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 22/12/2021

Ans. (c) : मानव अपने पूरे जीवनकाल के दौरान गत्यात्मक और संज्ञानात्मक क्षेत्रों में नई चीजें सीखने और स्मरण रखने के योग्य है क्योंकि मानव की विकास प्रक्रिया निरन्तर अविराम गति से चलती रहती है तथा सीखना एक निरंतर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। मानव जन्म से ही सीखना प्रारम्भ कर देता है तथा मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है। परिस्थिति तथा आवश्यकता के अनुरूप सीखने की गति घटती-बढ़ती रहती है तथा एक गंभीर रूप से पीड़ित बचपन के परिणामों को बाद के वर्षों में आसानी से बदला नहीं जा सकता है क्योंकि इस अवस्था की घटनाओं या कार्यों का बालक के ऊपर अमिट प्रभाव पड़ता है। अतः (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

44. बेहतर एथलेटिक (शारीरिक) क्षमताएँ, नियमों के साथ खेलों में भागीदारी, तार्किक विचार प्रक्रियाएँ जो ठोस अनुभवों के आसपास केन्द्रित होती हैं, वे किस अवधि के लक्षण हैं?

(a) शैशवावस्था (b) प्रारंभिक बचपन
(c) मध्य बचपन (d) किशोरावस्था

CTET (VI-VIII) 04/01/2022

Ans. (c) : बेहतर एथलेटिक (शारीरिक) क्षमताएँ, नियमों के साथ खेलों में भागीदारी, तार्किक विचार प्रक्रियाएँ जो ठोस अनुभवों के आसपास केन्द्रित होती हैं, वे मध्य बचपन अवधि के लक्षण है। मध्य बचपन की अवधि 6 से 12 वर्ष होती है। धीमी वृद्धि, बेहतर मोटर कौशल, बेहतर सोचने की क्षमता, दोस्तों, माता-पिता के साथ, पड़ोसी के साथ बातचीत करना आदि मध्य बचपन अवधि की विशेषताएं है। मध्य बचपन में एक बालक द्रव्यमान संख्या और क्षेत्रफल के परिवर्तन को समझ सकता है।

45. अधिगम का वह रूप जिसमें बच्चे दूसरों की नकल करके सीखते हैं, क्या कहलाता है?

(a) सामाजिक अधिगम (b) व्यवहारवादी अधिगम
(c) अन्वेषण अधिगम (d) मानवतावादी अधिगम

CTET (VI-VIII) 29/12/2021

Ans. (a) : अधिगम का वह रूप जिसमें बच्चे दूसरों की नकल करके सीखते हैं, सामाजिक अधिगम (social learning) कहलाता है। अर्थात् दूसरों को देखकर उनके अनुरूप व्यवहार करने के कारण अथवा दूसरों के व्यवहारों को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को धारण करने तथा अमान्य व्यवहारों को त्यागने के कारण ही यह सामाजिक अधिगम कहलाता है। सामाजिक अधिगम, व्यक्ति अधिगम या समूह अधिगम की अपेक्षा अधिक बड़े पैमाने पर होता है। इसके द्वारा अभिवृत्ति या व्यवहार में परिवर्तन हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। अतः सामाजिक अधिगम इस बात पर बल देता है कि बच्चे के सामने हमेशा आदर्श व्यवहार के प्रतिमान को प्रस्तुत करना चाहिए।

46. संज्ञानात्मक विकास की किस अवस्था में अमूर्त सोच और वैज्ञानिक तर्क की क्षमता विकसित होती है?

(a) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(b) संवेदक-गामक अवस्था
(c) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
(d) औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था

CTET (VI-VIII) 29/12/2021

Ans. (d) : संज्ञानात्मक विकास की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (formal operational stage) में अमूर्त सोच और वैज्ञानिक तर्क की क्षमता विकसित होती है। यह अवस्था लगभग 11 से 15 वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था के दौरान बालक अमूर्त बातों के संबंध में तार्किक चिंतन करने की योग्यता विकसित करता है। मूर्त वस्तुओं तथा सामग्री के स्थान पर शाब्दिक तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति का प्रयोग तार्किक चिंतन में किया जाता है। इस अवस्था में समस्या-समाधान व्यवहार अधिक व्यवस्थित हो जाता है। बालक निष्कर्ष निकालने लगता है, व्याख्या करने लगता है तथा परिकल्पनायें बनाने लगता है। औपचारिक संक्रियात्मक विचार बालकों को वास्तविकता से बाहर जाने तथा संभावनाओं पर विचार करने योग्य बनाते हैं।

47. कथन (A): बच्चों को आरंभिक बाल्यावस्था में विकास और अधिगम हेतु प्यार, देखभाल और बहुत से अवसर प्रदान करने चाहिए।
तर्क (R): गंभीर रूप से वंचित बाल्यावस्था के परिणामों को बाद के बर्षों में बदलना बहुत आसान होता है।
सही विकल्प को चुनें-

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 29/12/2021

Ans. (c) : बच्चों को आरम्भिक बाल्यावस्था में विकास और अधिगम हेतु प्यार, देखभाल और बहुत से अवसर प्रदान करने चाहिए। इस अवस्था में बालक अपनी आदतों, व्यवहार, रुचियों, इच्छाओं आदि प्रतिरूपों का निर्माण कर लेता है, जिन्हें बाद में रूपान्तरित करना प्रायः अत्यन्त कठिन होता है। इस अवस्था में बालक प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा आरम्भ करता है। गंभीर रूप से वंचित बाल्यावस्था के परिणामों को बाद में बदलना आसान नहीं होता है क्योंकि बाल्यावस्था के दौरान ही बालक के आधारभूत दृष्टिकोणों, नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों का काफी सीमा तक निर्धारण हो जाता है। अतः कथन (A) सही है और (R) गलत है।

48. किस अवधि के दौरान विचार अमूर्त और आदर्शवादी हो जाता है?

(a) शैशवावस्था (b) प्रारंभिक बचपन
(c) मध्य बचपन (d) किशोरावस्था

CTET (VI-VIII) 01/01/2022

Ans. (d) : किशोरावस्था की अवधि (12 से 18 वर्ष) के दौरान विचार अमूर्त और आदर्शवादी हो जाता है। इस अवधि में बालक दो अवस्थाओं में रहता है। न तो उसे बालक ही समझा जाता है और न ही प्रौढ़ के रूप में स्वीकृति मिलती है। इस अवधि में मानसिक योग्यताओं का तीव्र गति से विकास होता है। जिज्ञासा, स्मृति, कल्पना, सृजनात्मकता, तर्कशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता अधिक विकसित हो जाती है। इस अवधि में बालक समूह को महत्त्व देना, समाज-सेवा की भावना, ईश्वर व धर्म में विश्वास, स्वाभिमान की भावना आदि पर बल देने लगते हैं।

49. बाल विकास में 'संवेदनशील अवधि' का क्या अर्थ है?

(a) केवल संज्ञान और सीखने में तेजी से प्रगति से संबंधित अवधि ।
(b) विशिष्ट क्षमताओं के विकास के लिए इष्टतम अवधि।

(c) वह काल जिसमें केवल भाषायी विकास को गति दी जा सके।

(d) वह अवधि जिसमें शारीरिक वृद्धि अपने चरम पर होती है।

CTET (VI-VIII) 01/01/2022

Ans. (b) : बाल विकास में 'संवेदनशील अवधि' का अर्थ, विशिष्ट क्षमताओं के विकास के लिए इष्टतम अवधि है। संवेदनशील अवधि संवेदनशीलता के स्तर को बदलने की प्रक्रिया है, जो बड़े होने के एक निश्चित चरण में प्रवेश से उकसाती है। संवेदनशील अवधि ''जीवन की सीढ़ी'' में एक प्रकार का कदम है, जहाँ एक व्यक्ति कुछ गुणों के गठन के लिए सभी अनुकूल परिस्थितियों से मिलता है। ऐसी अवधियों का एक उदाहरण डेढ़ से तीन वर्ष की आयु है। जब बच्चे भाषा कौशल विकसित करना शुरू करते हैं। विभिन्न कौशलों के विकास में महत्त्वपूर्ण घटक सामाजिक वातावरण और शिक्षकों का प्रभाव है। संवेदनशील अवधियों के दौरान, बच्चों की क्षमताओं को अधिकतम रूप से विकसित करने का एक बड़ा अवसर होता है।

50. _____ , उस विशिष्ट समय को कहा जाता है जब बच्चे उनके वातावरण में ख़ास प्रकार से उद्दीपन के प्रति विशेष रूप से ग्रहणक्षम होते हैं।

(a) संवेदनशील अवधि (b) मुखर अवधि

(c) नम्यता काल (d) मानसिक अकर्मण्यता

CTET (VI-VIII) 17/01/2022

Ans. (a) : संवेदनशील अवधि (Sensitive Periods) उस विशिष्ट समय को कहा जाता है जब बच्चे उनके वातावरण में खास प्रकार से उद्दीपन के प्रति विशेष रूप से ग्रहणक्षण होते हैं। यह किसी विशेष विशेषता या कौशल को सीखने के लिए तीव्र आकर्षण की अवधि है जैसे कि ऊपर और नीचे कदम, चीजों को क्रम में रखना, गिनना या पढ़ना। बच्चे के लिए अपने जीवन में किसी अन्य समय की तुलना में संबंधित संवेदनशील अवधि के दौरान किसी विशेष कौशल को सीखना आसान होता है। संवेदनशील समय के ऐसे अंतराल होते हैं जब विशेष रूप से अनुकूल स्थितियां किसी बालक में कुछ कौशल और क्षमताओं, व्यवहार और मनोवैज्ञानिक गुणों के गठन के लिए बनाई जाती है।

51. कथन (A) : बच्चों के विकास की प्रगति को दूसरे बच्चों से तुलना करके सही ढंग से/शुद्धता से/ सटीकता से मापा जा सकता है।

तर्क (R) : विकास का स्वरुप व अनुक्रम एवं विकास की गति सभी बच्चों के लिए सार्वभौमिक रूप में समान होती है।

सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन सही व्याख्या नहीं है (A) की।

(c) (A) सही है, लेकिन (R)गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 17/01/2022

Ans. (d) : बच्चों के विकास की प्रगति को दूसरे बच्चों से तुलना करके सही ढंग से/शुद्धता से/ सटीकता से नहीं मापा जा सकता है क्योंकि विकास की प्रक्रिया मात्रात्मक के साथ-साथ गुणात्मक भी होती है। विकास का स्वरूप व अनुक्रम एवं विकास की गति सभी बच्चों के लिए सार्वभौमिक रूप में समान नहीं होती है क्योंकि बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नता होती है इसलिए भिन्न-भिन्न बच्चों के विकास की गति एवं दिशा भिन्न-भिन्न होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति एवं अपने ढंग से विभिन्न क्षेत्रों में अपनी वृद्धि व विकास करता है। अतः कथन (A) और (R) दोनों गलत हैं।

52. कथन (A) : बच्चों के विकास पर शैशवास्था तक ध्यान देना ज़रूरी है।

तर्क (R) : यद्यपि जीवन के शुरुआती कुछ वर्ष विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, मस्तिष्क नमनीयता के दृष्टिकोण से पूरी बाल्यावास्था और किशोरावस्था संवेदनशील अवधि है।

सही विकल्प चुनें ।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 21/01/2022

Ans. (a) : बच्चों के विकास पर शैशवास्था से किशोरावस्था तक ध्यान देना जरूरी है क्योंकि जीवन के शुरूआती कुछ वर्ष विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, मस्तिष्क नमनीयता के दृष्टिकोण से पूरी बाल्यावस्था और किशोरावस्था संवेदनशील अवधि है। विकास सतत्-रूप से चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक चलती रहती है। बच्चे कई संवेदनशील अवधियों से गुजरते हैं, जिसके दौरान वे विशेष रूप से कुछ प्रकार की उत्तेजनाओं के लिए ग्रहणशील होते हैं। प्रत्येक संवेदनशील अवधि के दौरान, एक बच्चा स्वाभाविक रूप से अपनी ऊर्जा पर ध्यान केन्द्रित करेगा और एक या एक से अधिक विशेष प्रकार की बातचीत या उत्तेजना पर ध्यान केन्द्रित करेगा। अतः (A) और (B) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

53. बाल विकास में_____ से _____ तक होने वाली वृद्धि व बदलाव का अध्ययन किया जाता है।

(a) जन्म; माध्यमिक बाल्यावस्था

(b) जन्म; किशोरावस्था

(c) गर्भधारण; माध्यमिक बाल्यावस्था

(d) गर्भधारण; किशोरावस्था

CTET (VI-VIII) 12/01/2022

Ans. (d) : बाल विकास में गर्भधारण (Conception) से किशोरावस्था (Adolescence) तक होने वाली वृद्धि व बदलाव का अध्ययन किया जाता है। विकास एक सतत् प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक चलती है। विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया को कुछ अवस्थाओं में बांटा जा सकता है। एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने पर विकास प्रक्रिया में कुछ निश्चित परिवर्तन आ जाते हैं। सामान्य रूप से मानव विकास को पाँच अवस्थाओं गर्भावस्था, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था में बांटा जा सकता है। शैक्षिक दृष्टि से इनमें से मध्य की तीन अवस्थाओं अथवा शैशवावस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था का अत्यधिक महत्व है।

54. अभिकथन (A): कुछ संस्कृतियों में किशोर लड़कियों में मासिक धर्म की शुरूआत का जश्न मनाया जाता है, जबकि अन्य संस्कृतियों में इसे गुप्त रखा जाता है।
कारण (R) : विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में पलने वाले बच्चों के लिए बचपन के अनुभव भिन्न होते हैं।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 07/01/2022

Ans. (a) : (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
कारण (R) विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भो में पलने वाले बच्चों के लिए बचपन के अनुभव भिन्न होते हैं क्योंकि सभी बालकों की संस्कृति भिन्न-भिन्न होती है इसलिए उनके बचपन के अनुभव भी अलग-अलग होते हैं।
अभिकथन (A) कुछ संस्कृतियों में किशोर लड़कियों में मासिक धर्म की शुरुआत का जश्न मनाया जाता है जबकि अन्य संस्कृतियों में इसे गुप्त रखा जाता है।

55. कथन (A) : संज्ञानात्मक विकास मध्य बाल्यावस्था तक तेजी से विकसित होता है और फिर ठहर जाता है।
तर्क (R) : मानव मध्य बाल्यावस्था के चरण के बाद नई चीजें नहीं सीख सकते।
सही विकल्प चुनें।
(a) (A) और (R) दोनो सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की
(b) (A) और (R) दोनो सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नही है (A) की
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 03/01/2022

Ans. (d) : अभिकथन (A) : संज्ञानात्मक विकास मध्य बाल्यावस्था तक तेजी से विकसित होता है और ठहर जाता है।
तर्क (R) मानव मध्य बाल्यावस्था के चरण के बाद नई चीजें नही सीख सकते। उपरोक्त कथन (A) और (R) दोनों गलत है। चूंकि पियाजे के अनुसार यह आवश्यक नही है कि सभी बच्चें में विकासात्मक चरण एक ही समय पर दिखाई पड़े परन्तु यह निश्चित है कि सभी बच्चों को विकास के सभी चरणों से गुजरना पड़ता है अर्थात् संज्ञानात्मक विकास के किसी चरण को छोड़ा नही जा सकता क्योंकि ये सभी चरण निश्चित व स्थिर है।बच्चा जीवन पर्यन्त सीखता रहता है और विकास जीवन पर्यन्त होता रहता है।

56. विकास के प्रत्येक चरण के लिए सामाजिक अपेक्षा को क्या कहा जाता है?
(a) विकासात्मक कार्य
(b) विकासात्मक आवश्यकताएँ
(c) विकासात्मक बाधाएँ
(d) विकासात्मक क्षेत्र

CTET (VI-VIII) 03/01/2022

Ans. (a) : विकास के प्रत्येक चरण के लिए सामाजिक अपेक्षा को 'विकासात्मक कार्य' कहा जाता है। विकास एक सार्वभौमिक (Universal) प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त तक अविराम होता रहता है। विकास केवल शारीरिक वृद्धि की ओर ही संकेत नहीं करता बल्कि इसके अंतर्गत वे सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन सम्मिलित रहते हैं जो गर्भकाल से लेकर मृत्युपर्यन्त तक निरन्तर प्राणी में प्रकट होते रहते हैं।

57. बाल्यावस्था से क्या अभिप्राय है ?
(a) यह एक सामाजिक संरचना है।
(b) यह एक शारीरिक संरचना है।
(c) यह बच्चे के जन्म से लेकर उसके विद्यालय जाना शुरू करने तक की अवधि को अभिलक्षित करने वाला चरण है।
(d) यह विकास की वह अवधि है जिसमें सिर्फ़ मात्रात्मक परिवर्तन होते है।

CTET (VI-VIII) 06/01/2022

Ans. (a) : बाल्यावस्था एक सामाजिक संरचना है। सामाजिक-संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बाल्यावस्था एक सामाजिक संरचना है। बाल्यावस्था में समाजीकरण की गति तीव्र होती है जिसके फलस्वरूप उसका सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। बाल्यावस्था में समूह सदस्यता, सामाजिक गुण, बर्हिमुखी प्रवृति, सामाजिक स्वीकृति की चाह, मित्र चयन आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है।

58. कथन (A): बच्चे सही ढंग से नही सीख पाते अगर वह अस्वस्थ या अल्पपोषित हैं।
तर्क (R): विकास के सभी आयाम परस्पर रूप से जुड़े हुए हैं- शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है।
सही विकल्प चुनें।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 05/01/2022

Ans. (a) : बच्चें सही ढंग से नही सीख पाते अगर वह अस्वस्थ या अल्पपोषित हैं क्योंकि विकास के सभी आयाम परस्पर रूप से जुड़े हुए हैं– शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है। शैक्षिक दृष्टि से विकास के सभी पक्षों (शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास और नैतिक विकास) का अत्यधिक महत्व है। विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में इन विभिन्न पक्षों का विकास किस प्रकार से होता है तथा विकास की गति व गुणवत्ता को किस प्रकार से वांछित दिशा में तीव्र गति से बढ़ाया जा सकता है, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः बच्चों के मानसिक विकास का उनके शारीरिक विकास से घनिष्ठ संबंध होता है और दोनों की एक-दूसरे पर निर्भरता भी होती है। कथन (A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

59. विकास के किस चरण में बहुत से हार्मोन संबंधी परिवर्तन होते हैं तथा अपनी पहचान की सक्रिय खोज पर बल होता है?

(a) किशोरावस्था (b) शैशवावस्था
(c) प्रारंभिक बाल्यवस्था (d) माध्यमिक बाल्यवस्था

CTET (VI-VIII) 30/12/2021

Ans. (a) : विकास के किशोरावस्था के चरण में बहुत से हार्मोन संबंधी परिवर्तन होते हैं तथा अपनी पहचान की सक्रिय खोज पर बल होता है। किशोरावस्था बालक के विकास की सबसे विचित्र तथा जटिल अवस्था है। इसका काल 12 वर्ष से 18 वर्ष तक रहता है। इस अवस्था में बालक दो अवस्थाओं में रहता है। उसे न तो बालक ही समझा जाता है और न ही प्रौढ़ के रूप में स्वीकृति मिलती है। इस अवस्था में होने वाले परिवर्तन बालक के व्यक्तित्व के गठन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। हॉल ने किशोरावस्था को संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था कहा है।

60. कथन (A): भाषा विकास केवल शैशवास्था के दौरान होती है और इसलिए केवल शैशवावस्था तक ही उपयुक्त उद्दीपन प्रदान करना चाहिए
तर्क (R): शुरूआती वर्षो के दौरान अनुभव किए गए नकारात्मक वातावरण का दीर्घकालिक प्रभाव नहीं होता।
सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 30/12/2021

Ans. (d) : भाषा विकास केवल शैशवास्था के दौरान नही होती अपितु यह शैशवावस्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के दौरान सम्पन्न होती है। बालक को सर्वप्रथम भाषा का ज्ञान परिवार से होता है। भाषा का विकास भी विकास के अन्य पहलुओं के लाक्षणिक सिद्धान्तों के अनुसार होता है। यह विकास परिपक्वता तथा अधिगम दोनों के फलस्वरूप होता है और इसमें नयी अनुक्रियाएँ सीखनी होती है और पहले की सीखी हुई अनुक्रियाओं का परिष्कार भी करना होता है। शुरुआती वर्षों के दौरान अनुभव किए गए नकारात्मक वातावरण का दीर्घकालिक प्रभाव होता है क्योंकि बालक का शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक स्वास्थ्य, सीखने की क्षमता और वयस्क होने, उसकी कमाने की क्षमता और सफलता को भी प्रभावित करती है। अतः (A) और (R) दोनों गलत हैं।

61. विकास की उस अवधि को क्या कहते हैं, जब आत्मसात मानकों पर प्रश्न उठाया जाता है और अक्सर परिवार की तुलना में साथियों की राय बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है?

(a) शैशवावस्था
(b) आरंभिक बाल्यावस्था
(c) मध्य बाल्यावस्था
(d) किशोरावस्था

CTET (VI-VIII) 31/12/2021

Ans. (d) : विकास की उस अवधि को किशोरावस्था कहते हैं, जब आत्मसात मानकों पर प्रश्न उठाया जाता है और अक्सर परिवार की तुलना में साथियों की राय बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। किशोरावस्था 12-18 वर्ष को माना गया है। इस अवस्था में बालकों के अन्दर बहुत सारे हार्मोंस विकसित होते है। किशोरावस्था में बालक को लगता है कि कोई भी बात अगर परिवार वाले बता रहे है तो वह गलत है इसमें लोग मित्रों को ज्यादा श्रेष्ठतम् मानते है। क्योंकि बालक अपने परिवार से खुलकर किसी भी बातों पर संवाद नहीं कर पाते है और ये मित्रों से खुलकर अपनी बातों को बता देते है।

62. विकास की कौन सी अवस्था में निम्न लक्षण समाहित हैं? स्वतंत्रता की स्थापना, अस्मिता का विकास और अमूर्त चिंतन

(a) मध्य बाल्यावस्था (b) उत्तर बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) पूर्व वयस्कावस्था

CTET (VI-VIII) 31/12/2021

Ans. (c) : विकास की किशोरावस्था में निम्न लक्षण समाहित हैं-
(1) स्वतन्त्रता की स्थापना
(2) अस्मिता का विकास
(3) अमूर्त चिंतन
किशोरावस्था को तनाव, तूफान तथा संघर्ष का काल भी कहा जाता है। यह वह अवस्था होती है, जिसमें बालक पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाता है और वह सभी प्रकार के मूर्त व अमूर्त चिंतन करने लगते हैं। किशोरावस्था में शारीरिक और मानसिक स्वतन्त्रता की प्रबल भावना होती है। वह बड़ों के आदेशों, विभिन्न परम्पराओं, रीति-रिवाजों और अंधविश्वासों के बन्धनों में न बँधकर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहता है। अस्मिता/पहचान विकास का तात्पर्य है हम खुद को कैसे परिभाषित करे। जिसे लोग हमें जान सके। पहचान हमारे आत्म-सम्मान को बढ़ावा देती है। हमारी आत्म-पहचान हमारे अपनेपन की धारणाओं को आकार देती है। जबकि अमूर्त चिंतन ज्ञान पर आधारित चिंतन होता है। अमूर्त चिंतन के लिए किसी वस्तु का प्रत्यक्ष रूप से सामने होना जरूरी नहीं है। इस प्रकार के चिंतन के लिए बालक अपनी बुद्धि व कल्पना शक्ति का उपयोग करता है। किशोरावस्था में बालक के सामने कोई वस्तु या समस्या न हो फिर भी वह सोचता है तो वह अमूर्त चिंतन है।

1.(ii) बालक के विकास के सिद्धांत

63. विकास के विषय में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(a) विकास सुरुचिपूर्ण, सुव्यवस्थित समूह की अवस्थाओं में पूर्वनिश्चित आनुवंशिक घटकों के कारण होता है।
(b) विकास एक सरल और एक-दिशीय प्रक्रिया है।
(c) बच्चों के विकास में बहुत-सी सांस्कृतिक विविधताएँ होती हैं।
(d) संसार में सभी बच्चों का विकास एक ही क्रम में और सुनिश्चित समय से होता है।

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : बच्चों के विकास में बहुत-सी सांस्कृतिक विविधताएँ होती हैं। वंशानुक्रम तथा पर्यावरण के बीच अंतःक्रिया के कारण बच्चों के विकास में वैयक्तिक भिन्नता उत्पन्न होती है। यह वैयक्तिक भिन्नता बच्चों द्वारा धारित जीन तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों जैसे-भोजन, चिकित्सा, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थिति, आर्थिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक परिस्थिति तथा शिक्षण अवसरों के कारण उत्पन्न होती हैं। इसीलिए प्रत्येक बालक अपने-आप में विशिष्ट होते हैं।

64. में से कौन सा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(a) विकास तुलनात्मक रूप से क्रमिक होता है।
(b) विकास समय के साथ धीरे–धीरे घटित होता है।
(c) विकास की सटीक गति एवं प्रकृति जन्म के समय ही निर्धारित हो जाती है।
(d) व्यक्ति अलग–अलग गति से विकास करते हैं।

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (c) : व्यक्ति का विकास निम्नलिखित सिद्धांतों का अनुसरण करता है–

- विकास की प्रक्रिया निरंतर अविराम गति से चलती रहती है।
- भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के विकास की गति एवं दिशा भिन्न–भिन्न होती है।
- विकास की गति तथा दिशा में परिमार्जन सम्भव होता है।
- विकास तुलनात्मक रूप से क्रमिक होता है।
- विकास समय के साथ धीरे–धीरे घटित होता है।
- विकास रेखीय गति एवं स्थिर दर से न होकर चक्राकार ढंग से होता है।
- विकास अधोगति रूप में अर्थात् सिर से पैर की ओर होता है।

अतः विकास की सटीक गति एवं प्रकृति जन्म के समय ही निर्धारित हो जाती है, यह विकास का सिद्धांत नहीं है।

65. शरीर के केन्द्रीय भाग से परिधियों या अग्रांगों की ओर का विकास दर्शाता है–

(a) विकिरणीय विकास के सिद्धान्तों को
(b) विकेंद्रीकृत विकास के सिद्धान्तों को
(c) मध्य–बाह्य विकास के सिद्धान्तों को
(d) सोपानीय विकास के सिद्धान्तों को

CTET (VI-VIII) 09/12/2018

Ans. (c) : मध्य–बाह्य विकास का सिद्धान्त या सामीप्यता विकास का सिद्धान्त (Principles of Proximodistal development) यह बतलाता है कि वृद्धि तथा विकास निकट से दूर की ओर के क्रम का अनुसरण करता है। इसके अनुसार पहले केन्द्र में स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है फिर केन्द्र से दूर स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है। यही कारण है कि बालक पहले हाथ व पैर की मांशपेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है तथा बाद में अंगुलियों के संचालन में निपुण होता है।

66. निम्नलिखित विकास के सिद्धांतों का उनके सही वर्णन से मिलान कीजिए–

	सिद्धांत		**वर्णन**
A.	समीप-दूराभिमुख दिशा	(i)	विभिन्न बच्चे भिन्न-भिन्न दर से बढ़ते हैं
B.	शिरःपदाभिमुख दिशा	(ii)	सिर से पैर का क्रम
C.	अंतर्वैयक्तिक भिन्नताएँ	(iii)	किसी अकेले बच्चे में विकास की दर विकास के एक क्षेत्र की अपेक्षा दूसरी में भिन्न हो सकती है
D.	अंतरावैयक्तिक भिन्नताएँ	(iv)	शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर
		(v)	सरल से जटिल की ओर वृद्धि

(a) A B C D
iv ii i iii
(b) A B C D
v ii i iii
(c) A B C D
ii iv i iii
(d) A B C D
ii iv iii i

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (a)
समीप-दूराभिमुख दिशा – शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर
शिरः पदाभिमुख शिक्षा – सिर से पैर का क्रम
अंतर्वैयक्तिक भिन्नताएँ – विभिन्न बच्चे भिन्न-भिन्न दर से बढ़ते हैं।
अंतरावैयक्तिक भिन्नताएँ – किसी अकेले बच्चे में विकास की दर विकास के एक क्षेत्र की अपेक्षा दूसरी में भिन्न हो सकती है।

67. विकास के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(a) विकास एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है जिसका ठीक-ठाक मापन हो सकता है।
(b) विकास परिपक्वन और अधिगम पर आधारित होता है।
(c) विकास वंशानुगतता और वातावरण के बीच सतत अन्योन्यक्रिया से होता है।
(d) प्रत्येक बच्चा विकास के चरणों से गुजरता है फिर भी बच्चों में वैयक्तिक भिन्नताएँ बहुत होती हैं।

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (a) विकास का अर्थ व्यापक है शारीरिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक आदि विकास भी होते है। विकास के परिवर्तनों को सिर्फ अवलोकित किया जा सकता है जैसे आंतरिक परिवर्तनों एवं योग्यताओं को केवल अवलोकित किया जा सकता है इसका मापन नहीं किया जा सकता है। क्योंकि विकास गुणात्मक परिवर्तन है न कि मात्रात्मक या परिमाणात्मक।

68. विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन है?

(a) विकासात्मक परिवर्तन एक सीधी रेखा में आगे जाते हैं
(b) विकास जन्म से किशोरावस्था तक आगे की ओर बढ़ता है और फिर पीछे की ओर
(c) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है
(d) विकास जन्म से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र गति से होता है और उसके बाद रुक जाता है

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (c) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न गति से होता हैं यह कथन विकास के वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धान्त को प्रदर्शित करता है।

69. मध्य बचपन अवधि है

(a) जन्म से 2 वर्ष (b) 10 वर्ष के बाद
(c) 2 वर्ष से 6 वर्ष (d) 6 वर्ष से 11 वर्ष

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (d) बाल विकास के दूसरे चरण बाल्यावस्था को मध्य-बचपन की अवधि कहा जाता है। बाल्यावस्था का काल 6 वर्ष से 11 वर्ष तक ही होता है। अतः मध्य बचपन के काल की अवधि 6-11 वर्ष तक की होगी।

70. इनमें से कौन-सा विकास का एक सिद्धांत नहीं है?
(a) विकास संशोधनयोग्य होता है।
(b) विकास केवल संस्कृति से शासित और निर्धारित होता है।
(c) विकास जीवनपर्यंत होता है
(d) विकास वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों से प्रभावित होता है।

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (b) विकास केवल संस्कृति से शासित होता है और निर्धारित होता है यह सिद्धांत गलत है क्योंकि विकास वातावरण (सांस्कृतिक) तथा वंशानुक्रम के अतःक्रिया से निर्देशित एवं इनके परिणाम स्वरूप होता है।

71. इनमें से कौन-सा बाल विकास का एक सिद्धान्त है?
(a) विकास परिपक्वन तथा अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है।
(b) अनुभव विकास का एकमात्र निर्धारक है।
(c) विकास प्रबलन तथा दण्ड के द्वारा सुनिश्चित किया जाता है।
(d) विकास प्रत्येक बच्चे की गति का सही ढंग से अनुमान लगा सकता है।

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (a) एक क्रिया का अपने में पूर्ण होना जिसके आधार पर नवीन क्रिया सीखी जा सके 'परिपक्वता' कहलाती है। परिपक्वता अनुभव व अधिगम के फलस्वरूप आती है और मनुष्य का विकास होता है। इसलिए कहा जाता है कि विकास परिपक्वन व अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है।

72. मनोसामाजिक सिद्धान्त निम्नलिखित में से किस पर बल देता है?
(a) उद्दीपन व प्रतिक्रिया
(b) लिंगीय व प्रसुप्ति स्तर
(c) उद्यम के मुकाबले में हीनता स्तर
(d) क्रियाप्रसूत (सक्रिय) अनुबंधन

CTET (VI-VIII) 21/09/2014

Ans. (c) एरिक्सन द्वारा विकास का मनोसामाजिक सिद्धान्त दिया गया। एरिक्सन के अनुसार यह चौथा विकासात्मक चरण है जो बाल्यावस्था के मध्य में परिलक्षित होती है। बालक द्वारा की गयी पहल से वह नये अनुभवों के सम्पर्क में आता है और जैसे-जैसे वह अपने बचपन के मध्य और अंत तक पहुँचता है, तब तक वह अपनी ऊर्जा को बौद्धिक कौशल और ज्ञान से हासिल करने की दिशा में मोड़ देता है।

73. शिक्षण का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य शिक्षकों से यह माँग करता है कि वे –
(a) कठोर अनुशासन बनाए रखने वाले बनें, क्योंकि बच्चे अकसर प्रयोग (जाँच) करते हैं
(b) विकासात्मक कारकों के ज्ञान के अनुसार अनुदेशन युक्तियों का अनुकूलन करें
(c) विभिन्न विकासात्मक अवस्था वाले बच्चों के साथ समान रूप से व्यवहार करें
(d) इस प्रकार का अधिगम उपलब्ध कराएँ जिसका परिणाम केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र के विकास में हो

CTET (VI-VIII) 21/09/2014

Ans. (b) शिक्षण का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य शिक्षकों से यह मांग करता है, कि वे विकासात्मक कारकों के ज्ञान के अनुसार अनुदेशन युक्तियों का अनुकूलन करें। यहां थार्नडाइक के द्वारा प्रतिपादित अधिगम में तत्परता का नियम लागू होता है।

74. निम्नलिखित में से कौन-सा ब्लूम के पुनर्संशोधित वर्गीकरण में 'मूल्यांकन' (evaluating) के क्षेत्र को प्रदर्शित करता है?
(a) आँकड़ों का प्रयोग करते हुए ग्राफ (graph) अथवा चार्ट (chart) का निर्माण करना
(b) एक समाधान की तार्किक सुसंगतता का परीक्षण करना
(c) प्रदत्त आँकड़ों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना
(d) वस्तुओं के श्रेणीकरण हेतु एक नूतन पद्धति का निर्माण करना

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (b) ब्लूम की वर्गिकी शिक्षा के अन्तर्गत 'सीखने के उद्देश्यों' के वर्गीकृत से सम्बंधित है, ब्लूम ने शिक्षा के उद्देश्यों के तीन क्षेत्र बताए संज्ञानात्मक, भावात्मक, तथा मनोवाहक अतः एक समाधान की तार्किक सुसंगतता का परीक्षण करना ब्लूम के पुनर्संशोधित वर्गीकरण में 'मूल्यांकन' के क्षेत्र को प्रदर्शित करता है।

75. एक अध्यापक/अध्यापिका ने पाया कि एक विद्यार्थी वर्ग बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहा है। उसने अनुमान लगाया कि वह हीरे (diamond) का चित्र बनाने में भी कठिनाई अनुभव करेगा। उसने निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त पर आधारित होकर यह अनुमान लगाया?
(a) विकास एक व्यवस्थित क्रम में होने की प्रवृत्ति से सम्बद्ध है
(b) विकास की प्रक्रिया एक उत्परिवर्तनीय प्रक्रिया है
(c) विकास निरन्तरीय होता रहता है
(d) अलग-अलग लोगों के लिए विकास की प्रक्रिया भी अलग-अलग होती है

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (a) अध्यापक/अध्यापिका ने यह अनुमान लगाया कि चूँकि विकास एक व्यवस्थित क्रम में होता है इसलिए यदि एक विद्यार्थी वर्ग बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहा है तो उसे हीरे का चित्र बनाने में भी कठिनाई होगी।

76. एक शिक्षिका दो एकसमान गिलासों को प्रदर्शित करती है जो जूस की समान मात्रा से भरे हुए हैं। वह उन्हें दो भिन्न गिलासों में खाली करती है जिनमें से एक लम्बा है और दूसरा चौड़ा है। वह बच्चों को उस गिलास की पहचान करने के लिए कहती है जिसमें जूस ज्यादा है। बच्चे प्रत्युत्तर देते हैं कि लम्बे गिलास में जूस ज्यादा है। शिक्षिका के बच्चों को - - - - कठिनाई है।
(a) अहम्केन्द्रिता (b) विकेन्द्रीकरण
(c) पलटावी (Reversibility) (d) समायोजन

CTET (VI-VIII) 28/07/2013

Ans. (c) पलटावी गुण में कठिनाई होने के कारण बच्चे लम्बे गिलास में ज्यादा जूस का उत्तर दे रहे हैं। इस स्तर पर बालकों में संरक्षण का गुण नहीं विद्यमान होता है अर्थात बालक मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः नहीं लौट पाता है।

77. संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति विकास के निम्नलिखित किन सिद्धान्तों के साथ सम्बन्धित हो सकती है?
(a) विकास के परिणामस्वरूप वृद्धि होती है
(b) विकास विषमजातीयता के स्वायत्तता की ओर अग्रसर होता है
(c) विद्यार्थी भिन्न दरों पर विकसित होते हैं
(d) विकास सापेक्ष रूप से क्रमिक होता है

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (d) संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति 'विकास सापेक्ष रूप से क्रमिक होता है' सिद्धांत से सम्बन्धित है।

78. मानव विकास कुछ विशेष सिद्धान्तों पर आधारित है। निम्नलिखित में से कौन-सा मानव विकास का सिद्धान्त नहीं है?

(a) सामान्य से विशिष्ट (b) प्रतिवर्ती
(c) निरंतरता (d) आनुक्रमिकता

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (b) प्रतिवर्ती मानव विकास का सिद्धान्त नहीं है। 'प्रतिवर्ती' शब्द का आशय है 'पुनः प्रारम्भ करना' और मानव विकास एक बार परिपक्वता प्राप्त करने पर पुनः नहीं प्रारम्भ होता है।

79. बच्चे के विकास के सिद्धान्तों को समझना शिक्षक की सहायता करता है –

(a) शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाना चाहिए - यह औचित्य स्थापित करने में
(b) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम-शैलियों को प्रभावी रूप में संबोधित करने में
(c) शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर को पहचानने में
(d) शिक्षार्थी की आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (b) बच्चों के विकास के सिद्धान्त को समझना शिक्षक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके माध्यम से शिक्षक बच्चों की रूचियों, व्यवहारों, संवेगों आदि को सही दिशा में निर्देशित कर सकता है, उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने शिक्षण शैलियों का निर्माण कर सकता है एवं उन्हें प्रभावी रूप से संचालित कर सकता है।

80. 'बच्चे के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए उसका स्वस्थ शारीरिक विकास एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।' यह कथन –

(a) सही है, क्योंकि विकास-क्रम में शारीरिक विकास सबसे पहले स्थान पर आता है
(b) सही है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अंतःसम्बन्धित है
(c) गलत है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों को किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं करता
(d) गलत हो सकता है, क्योंकि विकास नितांत व्यक्तिगत मामला है

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (b) किसी भी बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिए शारीरिक एवं अन्य विकास साथ-साथ होने चाहिए क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अंतःसम्बन्धित है।

81. अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से.....का हिस्सा है।

(a) शारीरिक विकास (b) सामाजिक विकास
(c) संवेगात्मक विकास (d) बौद्धिक विकास

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (d) अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से बौद्धिक विकास का हिस्सा है क्योंकि किसी भी अवधारणा को सोचने के लिए उसकी छवि मस्तिष्क में बनानी पड़ती है जिससे उसके बारे में सोचकर अपनी अवधारणा प्रकट की जा सके।

82. सिद्धान्त के रूप में रचनावाद –

(a) सूचनाओं को याद करने और पुनःस्मरण द्वारा जाँच करने पर बल देता है
(b) शिक्षक की प्रभुत्वशाली भूमिका पर बल देता है
(c) अनुकरण की भूमिका पर केंद्रित है
(d) दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्मित करने में शिक्षार्थी की भूमिका पर बल देता है

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (d) रचनावाद का सिद्धान्त शिक्षार्थी को दुनिया के बारे में सोच-विचार कर अपना दृष्टिकोण निर्मित करने की भूमिका पर बल देता है।

83. सीखने का वह सिद्धान्त जो पूर्ण रूप से और केवल 'अवलोकनीय व्यवहार' पर आधारित है, सीखने के .... सिद्धान्त से सम्बद्ध है।

(a) व्यवहारवादी (b) रचनावादी
(c) संज्ञानवादी (d) विकासवादी

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (c) सीखने का वह सिद्धान्त जो पूर्ण रूप से और केवल अवलोकनीय व्यवहार पर आधारित है, सीखने के संज्ञानवादी सिद्धान्त से सम्बद्ध है। सीखने के संज्ञानवादी सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति किसी उद्दीपक के प्रति मात्र अनुक्रिया ही नहीं करता है बल्कि वह सीखने के लिए अपनी सूझ या अंतर्दृष्टि का प्रयोग भी करता है। चूँकि अवलोकनीय व्यवहार को सीखने के लिए सूझ या अंतर्दृष्टि की भी आवश्यकता होती है। इसलिए यह अधिगम के संज्ञानवादी सिद्धान्त के अंतर्गत आता है।

84. एक प्रारंभिक विद्यालय का शिक्षक छात्र के शैक्षणिक आत्म-संप्रत्यय के विकास को दृढ़ता से प्रभावित कर सकता है :

(a) सभी विद्यार्थियों से बहुत कम अपेक्षाएँ रखना
(b) छात्रों में स्वायत्तता और पहल को दंडित करना
(c) छात्रों में स्वायत्तता और पहल को पुरस्कृत करना
(d) विशेष छात्रों से बहुत कम उम्मीदें रखना

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (c) : प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षक छात्रों के शैक्षणिक आत्म-संप्रत्यय को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब शिक्षक छात्रों की स्वामित्व और पहल को पुरस्कृत करते हैं, तो यह छात्रों को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और अपनी शिक्षा में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। यह छात्रों को यह भी दिखाता है कि उनकी राय और विचार महत्वपूर्ण हैं, जिससे उनके आत्म-सम्मान और आत्म विश्वास को बढ़ावा मिलता है।

85. निम्नलिखित कथन में विकास के किस सिद्धांत को दर्शाया गया है?

''जो बच्चे अपने शुरूआती वर्षों में भाषा सीखने के लिए अनुकूल वातावरण से वंचित रहते हैं, उन्हें बाद के जीवन में भाषा चुनने में थोड़ी कठिनाई होती है।''

(a) भाषा का विकास पूरी तरह आनुवंशिकी पर निर्भर है।
(b) भाषा और अनुभूति जटिल रूप से परस्पर संबंधित हैं।
(c) विकास अव्यवस्थित और अप्रत्याशित होता है।
(d) भाषा के विकास का एक संवेदनशील काल है।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : ''जो बच्चे अपने शुरूआती वर्षों में भाषा सीखने के लिए अनुकूल वातावरण से वंचित रहते हैं, उन्हें बाद के जीवन में भाषा चुनने में थोड़ी कठिनाई होती है।''
यह कथन दर्शाता है कि भाषा के विकास का एक संवेदनशील काल है जिसे प्रारम्भिक बाल्यावस्था कहते हैं। जीवन के पहले तीन वर्षों की शुरूआत में बच्चें 300 और 1000 शब्दों के बीच एक बोली जाने वाली शब्दावली विकसित करते हैं और वे अपने आस-पास की दुनिया के बारे में जानने और उसका वर्णन, करने के लिए भाषा का उपयोग करने में सक्षम होते है।

86. निम्नलिखित में से कौन सा विकास का सिद्धान्त नहीं हैं?

(a) विकास एक क्रमानुसार होने वाली प्रक्रिया है।
(b) विकास की कोई विशिष्ट दिशा नहीं होती।
(c) कुछ हद तक विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है।
(d) विकास आनुवंशिकता और पर्यावरण कारकों की पारस्परिक अंतःक्रिया का परिणाम है।

CTET (VI-VIII) 12/01/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : 'विकास की कोई विशिष्ट दिशा नहीं होता है' यह विकास के सिद्धान्त के अन्तर्गत नहीं है। मानव विकास के सिद्धान्त को उस रूप में परिभाषित किया जाता है जिस तरीके में एक व्यक्ति विकसित होगा। विकास के कई सिद्धान्त है जिसमें से एक 'क्रमिकता का सिद्धान्त' है इस सिद्धान्त के अन्य दो रूप है, सिफेलोकॉडल प्रवृत्ति एवं 'प्रोक्सिमो-डिस्टल'। इसके अलावा निरंतरता का सिद्धान्त, व्यक्तिगत अंतर, पारस्परिक संबंध, सामान्य से विशिष्ट, परस्पर क्रिया, दर में विभेदन, एकीकरण और पूर्वानुमेयता है।

87. बच्चों का विकास निम्नलिखित में से कौन-से सिद्धांत का अनुसरण करता है?

(a) एकरूपता (b) एक-आयामी
(c) रैखिकता (d) व्यक्तिगत भिन्नताएँ

CTET (VI-VIII) 27/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : बच्चों का विकास व्यक्तिगत भिन्नताओं के सिद्धान्त का अनुसरण करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार विकास की दर में पायी जाने वाली व्यक्तिगत भिन्नता लगभग समान रहती है। बालक अपनी स्वाभाविक गति से वृद्धि और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ते रहता है। और इसी कारण उनमें पर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है। कोई भी बालक वृद्धि और विकास की दृष्टि से किसी अन्य बालक के समरूप नही होता है उनमें कुछ न कुछ भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं।

88. प्रत्येक बच्चे के विकास की दरः

(a) गर्भधारण के समय निर्धारित हो जाती है और पर्यावरण इसमें ज्यादा भूमिका नहीं निभाता है।
(b) आनुवंशिकता और पर्यावरण की अंतःक्रिया के माध्यम से गतिशील तरीके से उभरती है।
(c) को विकासात्मक प्रतिमान को परखकर सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है।
(d) की भविष्यवाणी बिल्कुल नहीं की जा सकती क्योंकि यह यादृच्छिक तरीके से होता है।

CTET (VI-VIII) 02/02/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : प्रत्येक बच्चे के विकास की दर आनुवांशिकता और पर्यावरण की अंतः क्रिया के माध्यम से गतिशील तरीके से उभरती है।
आनुवांशिकता और पर्यावरण ये दोनों ऐसे तत्व हैं जो किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का निर्धारण करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आनुवांशिकता व्यक्ति को विकास की क्षमता प्रदान करती है, जिसका सही ढ़ंग से उपयोग पर्यावरण द्वारा किया जाता है। प्रत्येक बच्चे के विकास की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न दर से होती है और यह सुचारू रूप से जीवन पर्यंत तक गतिशील रहती है।

89. बच्चों में विकासात्मक परिवर्तन :

(a) सभी संस्कृतियों में सार्वभौमिक समान गति से होते हैं।
(b) एक आयामी और रैखिक हैं।
(c) वंशानुगत और पर्यावरणीय कारकों के बीच एक जटिल अंतःक्रिया हैं।
(d) अपरिवर्तनीय हैं और पैर की अंगुली से सिरे तक आगे बढ़ते हैं।

CTET (VI-VIII) 06/02/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : मानव विकास 'आनुवंशिकता और वातावरण' दोनों से प्रभावित होती है क्योंकि ये वे तत्व है जो किसी व्यक्ति के वृद्धि और विकास को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकासात्मक परिवर्तन आनुवांशिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अद्वितीय संयोजन का परिणाम है क्योंकि बच्चों का विकास आनुवांशिकता और पर्यावरण के बीच अंतः क्रिया का परिणाम हैं। बच्चों में विकासात्मक परिवर्तन वंशानुगत और पर्यावरणीय कारकों के बीच एक जटिल अंतः क्रिया है जो सभी जन्मजात लक्षण, प्रवृत्ति, और बुद्धिलब्धि, आनुवांशिकता पर निर्भर करते हैं। तथा सभी मानसिक और सामाजिक लक्षण पर्यावरण पर निर्भर करते हैं।

90. सरंचनावादी सिद्धांतकारों के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं होगा?

(a) ज्ञान व्यक्तिपरक है।
(b) शिक्षार्थी अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ज्ञान की रचना करते हैं।
(c) प्रभावी अधिगम सुनिश्चित करने के लिए शिक्षार्थियों को बाहरी रूप से प्रेरित करने की आवश्यकता है।
(d) ज्ञान बहुलवादी और बहुविध है।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : संरचनावादी सिद्धान्तकारों के अनुसार, ज्ञान व्यक्तिपरक है तथा शिक्षार्थी अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ज्ञान की रचना करते हैं। इनके अनुसार प्रभावी अधिगम सुनिश्चित करने के लिए शिक्षार्थियों को आन्तरिक रूप से प्रेरित करने की आवश्यकता है तथा ज्ञान बहुलवादी और बहुविध है अतः विकल्प (c) सही नहीं होगा।

91. विकास की दिशा और क्रम हर बच्चे के लिए समान होता है, लेकिन हर बच्चा अपनी गति से विकसित होता है। यह बाल विकास के निम्नलिखित में से किस सिद्धांत को दर्शाता है?

(a) अनिरंतरता (b) रैखिकता
(c) एकरूपता (d) पृथकता

CTET (VI-VIII) 21/12/2021

Ans. (d) : विकास की दिशा और क्रम हर बच्चे के लिए समान होता है, लेकिन हर बच्चा अपनी गति से विकसित होता है। यह बालविकास के पृथकता के सिद्धान्त को दर्शाता है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह निश्चित हो गया है कि विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता होती है। जो व्यक्ति के जन्म के समय लम्बा होता है वह बाद में बड़ा होने पर लम्बा होगा एक आयु के दो बालकों मे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में वैयक्तिक पृथकता स्पष्ट दिखाई देती है।

92. विकास अनुदैर्ध्य (अधोमुखी) अक्ष की दिशा में आगे बढ़ता हैं। विकास का यह सिद्धांत क्या कहलाता हैं?

(a) समीपदूराभिमुख (b) पारस्परिकता
(c) शीर्षगामी (d) निरंतरता

CTET (VI-VIII) 23/12/2021

Ans. (c) : विकास अनुदैर्ध्य (अधोमुखी) अक्ष की दिशा में आगे बढ़ता हैं। विकास का यह सिद्धान्त शीर्षगामी कहलाता है। इस सिद्धांत का यह मानना है कि बालकों का विकास सिर से पैर की तरफ होता है। मनोविज्ञान में इस सिद्धान्त को सिरापुछीय दिशा कहा जाता है अर्थात् पहले बालकों के सिर का उसके बाद उसके नीचे वाले अंगो का विकास होता है। विकास के सिद्धान्त को गहराई से समझा जाए तो इसे तीन तरह से समझा जा सकता है –

1. सिर से पैर की ओर विकास
2. रीढ़ की हड्डी से बाहर की ओर विकास
3. पहले स्वरूप तथा उसके बाद क्रिया का विकास

93. निम्न में से कौन सा सिद्धान्त यह प्रतिपादित करता है कि विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जिसका अन्त नहीं होता है?

(a) समरूपता का सिद्धांत (b) एकीकरण का सिद्धांत
(c) अंतः क्रियात्मकता का सिद्धांत (d) निरन्तरता का सिद्धांत

CTET (VI-VIII) 28/12/2021

Ans. (d) : निरन्तरता का सिद्धान्त (Principle of continuity) यह प्रतिपादित करता है कि विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जिसका अंत नहीं होता है अर्थात् विकास की प्रक्रिया निरन्तर अविराम गति से चलती रहती है। कभी यह मंद गति से चलती है तथा कभी तीव्र गति से चलती है। विकास की प्रक्रिया में समग्रता का भाव निहित रहता है जिसके कारण विकास को अलग-अलग वायुरूद्ध सोपानों में नहीं बांटा जा सकता है। उदाहरणार्थ- प्रारम्भिक वर्षों में वृद्धि तथा विकास अत्यन्त तीव्र रहता है। उसके बाद के वर्षों में गति कुछ धीमी हो जाती है एवं वृद्धावस्था में लगभग नगण्य हो जाती है परन्तु विकास प्रक्रिया अनवरत लगातार चलती रहती है। इस सिद्धांत से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्यतः विकास में अचानक कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता है।

94. निम्नलिखित वक्तव्यों में कौन सा विकास के विषय में सही नहीं है?

(a) विकास बहुआयामी एवं बहुमुखी होता है।
(b) सांस्कृतिक परिवर्तन से विकास प्रभावित नहीं होता।
(c) विकास जीवन पर्यन्त परिवर्तन की प्रक्रिया है।
(d) विकास सुनिश्चित पूर्व निर्धारित रीति से होता है।

CTET (VI-VIII) 24/12/2021

Ans. (b) : विकास के विषय में यह सही नहीं है कि सांस्कृतिक परिवर्तन से विकास प्रभावित नहीं होता बल्कि विकास बहुआयामी एवं बहुमुखी होता है जिसमें वृद्धि के साथ-साथ अन्य अनेक बातें समाहित रहती हैं। विकास के द्वारा बालक में नवीन क्षमताएँ प्रकट होती हैं। विकास जीवन पर्यन्त परिवर्तन की प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलती है। विकास में अचानक कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता है बल्कि विकास की प्रक्रिया अनवरत लगातार चलती रहती है। विकास सुनिश्चित पूर्व निर्धारित रीति से होता है। किसी प्रजाति के विकास में समानता होती है जो पूर्व निर्धारित भी होते हैं। जैसे विश्व के सभी भागों में बालकों का गर्भावस्था या जन्म के बाद विकास का क्रम सिर से पैरों की ओर होता है।

95. विकासात्मक प्रक्रिया में असांतत्य के क्या मायने हैं?

(a) विकास की प्रक्रिया के दौरान उभरने वाले नए तरीके जो संसार को समझने में मदद करते हैं।
(b) विकासात्मक प्रक्रिया में नकारात्मक विच्छेद।
(c) विकास की प्रक्रिया में अधोमुखी गिरावट।
(d) विकास की प्रक्रिया में हस्तक्षेप।

CTET (VI-VIII) 20/12/2022

Ans. (a) : विकासात्मक प्रक्रिया में असांतत्य (Discontinuity) के मायने यह है कि ये विकास की प्रक्रिया के दौरान उभरने वाले नये तरीके है जो संसार को समझने में मदद करते है। इससे विकास की प्रक्रिया को विविध प्रकार से समझा जा सकता है। असांतत्य के द्वारा नये-नये प्रकार के तरीकों से परिचय प्राप्त होता है जिससे विकास की प्रक्रिया को समझकर सतत् रूप से अग्रसर किया जा सकता है। सतत् विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरुरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरुरतों को पूरा करता है।

96. ''बच्चे का विकास एक सीधा पथ नहीं है, यह आगे बढ़ता है फिर पीछे मुड़ता है फिर आगे बढ़ता है।'' उपरोक्त वाक्य विकास के किस सिद्धान्त को दर्शाता है?

(a) एक रूपता सिद्धान्त (b) चक्रीय बढ़ोत्तरी
(c) एक-दिशायी विकास (d) विकास की सततहीनता

CTET (VI-VIII) 22/12/2021

Ans. (b) : ''बच्चे का विकास एक सीधा पथ नहीं है, यह आगे बढ़ता है फिर पीछे मुड़ता है फिर आगे बढ़ता है।'' उपरोक्त वाक्य विकास के चक्रीय बढ़ोत्तरी सिद्धांत (Principle of spiral advancement) को दर्शाता है। इस सिद्धांत के अनुसार विकास रेखीय गति एवं स्थिर दर से न होकर चक्राकार (वर्तुलाकार) ढंग से होता है। वह एक-सी गति से सीधा चलकर विकास को प्राप्त नहीं करता बल्कि बढ़ते हुए पीछे हटकर अपने विकास को परिपक्व और स्थायी बनाते हुए चक्राकार या वर्तुलाकार आकृति की तरह आगे बढ़ता है। दूसरे शब्दों में, विकास प्रक्रिया के दौरान बीच-बीच में ऐसे अवसर आते हैं जो किसी क्षेत्र विशेष में विकास की पूर्व अर्जित स्थिति का समायोजन करने के लिए उस क्षेत्र की विकास प्रक्रिया लगभग आराम (Rest) की स्थिति में आ जाती है। कुछ अवधि के उपरान्त उस क्षेत्र में विकास की गति फिर बढ़ जाती है।

97. विकास का शीर्षगामी सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि -

(a) विकास सिर से पाँव तक होता है।
(b) विकास केन्द्र से छोरों तक होता है।
(c) विकास पैर से सिर की ओर होता है।
(d) विकास छोरों से केंद्र की ओर होता है।

CTET (VI-VIII) 01/01/2022
CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (a) : विकास का शीर्षगामी सिद्धान्त प्रतिपादित करता है कि विकास सिर से पाँव की ओर होता है अर्थात् सबसे पहले मस्तिष्क क्षेत्र फिर धड़ क्षेत्र तथा सबसे अन्त में पैर क्षेत्र फिर शरीर के विभिन्न अंगों का विकास होता है। इस सिद्धांत को सिरापुछिय दिशा भी कहा जाता है। जन्म के उपरान्त भी शारीरिक विकास में यह क्रम बना रहता है। बालक शरीर के ऊपरी अंगों अर्थात् सिर का नियंत्रण करना सबसे पहले सीखता है, फिर हाथों का नियंत्रण करना सीखता है, फिर धड़ का नियंत्रण करना सीखता है तथा अन्त में शरीर के निम्न भाग अर्थात् पैरों का नियंत्रण करना सीखता है।

98. विकास का कौन-सा सिद्धान्त बताता है कि शरीर के विभिन्न तंत्र अलग-अलग दरों पर विकसित होते हैं ?

(a) शीर्षगामी सिद्धान्त
(b) समीपदूराभिमुखी सिद्धान्त
(c) पदानुक्रमित एकीकरण का सिद्धान्त
(d) प्रणालियों की स्वतंत्रता का सिद्धान्त

CTET (VI-VIII) 10/01/2022

Ans. (d) : विकास का प्रणालियों की स्वतंत्रता का सिद्धान्त बताता है कि शरीर के विभिन्न तंत्र अलग-अलग दरों पर विकसित होते हैं। विभिन्न शरीर प्रणालियाँ अलग-अलग दरों पर परिपक्व होती हैं। उदाहरण के लिए, शैशवावस्था के दौरान तंत्रिका तंत्र अत्यधिक विकसित होता है। तंत्रिका तंत्र में मस्तिष्क और तंत्रिकाएँ शामिल हैं जो पूरे शरीर में फैली हुई हैं। इस सिद्धांत के अनुसार शरीर के आकार, तंत्रिका तंत्र और यौन परिपक्वता के लिए वृद्धि व विकास के पैटर्न काफी भिन्न होते हैं। अतः शरीर के विभिन्न तंत्रों का विकास अलग-अलग दर पर होता है।

99. बच्चों का/के शारीरिक विकास –

(a) में केवल मात्रात्मक पवितर्न होते हैं।
(b) में केवल गुणात्मक परिवर्तन होते हैं।
(c) की सटीकता से विकासात्मक प्रतिमानों से तुलना करके भविष्यवाणी की जा सकती है।
(d) एक व्यवस्थित और अनुक्रमिक तरीके से होता है, लेकिन अलग-अलग बच्चों के विकास की दर अलग-अलग होती है।

CTET (VI-VIII) 10/01/2022

Ans. (d) : बच्चों का शारीरिक विकास एक व्यवस्थित और अनुक्रमिक तरीके से होता है, लेकिन अलग-अलग बच्चों के विकास की दर अलग-अलग होती है। शारीरिक विकास से तात्पर्य सामान्य शारीरिक रचना, शरीर की ऊँचाई, भार, शारीरिक अवयवों का अनुपात, आन्तरिक अंगो, हड्डियों तथा मांसपेशियों का विकास; स्नायुमण्डल तथा मस्तिष्क एवं अन्तःस्रावी ग्रंथियों के विकास से है। बच्चों का शारीरिक विकास क्रमबद्ध होने के साथ-साथ, अलग-अलग दर पर होता है। गति व प्रकृति की दृष्टि से विकास की विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास की प्रक्रिया कुछ न कुछ भिन्न अवश्य होती है।

100. विकासात्मक परिवर्तन-

(a) अत्यधिक अप्रत्याधिक हैं।
(b) मध्य बाल्याकाल तक बहुत तेजी से होते हैं फिर एक पठार पर पहुँचकर रुक जाते हैं।
(c) व्यक्तियों में अलग-अलग दरों पर होता है।
(d) सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ से स्वतंत्र हैं।

CTET (VI-VIII) 10/01/2022

Ans. (c) : विकासात्मक परिवर्तन व्यक्तियों में अलग-अलग दरों पर होता है। विकासात्मक परिवर्तन प्रायः व्यवस्थापक, प्रगत्यात्मक और नियमित होते हैं। सामान्य से विशिष्ट की ओर, सरल से जटिल की ओर, एकीकृत से क्रियात्मक स्तरों की ओर अग्रसर होने के दौरान प्रायः यह एक पैटर्न का अनुसरण करते हैं। विकासात्मक परिवर्तन एक सीधी रेखा में आगे जाते हैं। विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है। विकास जन्म से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र गति से होता है और उसके बाद रूक जाता है। प्रत्येक व्यक्ति निरंतर अपने तरीके से बदलता रहता है और प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। इस प्रकार विकास एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है।

101. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण विकास के समीप दूरीभिमुखी/अधोगामी सिद्धांत को दर्शाता है?

(a) चलना सीखने से पहले दृश्य क्षमताओं का विकास होता है।
(b) बाहों का प्रभावी उपयोग हाथों का उपयोग करने की क्षमता से पहले होता है।
(c) व्यक्तिगत उँगलियों की गति को एकीकृत करना सीखने से पहले उँगली पकड़ने में महारत हासिल नहीं की जा सकती है।
(d) शरीर के आकार, तंत्रिका तंत्र के विकास की क्रम व गति अलग-अलग होती है।

CTET (VI-VIII) 11/01/2022

Ans. (b) : बाहों का प्रभावी उपयोग, हाथों का उपयोग करने की क्षमता से पहले हाता है। यह उदाहरण विकास के समीप दूरीभिमुखी/ अधोगामी सिद्धान्त को दर्शाता है। इसके अनुसार विकास निकट से दूर की ओर क्रम का अनुसरण करता है। इसके अनुसार पहले केन्द्र में स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है। यही कारण है कि बालक पहले हाथ व पैर की मांशपेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है तथा बाद में अंगुलियों के संचालन में निपुण होता है। इसमें विकास शरीर के मध्य से बाहर की ओर भी होता है।

102. विकासात्मक परिवर्तन -

(a) एक क्रमबद्ध और क्रमिक तरीके से होते हैं।
(b) शैशवावस्था में बहुत तेज गति से होते हैं और फिर किशोरावस्था तक कोई वृद्धि नहीं होती है।
(c) हमेशा रैखिक तरीके से होते हैं, चक्रीय ढ़ग से नहीं।
(d) किशोरावस्था तक आगे की ओर होते हैं और फिर पीछे की ओर बढ़ते हैं।

CTET (VI-VIII) 11/01/2022

Ans. (a) : विकासात्मक परिवर्तन एक क्रमबद्ध और क्रमिक तरीके से होते हैं। विकास एक सतत-प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक चलती है। विकास की अपनी एक निश्चित पद्धति होती है जो सदा सामान्य से विशिष्ट दिशा की ओर चलती है। यह बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में आने वाले विभिन्न परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे वे परिवर्तन सामाजिक, शारीरिक, संवेगात्मक या बौद्धिक हो। यह गुणात्मक परिवर्तनों की ओर संकेत करता है। अतः विकास में कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता है वरन् यह अनवरत लगातार चलने वाली प्रक्रिया है।

103. निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धान्त बताता है कि विकास एक प्रतिरूप का पालन करता है जो सिर और ऊपरी शरीर के हिस्सों में शुरू होता है और फिर शरीर के बाकी हिस्सों में है?

(a) शीर्षगामी सिद्धांत
(b) समीपदूराभिमुखी सिद्धांत
(c) पदानुक्रमित एकीकरण का सिद्धांत
(d) प्रणालियों की स्वतंत्रता का सिद्धांत

CTET (VI-VIII) 07/01/2022

Ans. (a) : शीर्षगामी सिद्धान्त यह बताता है कि विकास का एक प्रतिरूप का पालन करता है जो सिर और ऊपरी शरीर के हिस्सों में शुरू होता है और फिर शरीर के बाकी हिस्सों में है। इसका अर्थ है कि सबसे पहले मस्तिष्क क्षेत्र (Head Region) फिर धड़ क्षेत्र (Trunk Region) तथा सबसे अन्त में पैर क्षेत्र (Leg Region) में शरीर के विभिन्न अंगो का विकास होता है। जन्म के उपरान्त भी शारीरिक विकास मे यह क्रम बना रहता है, बालक हाथों का नियन्त्रण करना सीखता है, फिर धड़ का नियंत्रण करना सीखता है तथा सबसे अन्त मे शरीर के निम्न भाग अर्थात् पैरों का नियन्त्रण करना सीख पाता है।

104. कथन (A): विकासात्मक प्रतिमान की निर्धारित उम्र-सीमा केवल औसत उम्र-सीमा दर्शाती हैं।

तर्क (R): बच्चों के विकासात्मक विकास की गति अलग-अलग होती है तथा वे अलग-अलग समय पर पहुँचते हैं।

सही विकल्प चुने हैं।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

(b) (A) और (R) दोनों सही है, लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।

(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 08/01/2022

Ans. (a) : विकासात्मक प्रतिमान की निर्धारित उम्र-सीमा केवल औसत उम्र-सीमा दर्शाती हैं क्योंकि बच्चों के विकासात्मक विकास की गति अलग-अलग होती है तथा वे अलग-अलग समय पर पहुँचते हैं। प्रत्येक बालक का विकास एक समान प्रक्रिया से नहीं हो सकता। जो बालक जन्म के समय लम्बा हो तो जरूरी नहीं कि वह आगे भी लम्बा ही रहेगा। एक ही उम्र के दो बालकों में शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक विकास में भिन्नताएँ स्पष्ट देखी जा सकती है। अतः (A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

105. कथन (A): बच्चों व बचपन की संकल्पना सार्वभौमिक नहीं हो सकती।

तर्क (R): बच्चों व बचपन की समझ में उनके सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश की कोई भूमिका नहीं हैं।

सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।.

(b) (A) और (R) दोनों सही है, लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है। (A) की।

(c) (A) सही है, लेकिन (R)गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 08/01/2022

Ans. (c) : बच्चों व बचपन की संकल्पना सार्वभौमिक नहीं हो सकती है क्योंकि बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है अर्थात् उनके विकास की गति एवं दिशा भिन्न-भिन्न होती है। बच्चों व बचपन की समझ में उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक सम्पर्क विद्यार्थी की संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा सांस्कृतिक बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक होती है। अधिगम बच्चे और संस्कृति के बीच परस्पर क्रिया के माध्यम से होता है। अतः (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।

106. विकास _____

(a) शरीर के मध्य से बाहर की दिशा में होता है।

(b) नीचे से ऊपर की ओर होता है।

(c) एक आयामी है।

(d) वातावरणीय कारकों से प्रभावित नहीं होता है।

CTET (VI-VIII) 03/01/2022

Ans. (a) : विकास शरीर के मध्य से बाहर की दिशा में होता है अर्थात् पहले स्पाइनल कार्ड बनात है फिर हृदय इस क्रम में विकास होता है। चूंकि निकट दूर विकास क्रम (Proximodistal Development Sequence) में शारीरिक विकास पहले केन्द्रीय भागों में प्रारम्भ होता है तत्पश्चात केन्द्र से दूर के भागों में होता है। उदाहरण के लिए पेट और धड़ में क्रियाशीलता जल्दी आती है।

107. विकास के विषय में कौन-सा वक्तव्य सही है-

(i) विकास की गति में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ होती हैं।

(ii) संज्ञानात्मक विकास पूर्णतः आनुवंशिकता द्वारा निर्धारित होता है।

(iii) विकास पूर्वनिर्धारित क्रम में होता है।

(iv) विकास के सभी पक्ष-क्षेत्र परस्पर संबंधित हैं।

(a) (i), (ii) और (iii)

(b) (i), (ii) और (iv)

(c) (i), (iii) और (iv)

(d) (i), (ii), (iii) और (iv)

CTET (VI-VIII) 30/12/2021

Ans. (c) : विकास के विषय में निम्नलिखित वक्तव्य सही है–

(i) विकास की गति में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ होती हैं इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी गति एवं अपने ढंग से विभिन्न क्षेत्रों में अपना विकास करता है।

(ii) विकास पूर्वनिर्धारित क्रम में होता है अर्थात् विकास निश्चित एवं पूर्वनिर्धारित क्रम जैसे मस्तकाधोमुखी क्रम (मस्तिष्क से पैर की ओर) तथा सामीप्यता का सिद्धान्त (निकट से दूर की ओर) का अनुसरण करता है।

(iii) विकास के सभी पक्ष, क्षेत्र परस्पर संबंधित होते हैं अर्थात् बालक पहले सम्पूर्ण अंगों को तथा फिर उस अंग के विभिन्न भागों को चलाना सीखता है और फिर इन समस्त भागों में समन्वय स्थापित करना सीखता है।

संज्ञानात्मक विकास पूर्णतः आनुवंशिकता द्वारा निर्धारित न होकर वातावरण द्वारा भी प्रभावित होता है क्योंकि विकास आनुवंशिकता एवं वातावरण की परस्पर अन्तःक्रिया का परिणाम होता है।

108. यह देखकर कि उनका पुत्र रवि पठन में बहुत रूचि लेता है और 3 वर्ष की आयु में ही पढ़ लेता है, उसके माता-पिता ने उसे बहुत सी पुस्तकें लाकर दीं। अपने माता-पिता के प्रोत्साहन से रवि की पठन क्षमता अपनी आयु से कहीं बहुत आगे है। इस उदाहरण से विकास के किस सिद्धान्त को संदर्भित किया जा सकता है?

(a) विकास किसी निर्धारित मार्ग का अनुसरण नहीं करता है।

(b) विकास समीपदूराभिमुख है।

(c) विकास शीर्षगामी है।

(d) विकास आनुवंशिकता और परिवेश के बीच अंतः क्रिया का परिणाम है।

CTET (VI-VIII) 31/12/2021

Ans. (d) : यह देखकर कि उनका पुत्र रवि पठन में बहुत रुचि लेता है और 3 वर्ष की आयु में ही पढ़ लेता है। माता-पिता ने उसे बहुत सी पुस्तके लाकर दी। अपने माता-पिता के प्रोत्साहन से रवि की पठन अक्षमता अपनी आयु से कही बहुत आगे है। इस उदाहरण से विकास के आनुवंशिकता और परिवेश के बीच अंतः क्रिया का परिणाम है। केवल वंशानुक्रम अथवा केवल वातावरण के कारक बालक के विकास की दिशा व गति को निर्धारित नहीं करते हैं वरन् इन दोनों के अन्तः क्रिया के द्वारा विकास की गति व दिशा का नियन्त्रण होता है। वस्तुतः बालक के सम्पूर्ण व्यवहार की सृष्टि, वंशानुक्रम और वातावरण की अन्तःक्रिया द्वारा होती है। शिक्षा की किसी भी योजना में वंशानुक्रम और वातावरण को एक-दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है, उसी प्रकार वंशानुक्रम और वातावरण का भी सम्बंध है। अतः बालक के सम्यक् विकास के लिए वंशानुक्रम और वातावरण का संयोग अनिवार्य है।

109. निम्नलिखित उदाहरण विकास के किस सिद्धांत की व्याख्या करता है-

एक बच्ची चलने से पहले खड़ा होना सीखती है और बोलने से पहले बड़-बड़ाना?

(a) विकास क्रमबद्ध होता है।

(b) विकास का क्रम सिर से पैरों की ओर होता है।

(c) विकास अव्यवस्थित होता है।

(d) विकास केन्द्र से हाथ-पैर की तरफ होता है।

CTET (VI-VIII) 05/01/2022

Ans. (a) : एक बच्ची चलने से पहले खड़ा होना सीखती है और बोलने से पहले बड़-बडाना? यह उदाहरण विकास के क्रमबद्ध सिद्धान्त की व्याख्या करता है। यह मानते है कि होने वाले परिवर्तनों और उनमें से पूर्ववर्ती या उनके बीच एक निश्चित संबंध है। ये परिवर्तन व्यक्ति में कार्यात्मक परिपक्वता लाते हैं। प्रत्येक प्रजाति, चाहे वह पशु प्रजाति हो अथवा मानव प्रजाति के विकास का एक निश्चित प्रतिक्रम होता है जो उस प्रजाति के समस्त सदस्यों के लिए सामान्य होता है तथा उस प्रजाति के समस्त सदस्य उस प्रतिक्रम का अनुसरण करते हैं।

1.(iii) आनुवांशिकता और पर्यावरण का प्रभाव

110. मानव विकास के संदर्भ में आनुवंशिकता तथा पर्यावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?

(a) परिवेशीय प्रभाव पूर्ण रूप से एक व्यक्ति के विकास को निर्धारित करते हैं।

(b) मानव-विकास को न तो आनुवंशिकता और न ही पर्यावरण प्रभावित करते हैं।

(c) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों एक जटिल पारस्परिक क्रिया के रूप में मानव विकास को प्रभावित करते हैं।

(d) वैयक्तिक विभिन्नताओं का एकमात्र कारण आनुवंशिकता है।

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (c) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों एक जटिल पारस्परिक क्रिया के रूप में मानव विकास को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति जो कुछ भी सोचता है, करता है अथवा अनुभव करता है, वह उसके आनुवंशिकता एवं पर्यावरण की परस्पर अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। वंशानुक्रम या आनुवंशिकता विकसित होने के लिए क्षमताएँ प्रदान करता है, जबकि पर्यावरण इन क्षमताओं को विकसित होने के अवसर प्रदान करता है।

111. विकास के वैयक्तिक विभिन्नता को समझने के लिए क्या महत्त्वपूर्ण है?

(a) पर्यावरणीय कारकों पर विचार करना जो लोगों को प्रभावित करते हैं।

(b) शरीर एवं दिमाग के परिपक्वन पर विचार करना।

(c) वंशागत विशेषताओं के साथ–साथ पर्यावरणीय कारकों एवं उनकी पारस्परिक क्रिया पर विचार करना।

(d) वंशागत विशेषताओं पर विचार करना जो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में विशेष शुरुआत देती हैं।

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (c) : विकास में वैयक्तिक विभिन्नता को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि वंशागत विशेषताओं के साथ-साथ पर्यावरणीय कारकों एवं उसकी पारस्परिक क्रिया पर भी विचार किया जाना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति के विकास में वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। व्यक्ति जो कुछ भी सोचता है, करता है अथवा अनुभव करता है वह उसके वंशानुक्रम तथा वातावरण की परस्पर अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। इसलिए व्यक्ति विकास की वैयक्तिक विभिन्नता को समझने के लिए वंशानुक्रम और वातावरण दोनों की परस्पर अंतर्क्रिया पर विचार किया जाना चाहिए।

112. _____ तथा _____ की विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।

(a) खोज; पोषण (b) चुनौतियाँ; सीमाएँ

(c) वंशानुक्रम; पर्यावरण (d) स्थिरता; परिवर्तन

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (c) बालक के सम्पूर्ण व्यवहार की सृष्टि वंशाानुक्रम और वातावरण की अंतः क्रिया द्वारा होती है। मोर्स एवं विंगो का मत है ''मानव व्यवहार की प्रत्येक विशेषता वंशानुक्रम और वातावरण की अन्योन्यक्रिया का फल है।'' इसलिए वंशानुक्रम तथा पर्यावरण की विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।

113. ''किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवंशिक संरचना से निर्धारित होती है।'' यह कथन

(a) ठीक है, क्योंकि किसी व्यक्ति की आनुवंशिक संरचना बहुत प्रबल होती है

(b) ठीक नहीं है, क्योंकि बहुत से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ सकता है

(c) ठीक है, क्योंकि बहुत से शोध यह सिद्ध करते हैं कि आनुवंशिक पदार्थ ही व्यक्ति के विकास की भविष्यवाणी करता है

(d) ठीक नहीं है, क्योंकि वातावरण के घटक किसी व्यक्ति की बुद्धि और विकास में कम योगदान करते हैं

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (b) मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि बालक के विकास के प्रत्येक पक्ष पर उसके भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति का विकास वंशानुक्रम तथा वातावरण की परस्पर अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। इसलिए यह कहना गलत होगा कि व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती क्योंकि व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवांशिक संरचना से निर्धारित होती है।

114. भारत में बहुत से बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, विद्यालय में आने से पहले और विद्यालय से वापस जाने के बाद घर का काम करते हैं। आपके विचार से इस संदर्भ में एक शिक्षिका को गृहकार्य के बारे में क्या करना चाहिए?

(a) शिक्षिका को ऐसा गृहकार्य देना चाहिए जो विद्यालय में कराए गए अधिगम को बच्चों के घरेलू जीवन से जोड़ता है।

(b) शिक्षिका को सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे अपना गृहकार्य पूरा करने के लिए सुबह जल्दी उठें और देर तक रुकें।

(c) बच्चों के माता-पिता से उनके गृहकार्य को पूरा कराने के लिए ट्यूशन लगवाने के लिए कहिए।

(d) उसे उन बच्चों को कठोर दंड देना चाहिए जो अपना गृहकार्य पूरा नहीं करते हैं।

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (a) भारत में बहुत से बच्चे (जिनमे लड़कियों की संख्या ज्यादा है) जिन्हें विद्यालय जाने के पूर्व तथा विद्यालय से आने के बाद घर के कामों में हाथ बटाना पड़ता है। जिससे विद्यालय में दिया गया गृहकार्य पूर्ण नहीं हो पाता। अतः इन बच्चों के लिए शिक्षक द्वारा इस प्रकार का गृहकार्य दिया जाना चाहिए जिसका प्रयोग बालक अपने घरेलू जीवन में भी कर सके।

115.'प्रकृति-पालन पोषण' वाद-विवाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा आपको उपयुक्त प्रतीत होता है?

(a) एक बच्चा एक खाली स्लेट के समान होता है जिसका चरित्र परिवेश के द्वारा किसी भी आकार में ढाला जा सकता है।

(b) एक बच्चे के व्यवहार का निर्धारण करने में परिवेशीय प्रभावों का बहुत कम महत्व होता है, वह प्राथमिक रूप से आनुवंशिक रूप से निर्धारित होता है।

(c) वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक-दूसरे से गुँथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते हैं।

(d) बच्चे आनुवंशिक रूप से उस तरफ प्रवृत्त होते हैं जिस तरफ होना चाहिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे किस प्रकार के परिवेश में पल-बढ़ रहे हैं।

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (c) 'प्रकृति पालन-पोषण' वाद-विवाद के संदर्भ में वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक-दूसरे से गुँथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते है उपयुक्त कथन है।

116.इस पर अत्यधिक वाद-विवाद होता है कि क्या लड़कों एवं लड़कियों में योग्यताओं का विशिष्ट समूह उनके आनुवंशिक घटकों के कारण होता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित में से आप सबसे अधिक किससे सहमत हैं?

(a) लड़कियों को सेवाभाव के लिए सामाजिक रूप से तैयार किया जाता है जबकि लड़कों को रोने जैसा संवेग प्रदर्शित करने के लिए हतोत्साहित किया जाता है।

(b) यौवनारम्भ के बाद लड़के और लड़कियाँ एक साथ नहीं खेल सकते हैं क्योंकि उनकी अभिरुचियाँ पूर्णतया विपरीत होती हैं।

(c) सभी लड़कियों में कला-विषयों के लिए अंतर्निहित प्रतिभा होती है जबकि लड़के आक्रामक खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए आनुवांशिक रूप से तैयार होते हैं।

(d) लड़के सेवाभाव वाले नहीं हो सकते हैं क्योंकि वे जन्म से इस प्रकार के होते हैं।

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (c) सभी लड़कियों में कला विषयों के लिए अन्तर्निहित प्रतिभा होती है। जबकि लड़के आक्रामक खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए आनुवांशिक रूप से तैयार होते हैं।

117.मानवीय विकास में आनुवंशिकता एवं परिवेश की भूमिका के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन समुचित है?

(a) परिवेश की भूमिका लगभग स्थिर सी रहती है जबकि आनुवंशिकता का प्रभाव परिवर्तित हो सकता है

(b) 'व्यवहारवाद' के सिद्धान्त प्रायः मानवीय विकास में 'प्रकृति' की भूमिका पर आधारित है

(c) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवंशिकता एवं परिवेश का सापेक्षिक प्रभाव परिवर्तनशील है

(d) भारत सरकार की विभेदात्मकता क्षतिपूरकता (compensatory discrimination) सम्बन्धी नीति मानवीय विकास में 'प्रकृति' की भूमिका पर आधारित है

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (c) मानवीय विकास में आनुवंशिकता एवं परिवेश की भूमिका के सन्दर्भ में, विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवंशिकता एवं परिवेश का सापेक्ष प्रभाव परिवर्तनशील है, अतः यह कथन समुचित है।

118.निम्नलिखित में से कौन-सा मुख्य रूप से आनुवंशिकता सम्बन्धी कारक है?

(a) आँखों का रंग

(b) सामाजिक गतिविधियों में भागीदारिता

(c) समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति अभिवृत्ति

(d) चिंतन पैटर्न

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (a) आनुवंशिकता में किसी व्यक्ति से उसके बच्चे में कुछ गुण जाते हैं जैसे आँखों का रंग अनुवंशिकता के लक्षण के कारण होता है।

119.आनुवंशिकता को ..... सामाजिक संरचना माना जाता है।

(a) गत्यात्मकता (b) स्थिर

(c) प्राथमिक (d) गौण

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (b) वंशानुक्रम या अनुवांशिक गुण प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता से प्राप्त होता है जो कि स्थिर होता है। वातावरणीय प्रभाव से इन गुणों को दिशा व दशा मिलती है इसलिए वातावरण सामाजिक संरचना का गत्यात्मक पहलू है जबकि वंशानुक्रम स्थिर पहलू है।

120. निम्न में से कौन से कारक बच्चे के संपूर्ण विकास के लिए जिम्मेदार हैं?

(i) आनुवंशिकता

(ii) भौतिक वातावरण

(iii) सामाजिक परिवेश

(a) केवल (i) (b) केवल (ii) और (iii)

(c) केवल (i) और (ii) (d) (i), (ii), और (iii)

CTET (VI-VIII) 09/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : मानव विकास का सामान्य अर्थ व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में आयु के साथ आए परिवर्तन से है। विकास व्यक्ति के मानसिक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक आदि पक्षों में परिवर्तन से है। यह विकास प्रक्रिया मानव जीवन में गर्भावस्था से लेकर मृत्युपर्यंत तक चलती रहती है। विकास का क्षेत्र अति व्यापक होता है। बच्चों के सम्पूर्ण विकास में निम्न कारक जिम्मेदार होते हैं–

- **आनुवांशिकता (Heredity) –**
  - * शारीरिक संरचना
  - * लिंग भेद
  - * संवेगात्मक विशेषताएँ
  - * बुद्धि
  - * वंश/प्रजाति
  - * आंतरिक संरचना
- **भौतिक वातावरण (Physical Environment)** – बोरिंग, वैल्ड और लैंगफील्ड ने वातावरण के प्रभाव को इस तरह व्यक्त किया है - ''वातावरण वह प्रत्येक वस्तु है जो व्यक्ति को पित्रैकों के अतिरिक्त अन्य सभी बातों को प्रभावित करती है।''

- **सामाजिक परिवेश (Social Context) –**
  - * जीवन की आवश्यक सुविधाएँ
  - * समाज और संस्कृति
  - * पारिवारिक पृष्ठभूमि
  - * रोग तथा चोट
  - * विद्यालय

121. कौन से कारक बच्चों के विकास को निर्धारित व प्रभावित करते हैं?

(i) आनुवंशिकता

(ii) भौतिक वातावरण

(iii) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

(a) (i) and (iii)/(i) और (iii)

(b) (i) and (ii)/ (i) और (ii)

(c) (ii) and (iii)/ (ii) और (iii)

(d) (i), (ii) and (iii)/ (i), (ii) और (iii)

CTET (VI-VIII) 24/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : बच्चों के विकास को आनुवंशिकता, भौतिक वातावरण तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक ये तीनों प्रभावित व निर्धारित करते हैं। बालक को अपने माता पिता से जो भी गुण प्राप्त होता है वो वंशानुक्रम के माध्यम से ही होता है। वातावरण के कारण बालक की मानसिक शक्ति, कल्पना शक्ति तथा तर्क-शक्ति प्रभावित होती है। बालक की सामाजिक- आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव उसके विकास पर पड़ता है अतः निर्धन परिवार के बच्चे अधिक अवसर प्राप्त न करने के कारण पीछे रह जाते हैं। जबकि शहर के बच्चों को बेहतर सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण मिलने के कारण उनका मानसिक एवं सामाजिक विकास स्वाभाविक रूप से अधिक होता है।

122. कथन (A) : एक बच्चे के शारीरिक विकास की दिशा पूरी तरह से उसके जन्म के समय निश्चित हो जाती है।
तर्क (R) : केवल अनुवंशिकता ही ऐसा एकमात्र कारक है जो बच्चों के विकास के लिए उत्तरदायी है।
सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।

(b) (A) और (R) दोनों सही है लेकिन (A) की (R) सही व्याख्या नहीं करता है।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 27/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : एक बच्चे के शारीरिक विकास की दिशा पूरी तरह से उसके जन्म के समय निश्चित हो जाती है। यह कथन गलत है क्योंकि बच्चे का शारीरिक विकास जन्म के बाद उसके रहन-सहन, भोजन, उचित स्वास्थ्य आदि कारकों द्वारा निर्धारित होता है। एक बच्चें के विकास में आनुवांशिकता तथा वातावरण दोनों ही ऐसे कारक हैं जो बच्चों के विकास के लिए उत्तरदायी है अतः यह तर्क पूर्णतः गलत है कि केवल अनुवांशिकता ही ऐसा एकमात्र कारक है जो बच्चों के विकास के लिए उत्तरदायी है।

123. बच्चों के विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

(i) बच्चों का संज्ञानात्मक व सामाजिक विकास केवल उसके वातारण पर निर्भर करता है।

(ii) केवल अनुवांशिक कारक ही बच्चे के विकास को निर्धारित करते हैं।

(iii) बच्चे के विकास में अनुवांशिकता व वातावरण एक दूसरे से परस्पर अंतःक्रिया करते हैं।

(iv) बच्चे के विकास के विभिन्न आयामों मे अनुवांशिकता व वातारण का अलग-अलग प्रभाव पड़ता है।

(a) (ii), (iv) (b) (ii)

(c) (iii), (iv) (d) (i), (iv)

CTET (VI-VIII) 04/02/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : बच्चों के विकास में आनुवांशिकता एवं वातावरण परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। यह दोनों एक दूसरे से इस प्रकार से जुड़े हुए होते हैं कि इन्हें पृथक नहीं किया जा सकता है। यह दोनों बाल विकास को गहरे स्तर पर प्रभावित करते हैं। बालक के संपूर्ण व्यवहार की सृष्टि अनुवांशिकता तथा वातावरण के अंतः क्रिया द्वारा होती है। आनुवांशिकता द्वारा जहाँ बच्चे का रंग-रूप, लंबाई-चौड़ाई गुणसूत्र, डी.एन.ए. तथा शारीरिक लक्षण आदि निर्धारित होते हैं वहीं पर वातावरण द्वारा माता के गर्भ में पल रहा शिशु प्रभावित होता है। वायु, धूप तथा स्वच्छता वातावरण के तीन मुख्य तत्व हैं जो कि शारीरिक विकास को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूप से प्रभावित करता है। अतः बालक के विकास के विभिन्न आयामों में आनुवांशिकता व वातावरण का अलग-अलग प्रभाव पड़ता है।
इस प्रकार (iii) तथा (iv) सही है।

124. एक बच्चे की वृद्धि और विकास निम्नलिखित में से कौन-से कारकों द्वारा प्रभावित होता है?

(i) परवरिश की शैलियाँ

(ii) आनुवंशिक ढाँचा/संरचना

(iii) विद्यालयी अनुभव

(iv) व्यक्तिगत रुचि

(a) (ii), (iii) (b) (i), (ii)

(c) (i), (iii), (iv) (d) (i), (ii), (iii), (iv)

CTET (VI-VIII) 06/02/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : वृद्धि और विकास आनुवांशिकता या अनुवांशिक संघटन और पर्यावरणीय कारकों, सभी अन्योन्याश्रितों के बीच एक जटिल संतुलन द्वारा विनियमित होते हैं। आनुवांशिकता वृद्धि और विकास की सीमा को निर्धारित करती है, जो संभव है लेकिन पर्यावरण उस स्थिति को निर्धारित करता है जिससे क्षमता हासिल की जाती है। अतः एक बच्चे की वृद्धि और विकास निम्न कारकों द्वारा की प्रभावित होता है–

- परवरिश की शैलियाँ
- आनुवंशिक ढाँचा संरचना
- विद्यालयी अनुभव
- व्यक्तिगत रूचि

125. बच्चों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सामाजिक संरचनावादी परिप्रेक्ष्य से सही है?

(a) बच्चों के व्यवहार की अनुभवों के वजह से छोटे, वृद्धि से संबंधित परिवर्तनों के रूप में व्याख्या की जा सकती है।

(b) बच्चों का व्यवहार पूरी तरह से जीवन के आरंभिक अनुभवों के द्वारा सुनिश्चित किया जाता है।

(c) बच्चें 'उत्कृष्ट असभ्य' प्राणी के रूप में जन्म लेते हैं और समाज द्वारा दुराचारी बना दिए जाते हैं।

(d) बच्चे क्रियाशील प्राणी हैं जो अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भो में काम व अंतः क्रिया करके ज्ञान का सृजन करते हैं।

CTET (VI-VIII) 28/12/2021

Ans. (d) : बच्चों के बारे में सामाजिक-संरचनावादी परिप्रेक्ष्य यह प्रतिपादित करता है कि बच्चे क्रियाशील प्राणी है जो अपने सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों में काम व अंतःक्रिया करके ज्ञान का सृजन करते हैं। समाज से प्राप्त होने वाला यह ज्ञान जो संस्कृति और संदर्भ को महत्व देता है सामाजिक संरचनावाद कहलाता है। सामाजिक संरचनावाद की धारणा है कि सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है न तो यह अकेले में हो सकती है और न ही समाज के साथ निष्क्रिय व्यवहार करने से सीखना संभव होगा। सीखने के लिए वाह्य प्रेरणा की आवश्यकता होती है। अर्थपूर्ण सीखने के लिए अधिगमकर्ता को सामाजिक क्रियाओं में व्यस्त रहना आवश्यक है।

126. अभिकथन (A) : सही पोषण, पर्याप्त नींद और शारीरिक गतिविधि बच्चों की सामाजिक अन्तः क्रियाओं में संलग्न होने की योग्यता को समुन्नत करती है जो परिणामस्वरूप संज्ञानात्मक वृद्धि को उद्दीप्त करती है।
कारण (R): विकास के सभी पहलू अन्तः संबंधित होते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।
सही विकल्प चुनें –

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R),(A) की सही व्याख्या करता है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R),(A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 27/12/2021

Ans. (a) : सही पोषण, पर्याप्त नींद और शारीरिक गतिविधि बच्चों की सामाजिक अन्तःक्रियाओं में संलग्न होने की योग्यता को समुन्नत करती हैं जो परिणामस्वरूप संज्ञानात्मक वृद्धि को उद्दीप्त करती है क्योंकि विकास और सीखना गतिशील प्रकियाएँ हैं जो एक बच्चे की जैविक विशेषताओं और पर्यावरण के बीच जटिल परस्पर क्रिया को दर्शाती हैं। इस प्रकार विकास के सभी पहलू अंतःसम्बन्धित होते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अतः एक बच्चे की जैविक विशेषताओं और पर्यावरण के बीच जटिल परस्पर क्रिया को दर्शाती हैं। इस प्रकार विकास के सभी पहलू अंतःसम्बन्धित होते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अतः (A) और (R) दोनों कथन सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।

127. जब से सुनीता ने चलना शुरू किया था, वह जब भी संगीत सुनती थी, नृत्य करना शुरू कर देती हैं। जब वह नृत्य करती है, उसके माता-पिता ताली बजाते हैं और टी.वी कार्यक्रम में नृत्य कर रहे बच्चों की नकल करने के लिए कहते हैं। सुनीता ने बहुत जल्दी ही नृत्य अच्छी तरह से करना सीख लिया है।
यह उदाहरण विकास के किस सिद्धान्त को दर्शाता है?

(a) विकास आनुवंशिकता और परिवेश के बीच अन्तः क्रिया का परिणाम है।

(b) विकास अनिरन्तर प्रक्रिया है।

(c) विकास पूर्ण रूप से अप्रत्याशित है।

(d) विकास पूर्ण रूप से आनुवांशिकता निर्धारित है।

CTET (VI-VIII) 27/12/2021

Ans. (a) : जब से सुनीता ने चलना शुरू किया था, वह जब भी संगीत सुनती थी, नृत्य करना शुरू कर देती थी। जब वह नृत्य करती है, उसके माता-पिता ताली बजाते हैं और टी.वी कार्यक्रम में नृत्य कर रहे बच्चों की नकल करने के लिए कहते हैं। सुनीता ने बहुत जल्दी ही नृत्य अच्छी तरह से करना सीख लिया है। यह उदाहरण दर्शाता है कि ''विकास आनुवांशिकता और परिवेश के बीच अन्तःक्रिया का परिणाम है क्योंकि बालक के रंग-रूप, आकार, शारीरिक गठन, ऊँचाई इत्यादि के निर्धारण में आनुवांशिकता का महत्वपूर्ण योगदान है तथा वातावरण में वे समस्त बाह्य तत्व आते हैं। जिन्होंने जीवन प्रारंभ होने के समय से ही व्यक्ति को प्रभावित किया है। अतः विद्यार्थी का विकास ''वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों पर निर्भर करता है क्योंकि वंशानुक्रम और वातावरण वे तत्व हैं जो किसी व्यक्ति के विकास को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

128. बच्चों में संज्ञानात्मक विकास किसका परिणाम है?

(a) केवल आनुवंशिकता का

(b) केवल वातावरण का

(c) आनुवंशिकता और वातावरण की पारस्परिक क्रिया का।

(d) केवल आर्थिक कारकों का।

CTET (VI-VIII) 24/12/2021

Ans. (c) : बच्चों में संज्ञानात्मक विकास आनुवंशिकता और वातावरण की पारस्परिक क्रिया का परिणाम है। आनुवंशिकता और वातावरण में पारस्परिक निर्भरता है। ये एक दूसरे के पूरक और सहयोगी है। बच्चों को जो मूल प्रवृत्तियाँ आनुवंशिकता से प्राप्त होती है, उनका विकास वातावरण में होता है। जैसे-बालक में यदि बौद्धिक शक्ति नहीं है तो उत्तम वातावरण भी उसका मानसिक विकास नहीं कर सकता। इसी प्रकार बौद्धिक शक्ति वाला बालक प्रतिकूल वातावरण में अपना मानसिक विकास नहीं कर सकता है। अतः बच्चों के सम्पूर्ण व्यवहार की सृष्टि आनुवंशिकता और वातावरण की अन्तःक्रिया द्वारा होती है अर्थात् बालक के विकास के लिए दोनों का समान महत्व है।

129. पालन पोषण की प्राधिकारिक शैली किस पर आधारित है?

(a) बच्चे के बारे में खुद निर्णय लेना।

(b) बच्चे के पक्ष को न सुनना।

(c) बच्चे से अविवेकपूर्ण माँग करना।

(d) जब संभव हो तब बच्चे के साथ साझेदारी में निर्णय लेना।

CTET (VI-VIII) 20/12/2022

Ans. (d) : पालन-पोषण की प्राधिकारिक शैली, जब संभव हो तब बच्चे के साथ साझेदारी में निर्णय लेने पर आधारित है। बच्चे का पालन-पोषण बचपन से वयस्कता तक बच्चे के शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है और उसका समर्थन करता है। पालन-पोषण एक बच्चे को पालने की पेचीदगियों को संदर्भित करता है न कि केवल एक जैविक संबंध के लिए। पालन पोषण के दौरान बच्चों के साथ साझेदारी करने से उनका विकास सकारात्मक रूप से सम्पन्न होगा। इसमें बच्चों के पक्ष को सुनना, बच्चों के बारे में खुद निर्णय लेना एवं बच्चे से विवेकपूर्ण मांग करने पर बल दिया जाता है।

130. विकासात्मक सिद्धांतवादी मानते हैं कि विकास की प्रक्रिया जीवन भर चलती होती है। इस संदर्भ में से किसकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है?

(a) अनुवांशिकता (b) वातावरण एवं अनुभव
(c) विशिष्ट प्रभावक्षेत्रीय बुद्धि (d) प्रतीकात्मक बुद्धि

CTET (VI-VIII) 20/12/2022

Ans. (b) : विकासात्मक सिद्धान्तवादी मानते है कि विकास की प्रक्रिया जीवन भर चलती होती है। इस संदर्भ मे वातावरण एवं अनुभव की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। वातावरण व्यक्ति को प्रभावित करने वाला तत्व है इसमें वाह्य तत्व आते हैं। यह किसी एक तत्व का नही अपितु एक समूह तत्व का नाम है। वातावरण व्यक्ति को उसके विकास में वाछिंत सहायता प्रदान करता है। जिन बच्चों को अच्छी देख-रेख और पोषण दिया जाता है उनके संज्ञानात्मक, भाषा, भावात्मक और सामाजिक कौशल बेहतर होने की, स्वस्थ्य बड़े होने की ओर आत्म विश्वास से पूर्ण होने की संभावना अधिक होती है। व्यक्ति के हित के लिए यह सभी चीजें जरूरी है क्योंकि प्रारंभिक बचपन के अनुभव ही हमारे भविष्य को बनाते हैं।

131. अभिकथन (a) : आर्थिक रूप से कमजोर आय वाले परिवारों के बच्चों का बचपन उच्च आय वाले परिवारों के बच्चों की तुलना में बहुत अलग होता है।
कारण (R) : अलग-अलग संस्कृतियों में बच्चों द्वारा बचपन का काल अलग-अलग अनुभव किया जाता है।
सही विकल्प चुनें।

(a) (a) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (a) की।
(b) (a) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (a) की।
(c) (a) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (a) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 04/01/2022

Ans. (a) : आर्थिक रूप से कमजोर आय वाले परिवारों के बच्चों का बचपन उच्च आय वाले परिवारों के बच्चों की तुलना में बहुत अलग होता है क्योंकि अलग-अलग संस्कृतियों में बच्चों द्वारा बचपन का काल अलग-अलग अनुभव किया जाता है। इसलिए शिक्षा क्षेत्र में विद्यार्थियों की विविध प्रकार की भिन्नताओं को ध्यान में रखकर, शिक्षा के समावेशन को प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा सभी के लिए न्यायोचित शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। सांस्कृतिक विविधता एक ऐसा सिद्धान्त है जो विभिन्न मानव समूहों के बीच सांस्कृतिक अंतरों को पहचानता है और उन्हें वैध करता है अर्थात् यह समाज में विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों को एक साथ जोड़ रही है। अतः (a) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (a) की।

132. वातावरण व आनुवांशिक कारकों की परस्पर क्रिया किसके लिए ज़िम्मेदार है?

(a) केवल शारीरिक विकास
(b) केवल संज्ञानात्मक विकास
(c) शारीरिक व संज्ञानात्मक विकास
(d) शारीरिक, सामाजिक व संज्ञानात्मक विकास

CTET (VI-VIII) 11/01/2022

Ans. (d) : वातावरण व आनुवांशिक कारकों की परस्पर क्रिया शारीरिक, सामाजिक व संज्ञानात्मक विकास के लिए जिम्मेदार है। बालक का विकास आनुवांशिकता एवं वातावरण की परस्पर अन्तःक्रिया का परिणाम होता है। वे एक-दूसरे के पूरक, सहायक और सहयोगी है। बालक को जो मूलप्रवृत्तियाँ वंशानुक्रम से प्राप्त होती है इनका विकास वातावरण में होता है। अच्छे वंशानुक्रम के अभाव में अच्छा वातावरण निष्फल हो सकता है तथा अच्छे वंशानुक्रम के बावजूद दूषित वातावरण बालक को कुपोषण या गंभीर रोगों का शिकार बना सकता है अथवा उसकी जन्मजात योग्यताओं को कुंठित कर सकता है।

133. कथन (A) : बच्चों के विकास के मार्ग व प्रगति का सटीकता से पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता।
तर्क (R) : आनुवंशिकता व पर्यावरणीय कारकों के अनूठा संयोजन बच्चों में अलग-अलग बदलाव का मार्ग तय करते हैं।
सही विकल्प चुनें

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 12/01/2022

Ans. (a) : बच्चों के विकास के मार्ग व प्रगति की सटीकता से पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता क्योंकि आनुवंशिकता व पर्यावरणीय कारकों के अनूठा संयोजन बच्चों में अलग-अलग बदलाव का मार्ग तय करते हैं। बालक का विकास आनुवंशिकता तथा वातावरण की परस्पर अर्न्तक्रिया का परिणाम होता है। इसलिए बालकों के विकास की गति एवं दिशा भिन्न-भिन्न होती है अर्थात् प्रत्येक बालक अपनी गति एवं अपने ढंग से विभिन्न क्षेत्रों में अपनी वृद्धि व विकास करता है। यही कारण है कि आयु के समान होने पर भी बालक प्रायः परस्पर एक दूसरे से काफी भिन्न होते हैं। अतः (A) और (R) दोनो सही है और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।

134. अनुवांशिकता और सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण के बीच निरंतर और जटिल क्रिया से कौन-सा विकास प्रभावित होता है?

(a) केवल संज्ञानात्मक विकास
(b) केवल सामाजिक विकास
(c) दोनों संज्ञानात्मक तथा सामाजिक विकास
(d) शारीरिक, संज्ञानात्मक तथा सामाजिक विकास

CTET (VI-VIII) 07/01/2022

Ans. (d) : आनुवंशिकता और सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण के बीच निरंतर और जटिल क्रिया से शारीरिक, संज्ञानात्मक तथा सामाजिक विकास प्रभावित होता है, आनुवांशिकता और वातावरण दोनों एक ही सिक्के के पहलू है। व्यक्ति के विकास के लिए दोनों का होना अनिवार्य है यदि दोनों में से किसी की भी कमी होगी तो बालक का विकास सही ढ़ंग से नहीं हो पायेगा इसलिये बालक के विकास के लिए आनुवांशिकता और वातावरण दोनों बालक के शारीरिक, मानसिक सामाजिक, नैतिक आदि विकास को प्रभावित करते है।

135. बच्चों के विकास के संदर्भ में कौन सा कथन सही है?
विकल्प

(a) विकास पूर्ण रूप से अनुवांशिकता से निर्धारित होता है।
(b) विकास पूर्ण रूप से पर्यावरण द्वारा निर्धारित होता है।
(c) विकास में दोनों अनुवांशिकता व पर्यावरण की अन्योन्य क्रियात्मक भूमिका है।
(d) तीन चौथाई लक्षण जन्मजात होते है तथा बाकि पर्यावरण द्वारा निर्धारित होते हैं।

CTET (VI-VIII) 08/01/2022

Ans. (c) : बच्चों के विकास के सन्दर्भ में यह कथन सही है कि विकास में अनुवांशिकता और पर्यावरण दोनों की अन्योन्य क्रियात्मक भूमिका है। केवल वंशानुक्रम या केवल वातावरण के कारण बालक के विकास की दिशा व गति को निर्धारित नहीं करते हैं वरन् इन दोनों की अन्तः क्रिया के द्वारा विकास की दिशा व गति का नियंत्रण होता है। वास्तव में, आनुवांशिकता उन सीमाओं को निर्धारित करता है जिससे आगे बालक का विकास करना संभव नहीं होता है जबकि वातावरण उन सीमाओं के बीच विकास के अवसर व संभावनाओं को निर्धारित करता है। अच्छे 'आनुवांशिकता के अभाव में अच्छा वातावरण निष्फल हो सकता है।

136. बाल विकास के समकालीन परिप्रेक्ष्य :

(a) बच्चे को एक जैविक प्रवर्ग के रूप में देखते हैं।
(b) बच्चे को एक दैहिक सत्व के रूप में देखते हैं।
(c) बाल्यावस्था को विशिष्ट चरणों में विभाजित मानते हैं।
(d) बाल्यावस्था को एक विशिष्ट सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना मानते हैं।

CTET (VI-VIII) 06/01/2022

Ans. (d) : बाल विकास के समकालीन परिप्रेक्ष्य बाल्यावस्था को एक विशिष्ट सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना मानते हैं। बाल्यावस्था में विशिष्ट सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना की भूमिका विशेष महत्व रखती है। सांस्कृतिक और समाजिकता में गहरा सम्बन्ध है। सांस्कृतिक के किसी तल में किसी प्रकार का परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव समाजिकता पर निश्चित रूप से पड़ता है। बाल्यावस्था में बालकों के ऊपर सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना का प्रभाव दिखने लगता है। बाल्यावस्था (6-12) वर्ष तक मानी जाती है।

1.(iv) सामाजिकीकरण दबाव : सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, अभिभावक और मित्रगण)

137. 'निकटस्थ विकास का क्षेत्र' क्या है?

(a) वह प्रक्रिया जिसमें शुरू में विभिन्न समझ वाले दो व्यक्ति समान समझ पर पहुँचते हैं।
(b) वह प्रक्रिया जिसमें बच्चे, समाज के वयस्क सदस्यों द्वारा निर्धारित विधि से कार्य करते हैं।
(c) rs
बच्चों के वर्तमान स्तर पर स्वतंत्र प्रदर्शन और वयस्क व अधिक कौशल वाले समकक्षियों की सहायता से बच्चे द्वारा उपार्जित किए जाने वाले प्रदर्शन के मध्य का क्षेत्र है।
(d) विभिन्न प्रकार के कार्य जो कि अपनी आयु के अनुसार बच्चे को करने चाहिए परन्तु वह नहीं कर सकती है।

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : बच्चों के वर्तमान स्तर पर स्वतंत्र प्रदर्शन और वयस्क व अधिक कौशल वाले समकक्षियों की सहायता से बच्चे द्वारा उपार्जित किये जाने वाले प्रदर्शन के मध्य के क्षेत्र को 'निकटस्थ विकास का क्षेत्र' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, बच्चा जो कर रहा है तथा जो करने की क्षमता रखता है, उसके बीच के क्षेत्र को सम्भावित विकास का क्षेत्र या निकटस्थ विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development) कहा जाता है। इसको निम्न चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है-

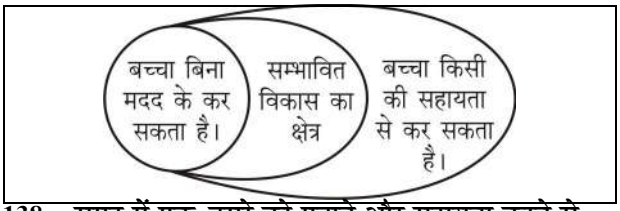

138. समूह में एक-दूसरे को पढ़ाने और सहायता करने से-

(a) बच्चों का ध्यान भंग हो सकता है और यह एक प्रभावशाली शैक्षिक पद्धति नहीं है।
(b) बच्चों में प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, जो कि अधिगम में विघ्न/रुकावट पैदा करती है।
(c) बच्चे स्वयं की चिंतन प्रक्रिया पर आक्षेप कर सकते हैं और संज्ञानात्मक क्रियाकलाप के उच्च स्तर पर पहुँच सकते हैं।
(d) बच्चों में भ्रांति उत्पन्न हो सकती है, जो उनके अधिगम में हस्तक्षेप करती है।

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : समूह में एक-दूसरे को पढ़ाने और सहायता करने से बच्चे स्वयं की चिंतन प्रक्रिया पर आक्षेप कर सकते हैं और संज्ञानात्मक क्रियाकलाप के उच्च स्तर पर पहुँच सकते हैं। जब बच्चे एक-दूसरे से चर्चा-परिचर्चा, संवाद, वाद-विवाद या बातचीत करते हैं तो वे एक-दूसरे के विचारों, भावनाओं, मनोवृत्तियों आदि से परिचित होते हैं, जो उन्हें सोचने, समझने और खोज करने के लिए प्रेरित करता है। इससे उनका अधिगम स्थायी होता है और उनमें रचनात्मकता का विकास होता है।

139. अपनी कक्षा में सहयोगात्मक अधिगम का प्रयोग करते समय एक शिक्षक की भूमिका किस प्रकार की होती है?

(a) कक्षा को छोड़ देना तथा बच्चों को स्वयं कार्य करने देना।
(b) सहयोगात्मक होना तथा प्रत्येक समूह की निगरानी करना।
(c) उस समूह का सहयोग करना जिसमें 'होनहार' एवं प्रतिभाशाली बच्चें हैं।
(d) एक मूक दर्शक होना तथा बच्चे जो करना चाहते हैं, उन्हें करने देना।

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (b) : अपनी कक्षा में सहयोगात्मक अधिगम का प्रयोग करते समय एक शिक्षक को सहयोगात्मक होना चाहिए तथा प्रत्येक समूह की निगरानी करना चाहिए। सहयोगात्मक अधिगम, एक शिक्षण अधिगम विधि है जिसमें अध्यापक और विद्यार्थी दोनों मिलकर एक महत्त्वपूर्ण समस्या का अन्वेषण करते हैं या कोई अर्थपूर्ण प्रोजेक्ट का निर्माण करते हैं। सहयोगत्मक अधिगम में अध्यापक कार्यों को विभिन्न समूहों में बाँट देते हैं और यह समूह के ऊपर निर्भर करता है कि किस तरह से कार्य को मिलजुलकर पूरा करने की योजना बनाते हैं। इसमें अध्यापक का स्वामित्व नहीं होता बल्कि वह सहयोगी के रूप में कार्य करता है।

140. स्कूल बच्चों के समाजीकरण की एक ऐसी संस्था है जहाँ–

(a) प्रमुख स्थान स्कूली बच्चों का होता है
(b) प्रमुख स्थान स्कूल की दिनचर्या का होता है।
(c) प्रमुख स्थान स्कूल की गतिविधियों का होता है
(d) प्रमुख स्थान स्कूल के शिक्षकों का होता है।

CTET (VI-VIII) 09/12/2018

Ans. (a) : स्कूल बच्चों के समाजीकरण की एक ऐसी संस्था है जहाँ प्रमुख स्थान स्कूली बच्चों का होता है, अर्थात् स्कूल की सम्पूर्ण गतिविधियाँ, कार्यक्रम, शिक्षक तथा पाठ्यचर्या स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास के लिए प्रतिबद्ध होती हैं। इसलिए प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों को शिक्षा का केन्द्र–बिन्दु माना गया है।

141. विद्यालय और समाजीकरण के बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

(a) विद्यालय समाजीकरण का पहला मुख्य कारक है।
(b) विद्यालय समाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण कारक है।
(c) समाजीकरण में विद्यालय की कोई भूमिका नहीं होती।
(d) समाजीकरण में विद्यालय की बहुत थोड़ी भूमिका होती है।

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (b) विद्यालय सामाजीकरण का एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि बालक जब विद्यालय जाना प्रारम्भ करता है तो वहाँ वह सामाजिक कार्यों में भाग लेना, नये मित्र बनाना आदि सीखता है। धीरे-धीरे वह किसी न किसी टोली का सदस्य बन जाता है जो बालक में अनेक सामाजिक गुणों का विकास करती है।

142. एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मानव शिशु समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिए आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारंभ करता है।

(a) समाजीकरण (b) विकास
(c) सीखना (d) परिपक्वता

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (a) समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव शिशु समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिए आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारम्भ करता है।

143. समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है:

(a) मूल्यों और विश्वासों का अर्जन।
(b) आनुवंशिक संचरण।
(c) एक संस्कृति की रीतियों और मानदंडों को सीखना
(d) कौशलों का अर्जन

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (b) समाजीकरण की प्रक्रिया का तात्पर्य समाज के वे सभी व्यवहार जिससे व्यक्ति आत्मसात कर लेता है जैसे-

- संस्कृतियों की रीतियों एवं मानदंडों को सीखना
- कौशलों का अर्जन करना
- मूल्यों और विश्वासों का अर्जन करना

आनुवांशिक संचरण, जन्म से ही माता-पिता द्वारा अपनी संतान में योग्यता, गुणों आदि का स्थानान्तरण है। यह बाह्य नहीं बल्कि आन्तरिक ही होता है।

144.आप एक शिक्षिका/शिक्षक के रूप में 'रैगिंग और धमकाने' के सख्त विरोधी हैं तथा इस संदर्भ में विद्यालय में पोस्टर लगवाते हैं तथा समिति बनवाते हैं। आपसे जुड़ने वाले किशोर जो इस विचार के दृढ़ विश्वासी हैं, निम्नलिखित में से किस स्तर पर होंगे?

(a) पारंपरिक स्तर
(b) पूर्व-पारंपरिक स्तर
(c) उत्तर-पारंपरिक स्तर
(d) सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने वाला स्तर

CTET (VI-VIII) 21/09/2014

Ans. (c) जो किशोर रैगिंग और धमकाने के सख्त विरोधी तथा किसी भी छात्रों के खिलाफ हुए उत्पीड़न के विरूद्ध होते हैं वे किशोर उत्तर-पारंपरिक स्तर पर होते है।

145..... कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते हैं।

(a) पारम्परिक (b) रचनात्मक (Constructive)
(c) अध्यापक-केन्द्रित (d) सामाजिक-रचनात्मक

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (d) सामाजिक- रचनात्मक कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते है।

146.अंतरपरक अनुदेशन है –

(a) कक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए कुछ अलग करना।
(b) अव्यवस्थित अथवा स्वच्छंद शिक्षार्थी गतिविधियाँ।
(c) ऐसे समूहों का प्रयोग जो कभी नहीं बदलते।
(d) शिक्षार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना।

CTET (VI-VIII) 28/07/2013

Ans. (d) शिक्षार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने के समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना, अंतरपरक अनुदेशन है।

147.सी.बी.एस.ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों के स्थान पर सामूहिक गतिविधियों की संस्तुति करती है। ऐसा करने के पीछे विचार हो सकता है –

(a) प्रत्येक शिक्षार्थी के स्थान पर समूह में अवलोकन द्वारा शिक्षक के कार्य को सरल बनाने के लिए
(b) विद्यालयों के पास उपलब्ध समय को प्रासंगिक बनाना जबकि उनमें से अधिकांश के पास व्यक्तिगत गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं होता।
(c) गतिविधि की ढाँचागत लागत को कम करना।
(d) व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो संपूर्ण अधिगम पर सामान्यीकृत हो सकती है।

CTET (VI-VIII) 28/07/2013

Ans.(d) सी.बी.एस.ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों के स्थान पर सामूहिक गतिविधियों की संस्ततुति करती है ऐसा करने के पीछे जो विचार है वह यह कि व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक सवेंगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो संपूर्ण अधिगम पर सामान्यीकृत हो सकती है।

148.एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को –

(a) स्थिर और एकरूप वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए
(b) इस तथ्य को अनदेखा करना चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ अन्य बच्चों के समान व्यवहार करना चाहिए
(c) इस प्रकार के बच्चे के साथ भिन्न प्रकार से व्यवहार करना चाहिए
(d) ऐसे बच्चे को कम गृह कार्य देना चाहिए

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (b) एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को इस तथ्य को अनदेखा करना चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि एकल अभिभावक का उनकी योग्यता, क्षमता या बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

149.मिश्रित आयु-वर्ग के विद्यार्थियों की कक्षा से व्यवहार रखने वाले शिक्षक के लिए ..... का ज्ञान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

(a) उनके अभिभावकों का व्यवसाय
(b) सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि
(c) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
(d) विकासात्मक अवस्थाओं

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (d) मिश्रित आयु वर्ग वाले विद्यार्थियों की कक्षा से व्यवहार रखने वाले शिक्षक के लिए विकासात्मक अवस्थाओं का ज्ञान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

150.एक विद्यार्थी कहता है, ''उसका दादा आया है''। एक शिक्षक होने के नाते आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

(a) 'दादा आया है' की जगह पर 'दादाजी आए हैं' कहना चाहिए
(b) आप अपनी भाषा पर ध्यान दीजिए।
(c) अच्छा, आपके दादाजी आए हैं।
(d) बच्चे, आप सही वाक्य नहीं बोल रहे।

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (c) बच्चे अनुकरण द्वारा सीखते हैं। वे शिक्षक के सही-गलत सभी तरीकों का अनुकरण करते हैं। शिक्षक होने के कारण अभिभावकों के प्रति सम्माननीय शब्दावली का प्रयोग करना आपका एक उत्तरदायित्व है। अतः आप कहेंगे 'अच्छा, आपके दादाजी आये हैं।'

151.सीखने के सिद्धान्तों के संदर्भ में 'स्कैफोल्डिंग'.....की ओर संकेत करता है।

(a) सीखने में वयस्कों द्वारा अस्थायी सहयोग
(b) विद्यार्थियों द्वारा की गई गलतियों के कारणों का पता लगाना
(c) अनुरूपित शिक्षण
(d) पूर्व अधिगम की पुनरावृत्ति

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (a) स्कैफोल्डिंग का अर्थ है 'मचाना बनाना'। यह नए ज्ञान के साथ बच्चों के पास पहले से मौजूद ज्ञान पर निर्मित होता है जिससे वयस्क बच्चे को सीखने में सहयोग मिलता है।

152.सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रस्तावित समूह-परियोजना गतिविधि ..... का एक सशक्त साधन है।

(a) रोजमर्रा के शिक्षण से होने वाले तनाव को दूर करने
(b) अनेकता में एकता की संकल्पना का प्रचार-प्रसार करने
(c) सामाजिक भागीदारिता को सुगम बनाने
(d) शिक्षकों के भार को हल्का करने

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (c) सी. बी. एस. ई. द्वारा प्रस्तावित समूह-परियोजना गतिविधि सामाजिक भागीदारिता को सुगम बनाने का एक सशक्त साधन है।

153.शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त, ये ..... में भी सहायता करती हैं।

(a) दुश्चिंता (b) समाजीकरण
(c) मूल्य द्वन्द्व (d) आक्रामकता

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (b) विभिन्न कक्षा के विद्यार्थियों को एक साथ गतिविधियों में शामिल करना उनके सीखने को सुगम बनाता है एवं ये समाजीकरण में भी सहायता करती है।

154.एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे – समूह-चर्चा, समूह-परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि। यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है?

(a) सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम
(b) मनोरंजन द्वारा अधिगम
(c) भाषा-निर्देशित अधिगम
(d) प्रतियोगिता-आधारित अधिगम

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (a) शिक्षिका द्वारा शिक्षार्थियों से समूह-चर्चा, समूह-परियोजना, भूमिका निर्वाह आदि करवाना सीखने के 'सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम' को उजागर करता है।

155.जब एक शिक्षिका दृष्टिबाधित शिक्षार्थी को कक्षा के अन्य शिक्षार्थियों के साथ सामूहिक गतिविधियों में शामिल करती है, तो वह –

(a) कक्षा के लिए सीखने हेतु बाधाएँ उत्पन्न कर रही है
(b) समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही है
(c) सभी शिक्षार्थियों में दृष्टिबाधित शिक्षार्थी के प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद कर रही है
(d) दृष्टिबाधित शिक्षार्थी पर सम्भवतः तनाव बढ़ा रही है

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (b) जब शिक्षिका द्वारा दृष्टि बाधित विद्यार्थी को अन्य शिक्षार्थियों के साथ शामिल कर गतिविधि कराती है तो वह समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 (NCF-2005) के घोषणा पत्र में समावेशी शिक्षा की संस्तुति की गई थी।

156. निम्नलिखित में से कौन-सा समाजीकरण की प्रक्रिया की विशेषताएँ हैं?

(A) यह एक रेखीय प्रक्रिया है।
(B) यह एक जटिल प्रक्रिया है।
(C) यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है।
(D) यह विभिन्न संस्कृतियों में विशिष्ट रूप से होती है।

(a) (a), (b) (b) (b), (c)
(c) (b), (c), (d) (d) (a), (b), (c), (d)

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (c) : समाजीकरण की प्रक्रिया की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

1. यह एक जटिल प्रक्रिया है, बहु-स्तरीय प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न एजेंसियाँ, जैसे कि परिवार, स्कूल, समूह और मीडिया शामिल होते हैं।
2. यह बहुआयामी प्रक्रिया हैं व्यक्ति के सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, और नैतिक विकास को प्रभावित करता है।
3. यह विभिन्न संस्कृतियों में विशिष्ट रूप से होती है, विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग मानदंड, मूल्य और रीति-रिवाज होते हैं जो समाजीकरण प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। अतः विकल्प (c) सही है।

157. अभिकथन (A) : किशोरों पर फिल्मों और विज्ञापनों का एक बड़ा प्रभाव पड़ता है व उनके व्यवहार व मूल्य भी उससे प्रभावित होते हैं।
तर्क (R) : मीडिया किशोरों के समाजीकरण की एक शक्तिशाली द्वितीयक संस्था है।
सही विकल्प चुनें :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (A) की (R) सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (a) : किशोरों पर फिल्मों और विज्ञापनों का एक बड़ा प्रभाव पड़ता है व उनके व्यवहार व मूल्य भी उससे प्रभावित होते हैं। फिल्मों और विज्ञापन लैंगिक भूमिकाओं को अत्यधिक प्रभावित करते हैं क्योंकि जब कोई लड़की या लड़का किसी को अपने आदर्श के रूप में पसंद करते हैं, तो वे अपनी शैली को अनुकूलित करने का प्रयास करते हैं जिसे वे फिल्मों, विज्ञापनों और समाचारों में देखते हैं और उनका अनुसरण करके अपनी जीवन शैली को ढ़ालते हैं। मीडिया किशोरों के समाजीकरण की एक शक्तिशाली द्वितीयक संस्था हैं। अतः (A) और (R) दोनों सही है और (A) की (R) सही व्याख्या करता हैं।

158. अभिकथन (A) : कुछ संस्कृतियों में पहले मासिक धर्म का आना उत्साह के साथ मनाया जाता है जबकि अन्य संस्कृतियों में इसे गुप्त रखा जाता है।
तर्क (R) : बच्चों के लिए बचपन के अनुभव उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर अलग तरह से होते हैं।
सही विकल्प चुनें :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (A) की (R) सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (a) : संस्कृति स्थान, समय, समुदाय और जाति के अनुसार भिन्न होती है और यह प्राकृतिक है। यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर, परिस्थितियों, भाषा, परंपराओं आदि से भिन्न हो सकती है। बाल्यावस्था (बचपन) वह आयु है जिसमें बच्चे संस्कृतियों के बीच के अंतर का अनुभव करते हैं, और यह भी प्राप्त करते हैं कि विभिन्न संस्कृतियाँ उनके जीवन को एक दूसरे से अलग कैसे बनाती हैं। इस प्रकार इन सभी संदर्भों से, हम यह विचार कर सकते हैं कि बाल्यावस्था वह आयु है जिस पर लड़कियों का मासिक धर्म शुरू होता है, और लोगों, समुदाय और क्षेत्रों में अलग-अलग संस्कृतियाँ होती हैं, इसलिए यह संभव है कि बाल्यावस्था में जब एक लड़की को मासिक धर्म होता है तो इसे समाज की संस्कृति के अनुसार जश्न के रूप में मनाया जा सकता है या नहीं भी मनाया जा सकता है। अतः (A) और (R) दोनों सही है और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।

159. वह प्रक्रिया जिसमें एक बच्ची अपने माता-पिता, समकक्षी व अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से अंतः क्रिया करके सामाजिक कौशल, विचार व मूल्य सीखती है _____ कहलाती है।
(a) पाड़ (b) सामाजीकरण
(c) अधिसंज्ञान (d) एकीकरण

CTET (VI-VIII) 09/01/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : वह प्रक्रिया जिसमें एक बच्ची अपने माता-पिता, समकक्षी व अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से अन्तःक्रिया करके सामाजिक कौशल, विचार व मूल्य सीखती है समाजीकरण कहलाती है। समाजीकरण लोगों को इसके मानदंडों और अपेक्षाओं को सिखाकर एक सामाजिक समूह में भाग लेने के लिए तैयार करता है। समाजीकरण के तीन प्राथमिक लक्ष्य हैं : आवेग नियंत्रण सीखना, विवेक विकसित करना, लोगों को कुछ सामाजिक भूमिकाएँ निभाने के लिए तैयार करना और अर्थ व मूल्य के साझा स्त्रोतों की खेती करना। इसके द्वारा व्यक्ति समाज में, संस्कृति, आदर्श, मूल्य और परम्परा के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है। चलना, बोलना, खाना, कपड़ा पहनना, पढ़ना लिखना आदि क्रियाएँ व्यक्ति समाज में सीखता है।

160. विकास का कौन सा पहलू समाज के कौशल, मूल्य व रवैया के अधिग्रहण व अतंर्वैयक्तिक रिश्ते बनाने से संबंधित हैं?
(a) संज्ञानात्मक विकास (b) सामाजिक विकास
(c) संवेगात्मक विकास (d) शारीरिक विकास

CTET (VI-VIII) 09/01/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वह सामाजिक परम्पराओं और रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करता है तथा अन्य लोगों से सहयोग करना सीखता है। सामाजिक विकास समाज के कौशल, मूल्य व खैया के अधिग्रहण व अतंवैयक्तिक रिश्ते बनाने से सम्बन्धित होता है। दूसरे शब्दों में सामाजिक विकास का अर्थ है - बालक का समाजीकरण करना। समाज में रहकर ही वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और अपनी जन्मजात शक्तियों और प्रवृत्तियों का विकास करता है। उसकी समस्त शक्तियों का विकास तथा आचरण - व्यवहार का परिमार्जन और सामाजिक गुणों का विकास सामाजिक वातावरण में ही सम्भव होता है।

161. बच्चे समाज में अपनी भूमिका को किन प्रक्रियाओं द्वारा सीखते हैं ?
(a) सामाजीकरण व उत्संस्करण।
(b) समावेशन व समायोजन।
(c) अनुकूलन व समायोजन।
(d) अनुकूलन व उत्संस्करण।

CTET (VI-VIII) 10/01/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : बालक समाज में अपनी भूमिका को सामाजीकरण व उत्संस्करण प्रक्रियाओं द्वारा सीखते हैं। सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीति-रिवाज, गतिविधियाँ इत्यादि सीखता है।
मनुष्य विभिन्न प्राकृतिक परिवेशों तथा सामाजिक स्थानों जैसे कि गाँवों, कस्बों तथा शहरों में भी रहते हैं। विभिन्न वातावरणों में, प्राकृतिक तथा सामाजिक स्थितियों का सामना करने के लिए, व्यक्ति विभिन्न नीतियाँ अपनाते हैं। इससे जीवन जीने के विभिन्न तरीकों या संस्कृतियों का विकास होता है।

162. वह प्रक्रिया जिसमें युवा पीढ़ी रोज़मर्रा की अंतःक्रिया से सामाजिक प्रक्रियाओं को सीखती है, क्या कहलाती है?

(a) सृजनता (b) संवर्धन
(c) समाजीकरण (d) स्थगित अनुकरण

CTET (VI-VIII) 13/01/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : समाजीकरण, वह प्रक्रिया है जिसमें युवा पीढ़ी रोजमर्रा की अंतःक्रिया से सामाजिक प्रक्रियाओं को सीखती है। समाजीकरण बच्चों को सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक कौशल प्रदान करता है जिससे वे समाज में सफलतापूर्वक कार्य कर पाने में सक्षम होते हैं। यह कौशल समाज की संस्कृति पर निर्भर करता है।

163. माध्यमिक स्कूल में परिवार व समकक्षियों की बच्चों के विकास में क्या भूमिका है?

(a) दोनों की कोई भूमिका नहीं है।
(b) परिवार की कोई भूमिका नहीं है, समकक्षियों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
(c) समकक्षियों की कोई भूमिका नहीं है, परिवार की प्रमुख भूमिका।
(d) दोनों की अलग-अलग परन्तु महत्वपूर्ण भूमिका है।

CTET (VI-VIII) 24/01/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : माध्यमिक स्कूल में परिवार व समकक्षियों की बच्चों के विकास में अलग-अलग परन्तु महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि परिवार में बालकों को नैतिकता व सामाजिकता का प्रशिक्षण मिलता है। जिससे कि उनमें उत्तम आदतों व चरित्र का विकास होता है तथा समकक्षियों के द्वारा बच्चों में सहयोग की भावना का विकास होता है। जिससे कि वे साहसिक कार्यों में भागीदारी लेने लगते हैं।

164. मध्य बाल्यावस्था के दौरान, _____, जोकि समाजीकरण का प्राथमिक कारक है, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखता है, लेकिन _____, जोकि समाजीकरण के द्वितीयक कारक है, भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

(a) परिवार; साथी और मीडिया
(b) साथी; परिवार और विद्यालय
(c) मीडिया; परिवार और विद्यालय
(d) विद्यालय; साथी और मीडिया

CTET (VI-VIII) 27/01/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : मध्य बाल्यावस्था के दौरान, परिवार जो कि समाजीकरण का प्राथमिक कारक है, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखता है, लेकिन साथी और मीडिया जो कि समाजीकरण के द्वितीयक कारक है, भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

165. स्कूल की बच्चों के सामाजीकरण में क्या भूमिका हैं?

(a) कोई भूमिका नहीं है।
(b) प्राथमिक सामाजीकरण की संस्था है।
(c) द्वितीयक सामाजीकरण की संस्था है।
(d) तृतीयक सामाजीकरण की संस्था है।

CTET (VI-VIII) 28/01/2023 (Shift-II)

Ans. (c) : विद्यालय शिक्षा का महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ तथा सक्रिय साधन है। बालक के सामाजीकरण में विद्यालय/स्कूल द्वितीयक संस्था के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जॉन डीवी के अनुसार, ''विद्यालय ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ जीवन के गुणों तथा विशिष्ट क्रियाओं और व्यवसायों की शिक्षा बालक के अन्तर्निहित मानसिक विकास के लिए दी जाती है।'' द्वितीयक समाजीकरण तब होता है जब शिशु बाल्यावस्था से आगे बढ़ जाता है और परिपक्वता प्राप्त कर रहा होता है। यह विद्यालय, सहकर्मी समूहों, मीडिया, धार्मिक संस्थानों आदि जैसे संस्थाओं के माध्यम से शुरू होता है।

166. माध्यमिक स्कूल में, बच्चों के सामाजीकरण में परिवार की भूमिका:

(a) अनावश्यक हो जाती है।
(b) आरंभिक बचपन की तुलना में कम हो जाती है।
(c) आरंभिक बचपन की तुलना में बढ़ जाती है।
(d) आरंभिक बचपन के जितनी ही रहती है।

CTET (VI-VIII) 02/02/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : माध्यमिक स्कूल में, बच्चों के सामाजीकरण में परिवार की भूमिका आरंभिक बचपन की तुलना में कम हो जाती है।
परिवार, बच्चों के सामाजीकरण में प्राथमिक भूमिका निभाता हैं बच्चा सर्वप्रथम परिवार के ही सम्पर्क में आता है इसलिए परिवार बच्चों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करता हैं प्राथमिक सामाजीकरण शैशवावस्था और पूर्व बाल्यावस्था में होता है अतः परिवार सामाजीकरण का प्राथमिक कारक है जबकि माध्यमिक स्कूल के बच्चे बड़े हो जाते हैं और वे विद्यालय, धर्म और मीडिया आदि के भी सम्पर्क में आ जाते हैं इसलिए इस अवस्था में परिवार की भूमिका कम हो जाती है।

167. निम्नलिखित में से कौन-से सामाजीकरण के द्वितीयक कारक है?

(i) विद्यालय
(ii) किताबें
(iii) मीडिया
(iv) माता-पिता

(a) (i), (iv) (b) (i), (ii), (iv)
(c) (i), (iii), (iv) (d) (i), (ii), (iii)

CTET (VI-VIII) 03/02/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : द्वितीयक सामाजीकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो बाद के वर्षों में पड़ोस, विद्यालय और सहकर्मी समूहों जैसे माध्यम से शुरू होता है। यह तब होता है जब बच्चा बाल्यावस्था के चरण से गुजरता है और परिपक्वता में जाता है। विद्यालय, किताबे व मीडिया सामाजीकरण के द्वितीयक कारक हैं जो कि बच्चे को सामाजिक बनाने में भूमिका निभाते हैं इसके साथ ही बच्चों की मूल्यों मानदंडो और परम्पराओं को प्राप्त करने में तथा बातचीत के माध्यम से सामाजिक भूमिकाओं के बारे में आनौपचारिक संकेतों को विकसित करने में मदद करते हैं।

168. किशोरों के समाजीकरण के लिए निम्नलिखित में से कौन सी संस्थाएँ महत्वपूर्ण द्वितीयक संस्थाएँ हैं?

(a) मीडिया, किताबें, धर्म (b) परिवार, किताबें, कानून
(c) कानून, किताबें, परिवार (d) कानून, धर्म, परिवार

CTET (VI-VIII) 04/02/2023 (Shift-II)

Ans. (a) : किशोरों के समाजीकरण के लिए मीडिया, किताबे तथा धर्म महत्वपूर्ण द्वितीयक संस्थाएँ है वहीं परिवार व परिवार के सदस्य बच्चे के समाजीकरण के लिए प्राथमिक संस्था है क्योंकि यह बचपन से ही किसी बच्चे की बुनियादी जरुरतों को पूरा करते हैं।

169. एक सामाजिक रचनावादी कक्षाकक्ष में सीखना/सीखने :

(a) निष्क्रिय रूप से होता है।
(b) का स्वरूप सामाजिक होता है।
(c) पाठ्यपुस्तक केन्द्रित होता है।
(d) परिक्षा केन्द्रित होता है।

CTET (VI-VIII) 06/02/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : एक सामाजिक-रचनावादी कक्षा में रट कर सीखने, याद रखने, याद करने के आधार पर अधिगम और दोहराव की अनुमति नहीं हैं। एक सामाजिक रचानावादी कक्षाकक्ष में सीखना/सीखने का स्वरूप सामाजिक होता है। छात्रों को अपने स्वयं के अधिगमक की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, और इसमें उनका अपने चिंतन और अधिगम की प्रक्रियाओं को प्रतिबिंबित करना और भी शामिल होता है। यह शिक्षार्थियों को सामाजिक अन्तः क्रिया के माध्यम से निर्माता और ज्ञान के निर्माता के रूप मे देखती है।

170. अभिकथन (A) : समाजीकरण स्कूल में ही होता है जब बच्चे स्कूल जाना शुरू करते हैं।

तर्क (R) : स्कूल द्वितीयक समाजीकरण की एकमात्र संस्था है।

सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।

(b) (A) और (R) दोनों सही है लेकिन (A) की (R) सही व्याख्या नहीं करता है।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 06/02/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : सामाजीकरण समाज में विशेष भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों के अपेक्षित व्यवहार, मूल्यों, मानदंडों और सामाजिक कौशल को सीखने की चल रही प्रक्रिया को संदर्भित करता है। समाजीकरण के प्रमुख एजेंटों में परिवार और स्कूल शामिल है, लेकिन मीडिया, सहकर्मी समूह और अन्य प्रमुख सामाजिक संस्थान जैसे धर्म और कानूनी व्यवस्था भी शामिल हैं। अतः इस सन्दर्भ मे समाजीकरण स्कूल में ही नही वरन् परिवार, मीडिया व आसपास वातावरण से भी प्राप्त होता है। और द्वितीयक/माध्यमिक समाजीकरण में सिर्फ स्कूल ही नहीं बल्कि, पड़ोस, मीडिया, सहकर्मी समूह, समाज के कानून आदि है। इस प्रकार (A) और (R) दोनों गलत है।

171. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बच्चे की सामाजीकरण की प्रक्रियाओं की सही व्याख्या हैं ?

(a) बच्चे के संभाव्य गुण/अंतर्निहित शक्तियाँ आनुवंशिक सामग्रियों के पोषित होने का निश्चित परिणाम है।

(b) बच्चे को सामाजिक परिवेश के द्वारा पूरी तरह से ढाला जा सकता है।

(c) बच्चे का विकास सिर्फ उसके भाग्य द्वारा निर्धारित किया जाता है और उसमें न तो आनुवांशिकता की कोई भूमिका है और न ही परिवेश की।

(d) बच्चों का विकास आनुवांशिक और परिवेशीय कारकों का जटिल पारस्परिक प्रभाव हैं।

CTET (VI-VIII) 21/12/2021

Ans. (d**) :** बच्चों का विकास आनुवांशिक और परिवेशीय कारकों का जटिल पारस्परिक प्रभाव हैं। यह कथन बच्चे की समाजीकरण की प्रक्रियाओं का सही व्याख्या है। आनुवांशिक और पर्यावरण सम्बन्धी परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि समान वंशानुक्रम और समान वातावरण के होने पर भी बालकों में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। मनोवैज्ञानिक क्रो और क्रो ने इन विचारों की पुष्टि करते हुए कहा है-''व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशानुक्रम और न केवल वातावरण से होते है, बल्कि वह जैविक और सामाजिक विरासत के एकीकरण की उपज है।''

172. जीन पियाजे के अनुसार विकास के किस स्तर पर बच्चे में परिकल्पना आधारित-निगमनात्मक तार्किकता विकसित होती हैं, और वैज्ञानिक सोच उभरना शुरु होती हैं?

(a) अमूर्त संक्रियात्मक (b) संवेदी-पेशीय

(c) मूर्त-संक्रियात्मक (d) पूर्व-संक्रियात्मक

CTET (VI-VIII) 23/12/2021

Ans. (a) : जीन पियाजे के अनुसार विकास के अमूर्त संक्रियात्मक स्तर (Formal operational stage 11-15 years) पर बच्चे में परिकल्पना आधारित निगमनात्मक तार्किकता विकसित होती है और वैज्ञानिक सोच उभरना शुरू होता है। इस स्तर के दौरान बालक अमूर्त बातों के संबंध में तार्किक चिंतन करने की योग्यता विकसित करता है। समस्या-समाधान व्यवहार अधिक व्यवस्थित हो जाता है। बालक निष्कर्ष निकालने लगता है, व्याख्या करने लगता है तथा परिकल्पनायें बनाने लगता है। औपचारिक या अमूर्त संक्रियात्मक विचार बालकों केा वास्तविकता से बाहर जाने तथा संभावनाओं पर विचार करने योग्य बनाते हैं।

173. _____ और _____ समाजीकरण की द्वितीयक संस्थाएं हैं।

(a) विद्यालय, परिवार (b) परिवार, जन-संचार

(c) धर्म, परिवार (d) विद्यालय, जन-संचार

CTET (VI-VIII) 23/12/2021

Ans. (d) : विद्यालय और जनसंचार सामाजीकरण की द्वितीयक संस्थाएं हैं। मानव के समाजीकरण की प्रक्रिया बड़ी लंबी एवं जटिल है। इस प्रकिया में अनेक संस्थाओं एवं समूहों का योगदान होता है। यह संस्थाएं समय-समय पर विभिन्न बातें सिखाती हैं। बच्चों का समाजीकरण करने में अनेक द्वितीयक संस्थाओं जैसे-विद्यालय, धार्मिक, आर्थिक,राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यवसायिक संगठनों आदि का योगदान होता है।

174. प्रगतिशील शिक्षा _____ करती हैं।

(a) विविधताओं का सम्मान

(b) व्यक्तिगत विभिन्नताओं को अनदेखा

(c) मानकीकृत आकलन का इस्तेमाल

(d) योग्यता-आधारित स्थिर समूहीकरण का प्रचार

CTET (VI-VIII) 23/12/2021

Ans. (a) : प्रगतिशील शिक्षा विविधताओं का सम्मान करती है। प्रगतिशील शिक्षा का एक-मात्र उद्देश्य बालकों का समग्र विकास करना है। अतः हम कह सकते है कि प्रगतिशील शिक्षा के अन्तर्गत बालक की रूचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर ही सम्पूर्ण शिक्षा का आयोजन किया जाता है।

175. खेलते समय, बच्चों का एक समूह एक आधुनिक और लोकप्रिय फिल्म के दृश्यों का अभिनय करता है। यह स्थिति यह दर्शाती है कि _____ सामाजीकरण का एक प्रमुख संस्थान है।

(a) परिवार (b) मीडिया

(c) सहपाठी (d) धर्म

CTET (VI-VIII) 28/12/2021

Ans. (b) : खेलते समय, बच्चों का एक समूह एक आधुनिक और लोकप्रिय फिल्म के दृश्यों का अभिनय करता है। यह स्थिति यह दर्शाती है कि मीडिया (Media) समाजीकरण का एक प्रमुख संस्थान है। मीडिया के अन्तर्गत टेलीविजन, रेडियों, सिनेमा, समाचार पत्र-पत्रिकाएं आदि आते हैं। बच्चों को अपने दर्शकों के उद्देश्य से लगातार टेलीविजन या रेडियो सामग्री के सम्पर्क में रखा जाता है लेकिन मोबाइल फोन के बड़े पैमाने पर उपयोग के साथ, इसे और अधिक लोकतांत्रिक बनाया गया है जिससे बच्चों को वह सामग्री चुनने की अनुमति मिलती है जिसके साथ वे अपना मनोरंजन करना चाहते हैं। अतः समाजीकरण पर मीडिया के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

176. प्राथमिक समाजीकरण की प्रक्रिया किस अवस्था से शुरू हो जाती है?

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था

CTET (VI-VIII) 27/12/2021

Ans. (a) : प्राथमिक समाजीकरण की प्रक्रिया "शैशवावस्था" से शुरू हो जाती है जिसमें बच्चे अपने जीवन की शुरुआती अवधि में सीखते हैं और अपने आसपास के अनुभवों और बातचीत के माध्यम से स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। प्राथमिक सामाजीकरण की प्रक्रिया परिवार के माध्यम से घर पर शुरू होती है। परिवार बच्चों को प्यार, विश्वास, संबंध बनाना और एकसाथ रहना सिखाते हैं। प्राथमिक समाजीकरण और प्रभावित करने वाले कारक- माता पिता, परिवार, बचपन के दोस्त आदि हैं।

177. बच्चों का एक समूह अपने खेल को एक नृत्य-रियलिटी शो पर आधारित करता है। एक जज को नकल करते हुए, ज़फर मेज पर चढ़ता है और टिप्पणी करते हुए ताली बजाता है। इस उदाहरण में सामाजीकरण की कौन-सी संस्था निदर्शित है?

(a) मीडिया (b) शैक्षणिक संस्थान
(c) आस-पड़ोस (d) धर्म

CTET (VI-VIII) 03/01/2022
CTET (VI-VIII) 24/12/2021

Ans. (a) : बच्चों का एक समूह अपने खेल को एक नृत्य-रियलिटी शो पर आधारित करता है। एक जज को नकल करते हुए, ज़फर मेज पर चढ़ता है और टिप्पणी करते हुए ताली बजाता है। इस उदाहरण में समाजीकरण की मीडिया (Media) संस्था निर्देशित है। मीडिया संस्कृति को प्रभावित करता है। यह समाज की सोच को आकार देता है। मीडिया महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें कुछ अस्तित्व की भावना देता है। हमारे जीवन को आसान और सरल बनाने के लिए मीडिया का उपयोग किया जाना चाहिए। मीडिया सूचना, प्रकृति, विचारों का आधार है तथा यह समाज की अगली पीढ़ी के लिए एक खाका है। मीडिया शब्द संचार के साधनों रेडियों, टेलीविजन, समाचार पत्र आदि के लिए प्रयोग किया जाता है।

178. बहुत से अभिभावकों ने लोकप्रिय कार्टून शो 'शिनचैन' पर प्रतिबंध लगाने की मांग रखी क्योंकि उनके बच्चे इस शो के मुख्य पात्र के अनुशासनहीन व्यवहार की नक़ल करने लगे थे। यह बच्चों के समाजीकरण पर _____के प्रभाव को दर्शाता है।

(a) मीडिया (b) सहपाठियों
(c) पास-पड़ोस (d) धर्म

CTET (VI-VIII) 22/12/2021

Ans. (a) : बहुत से अभिभावकों ने लोकप्रिय कार्टून शो 'शिनचैन' पर प्रतिबंध लगाने की मांग रखी क्योंकि उनके बच्चे इस शो के मुख्य पात्र के अनुशासनहीन व्यवहार की नकल करने लगे थे। यह बच्चों के समाजीकरण पर मीडिया (media) के प्रभाव को दर्शाता है। मीडिया के अंतर्गत टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्तर जालीय पृष्ठ आदि आते हैं। बच्चों को अपने दर्शकों के उद्देश्य से लगातार टेलीविजन या रेडियों सामग्री के सम्पर्क में रखा जाता है। लेकिन स्मार्ट मोबाइल फोन के बड़े पैमाने पर उपयोग के साथ इसे और अधिक लोकतांत्रिक बनाया गया है जिससे बच्चों को वह सामग्री चुनने की अनुमति मिलती है। जिसके साथ वे अपना मनोरंजन करना चाहते हैं। अतः समाजीकरण पर मीडिया के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

179. निम्नलिखित में से समाजीकरण के द्वितीयक कारक कौन-से हैं?

(i) किताबें और पत्रिकाएँ (ii) निकट परिवार
(iii) मीडिया (iv) स्कूल

(a) (iii), (iv) (b) (ii), (iv)
(c) (i), (iii), (iv) (d) (ii), (iii), (iv)

CTET (VI-VIII) 04/01/2022

Ans. (c) : समाजीकरण के द्वितीयक कारक निम्नलिखित है –
किताबें और पत्रिकाएं, मीडिया, स्कूल, समाज, राजनैतिक और धार्मिक संस्थाएं आदि जबकि समाजीकरण के प्राथमिक कारकों में परिवार, पड़ोस, नातेदारी समूह आदि आते हैं। समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीति-रिवाज, गतिविधियाँ इत्यादि सीखता है। समाजीकरण के माध्यम से ही बालक संस्कृति को आत्मसात् करता है। समाजीकरण द्वारा संस्कृति, सभ्यता तथा अन्य अनगिनत विशेषताएं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती हैं और जीवित रहती हैं। अतः समाजीकरण निरंतर चलने वाली सीखने की प्रक्रिया है।

180. अभिकथन (a) ; बच्चे स्कूलों में अकादमिक संप्रत्ययों के अलावा मूल्य व धारणाएँ भी सीखते हैं।
कारण (R) : स्कूल समाजीकरण की एक द्वितीयक परन्तु महत्वपूर्ण संस्था है।
सही विकल्प चुने :

(a) (a) और (R)दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (a) की।
(b) (a) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (a) की।
(c) (a) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (a) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 10/01/2022

Ans. (a) : बच्चे स्कूलों में अकादमिक संप्रत्ययों के अलावा मूल्य व धारणाएं भी सीखते हैं क्योंकि स्कूल सामाजीकरण की एक द्वितीयक परन्तु महत्वपूर्ण संस्था है। बच्चे के लिए स्कूल जाने का अर्थ विकास करना है। घर में रहने वाला बच्चा जब अपने साथियों को विद्यालय में जाते देखता है तो उस समय की प्रतीक्षा करने लगता है जब वह स्कूल जायेगा। बच्चे स्कूल के प्रति निष्ठावान होते है एवं विद्यालय में जाकर विविध दायित्वों को सीखते है। स्कूल को ऐसा सामाजिक वातावरण तैयार करना चाहिए जो समाज की परिस्थितियों के अनुकूल हो और उसमें रहते हुए बच्चों का सामाजीकरण समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल ही संभव हो सके। अतः (a) और (R) दोनों सही है और (R) सही व्याख्या करता है (a) की।

181. बच्चों के सामाजीकरण के संदर्भ में कौन-सा कथन सही है?

(a) मीडिया सामाजीकरण की प्राथमिक संस्था है।
(b) मीडिया सामाजीकरण की द्वितीयक संस्था है।
(c) मीडिया बच्चे के सूक्ष्म तंत्र का अभिन्न हिस्सा है।
(d) मीडिया सामाजीकरण की संस्था नहीं है।

CTET (VI-VIII) 11/01/2022

Ans. (b) : बच्चों के समाजीकरण के संदर्भ में यह कथन सही है कि मीडिया सामाजीकरण की द्वितीयक संस्था है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही व्यक्ति यह जान पाता है कि उसे किन व्यक्तियों के साथ रहना है, उनसे किस प्रकार का व्यवहार करना तथा अपनी क्षमताओं का विकास किस प्रकार करना है। इसके अतिरिक्त, यह प्रक्रिया अनेक दूसरे कार्यों के द्वारा भी व्यक्तित्व को संगठित रखने का प्रयास करती है। बच्चे का समाजीकरण करने में अनेक प्राथमिक संस्थाओं जैसे परिवार, पड़ोस, मित्र-मण्डली, विवाह एवं नातेदारी समूह एवं द्वितीयक संस्थाओं जैसे विद्यालय, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यवसायिक संगठनों आदि का योगदान होता है।

182. बच्चों का द्वितीयक सामाजीकरण_____ की अवस्था में प्रारंभ हो जाता है जब वह स्कूल जैसे औपचारिक संस्थानों में जाना शुरू कर देते हैं।

(a) शैशवावस्था (b) पारंपरिक बाल्यावस्था
(c) माध्यमिक बाल्यावस्था (d) किशोरावस्था

CTET (VI-VIII) 17/01/2022

Ans. (b) : बच्चों का द्वितीयक सामाजीकरण प्रारंभिक/पारंपरिक बाल्यावस्था (Early childhood) की अवस्था में प्रारंभ हो जाता है जब वह स्कूल जैसे औपचारिक संस्थानों में जाना शुरू कर देते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था में बच्चों में उत्सुकता अधिक होती है और अनुकरण करने की प्रवृत्ति अधिक तीव्र होती है। यह एक समस्या अवस्था होती है। इस अवस्था को शिक्षिकों द्वारा तैयारी का समय बताया गया है। द्वितीयक सामाजीकरण द्वारा बढ़ते बच्चे को संदर्भित करता है जो अपने साथियों से सामाजिक आचरण में बहुत महत्वपूर्ण सबक सीखता है। सामाजीकरण मूल्यों विश्वासों और अपेक्षाओं को प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है।

183. एक शिक्षक ने अपने छात्रों को प्रोत्साहित किया कि वे अपने वयस्कों और समुदाय के सदस्यों से वार्तालाप करके अपनी विरासत के बारे में सीखें। निम्न में से उस विकल्प को चुनिए जो समाजीकरण और अधिगम के संदर्भ में शिक्षक की धारणा को दर्शाता है।

(i) बच्चों द्वारा समुदाय से प्राप्त ज्ञान के महत्व को पहचानना ।
(ii) यह विश्वास कि सीखना एक सामाजिक परिवेश में होता है और इससे संबध स्थापित करना महत्वपूर्ण है।
(iii) विद्यालय में अर्जित ज्ञान का स्थानीय ज्ञान के साथ संबंध को महत्व देना।
(iv) विद्यालय द्वारा सिखाए गए ज्ञान को ज़्यादा महत्व देना।

(a) केवल (i)
(b) केवल (ii) और (iii)
(c) (i), (ii) और (iii)
(d) (i), (ii) , (iii) और (iv)

CTET (VI-VIII) 21/01/2022

Ans. (c) : एक शिक्षक ने अपने छात्रों को प्रोत्साहित किया कि वे अपने वयस्कों और समुदाय के सदस्यों से वार्तालाप करके अपनी विरासत के बारे में सीखें। निम्नलिखित विकल्प समाजीकरण और अधिगम के संदर्भ में शिक्षक की धारणा को दर्शाता है–
(i) बच्चों द्वारा समुदाय से प्राप्त ज्ञान के महत्व को पहचानना।
(ii) यह विश्वास कि सीखना एक सामाजिक परिवेश में होता है और इससे संबंध स्थापित करना महत्वपूर्ण है।
(iii) विद्यालय में अर्जित ज्ञान का स्थानीय ज्ञान के साथ संबंध को महत्व देना।

184. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन समाजीकरण के संदर्भ में सही है?

(a) परिवार और स्कूल समाजीकरण में प्रमुख योगदान देते हैं लेकिन मीडिया और सहपाठी जैसे अन्य संस्थान भी हैं जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(b) स्कूल बच्चों के प्राथमिक समाजीकरण के प्रमुख संस्थान हैं।
(c) मीडिया बच्चों के समाजीकरण का महत्वपूर्ण संस्थान नहीं है।
(d) बच्चों के समाजीकरण में धार्मिक संस्थाएं किसी भी तरह की भूमिका नहीं निभाती हैं।

CTET (VI-VIII) 21/01/2022

Ans. (a) : समाजीकरण के संदर्भ में परिवार और स्कूल समाजीकरण में प्रमुख योगदान देते हैं लेकिन मीडिया और सहपाठी जैसे अन्य संस्थान भी हैं जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा बालक समाज और संस्कृति के बीच रह कर विभिन्न साधनों के माध्यम से सामाजिक गुणों को सीखता है। समाजीकरण द्वारा संस्कृति, सभ्यता तथा अन्य अनगिनत विशेषताएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती हैं और जीवित रहती हैं। बच्चे का समाजीकरण करने में अनेक प्राथमिक संस्थाओं जैसे-परिवार, पड़ोस, मित्र मण्डली, विवाह एवं नातेदारी समूह तथा द्वितीयक संस्थाओं जैसे-विद्यालय, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक संगठनों आदि का योगदान होता है।

185. सामाजीकरण-

(a) समाज के रीति-रिवाजों को पारित करने की एक सरल प्रक्रिया है।
(b) जटिल प्रक्रिया है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से होती है।
(c) व्यवस्थित तरीके से होने वाली रैखिक प्रक्रिया है।
(d) औपचारिक प्रक्रिया है जो केवल परिवार द्वारा नियोजित होती है।

CTET (VI-VIII) 12/01/2022

Ans. (b) : सामाजीकरण जटिल प्रक्रिया है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से होती है। यह एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक में सामाजिक गुणों का विकास होता है तथा वह सामाजिक प्राणी बनता है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति/बालक समाज और संस्कृति के बीच रहकर विभिन्न साधनों के माध्यम से सामाजिक गुणों को सीखता है। अतः इसे सीखने की प्रक्रिया भी कहा जाता है। समाजीकरण द्वारा ही बालक यह जान पाता है कि उसे किन व्यक्तियों के साथ रहना है, उनसे किस प्रकार का व्यवहार करना है तथा अपनी क्षमताओं का विकास किस प्रकार करना है। इसके अतिरिक्त यह प्रक्रिया उनके दूसरे कार्यो के द्वारा भी व्यक्तित्व को संगठित रखने का प्रयास करती है।

186. _____ प्राथमिक सामाजीकरण की संस्था है, जबकि _____ द्वितीयक सामाजीकरण का कारक है।

(a) परिवार, पड़ोस (b) परिवार, किताबें
(c) स्कूल, धर्म (d) स्कूल, समकक्षी

CTET (VI-VIII) 07/01/2022

Ans. (b) : परिवार प्राथमिक सामाजीकरण की संस्था है, जबकि किताबें द्वितीयक समाजीकरण का कारण है। बच्चा जब जन्म लेता है तो सबसे पहले वह परिवार के बीच आता है इसलिए परिवार बालक की प्राथमिक समाजीकरण संस्था है। बालक उनके क्रियाकलापों तथा व्यवहार के तौर-तरीकों से उनके विविध स्वरूपों जैसे क्रोध करना, चिल्लाना, हसना, हाथ, भुजा, पैर आदि हिलाने की अनुक्रियाओं का अनुकरण करता है। किताबें द्वितीयक समाजीकरण है। जब एक बच्चा अपनी संस्कृति के मूल्यों, विश्वासों और व्यवहार को परिवार के बाहर के लोगों जैसे- शिक्षक, किताब, मित्रों, मीडिया आदि के माध्यम से सीखता है।

187. निम्नलिखित कथनों मे से कौन-सा कथन समाजीकरण के संदर्भ में सही है?

(a) सभी संस्कृतियो में समाजीकरण का तरीका एक समान है।
(b) समाजीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिस में कई संस्थान बच्चों के जीवन में अलग-अलग समय/अवस्थाओं पर प्रभाव डालती है।
(c) मीडिया और परिवार समाजीकरण के द्वितीयक संस्थान हैं।
(d) द्वितीयक समाजीकरण सबसे पहले तब होता है जब बच्चे अपनी व्यक्तिगत पहचान को और भाषा को सीखते हैं।

CTET (VI-VIII) 31/12/2021

Ans. (b) : समाजीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई संस्थान बच्चों के जीवन में अलग-अलग समय/अवस्थाओं पर प्रभाव डालती हैं यह कथन समाजीकरण के सन्दर्भ में सही है। सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीति-रिवाज, गतिविधियाँ इत्यादि सीखता है। फिचर के अनुसार – ''समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को स्वीकार करता है उसके साथ अनुकूलन करता है।''

188. कथन (A) : बच्चे अपने समाज की जानकारी, कौशल, मूल्य, रीति-रिवाज केवल औपचारिक कारकों से सीखते हैं।
तर्क (R) : सामाजीकरण एक सरल और रैखिक प्रक्रिया है जो एक सुनियोजित तरीके से होती है।
सही विकल्प चुनें।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही व्याख्या करता है (A) की।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

CTET (VI-VIII) 05/01/2022

Ans. (d) : बच्चे अपने समाज की जानकारी कौशल, मूल्य, रीति रिवाज केवल औपचारिक कारकों से नहीं सीखते हैं, बल्कि औपचारिक और अनौपचारिक दोनों कारकों से सीखते हैं, क्योंकि बच्चा समाज का एक अंग होता है जो विद्यालय में अपनी अर्न्तनिहित शक्तियों को विकसित करने हेतु जाता है। समाजीकरण एक सरल और रैखिक प्रक्रिया न होकर चक्रीय रूप से चलती रहती है और बालक के व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिक अनुभवों पर आधारित होता है। बालक सामाजिक गुण को अपने चारों ओर के व्यक्तियों के साथ अंतः क्रिया द्वारा सीखता है। अतः (A) और (R) दोनों गलत है।

1.(v) पियाजे, कोहलबर्ग और बायगोत्सकी : निर्माण और विवोचित संदर्श

189. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में 'सांस्कृतिक उपकरण' एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?

(a) अल्बर्ट बन्डुरा (b) बी.एफ. स्किनर
(c) लेव वायगोत्स्की (d) जीन पियाजे

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : लेव वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में सांस्कृतिक उपकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वायगोत्स्की के अनुसार बालक जिस भी आयु में कोई संज्ञानात्मक कौशल सीखते हैं, उनका अधिगम इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी संस्कृति में वह कौशल या उपकरण कितना स्वीकार्य है। इन्होंने बालक के संज्ञानात्मक विकास में भाषा और सामाजिक कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका माना है।

190. लेव वायगोत्स्की के अनुसार-

(a) बच्चों का संज्ञानात्मक विकास चरणों में होता है।
(b) स्कीमा के परिपक्कन से बच्चों में संज्ञानात्मक विकास अग्रसर होता है।
(c) बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में भाषा की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
(d) बच्चे 'भाषा अधिग्रहण यंत्र' द्वारा भाषा सीखते हैं।

CTET (VI-VIII) 27/01/2023 (Shift-II)
CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : लेव वायगोत्स्की के अनुसार, बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में भाषा एवं चिंतन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके अनुसार, बालक अपने व्यवहार को नियोजित और निर्देशित करने के लिए ही भाषा का प्रयोग करते हैं, सिर्फ सम्प्रेषण के लिए नहीं। इनका मत है कि कोई भी मानसिक कार्य करने से पहले बालक का बाहरी समाज से संवाद होना आवश्यक है। बाहरी दुनिया से बात करने के लिए भाषा को सीखना आवश्यक है। बालक जैसे ही भाषा सीखता है वह भीतरी सम्भाषण प्रारम्भ कर देता है और धीरे-धीरे सभी बालक अपने अंदर आत्मवार्तालाप की आदत बना लेते हैं। यही वार्तालाप आगे जाकर उनका चिंतन बनकर सामने आता है।

191. जीन पियाजे के अनुसार बच्चे अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में-

(a) संरक्षण, वर्गीकरण व श्रेणीबद्धता करने में सक्षम नहीं हैं।
(b) प्रतीकात्मक और सांकेतिक खेलों में भाग लेना प्रारंभ करते हैं।
(c) परिकल्पित निगमनात्मक तर्क और प्रतिज्ञप्ति चिंतन करने में समर्थ हैं।
(d) केंद्रीकरण और अनुत्क्रमणीय सोच से आबद्ध हैं।

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : जीन पियाजे के अनुसार, बच्चे अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में परिकल्पित निगमनात्मक तर्क और प्रतिज्ञप्ति चिंतन करने में समर्थ होते हैं। पियाजे के अनुसार, अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था चौथी प्रमुख अवस्था है जो कि लगभग 11 वर्ष से आरंम्भ होती है और वयस्कावस्था तक चलती रहती है। इस अवस्था में बालक का चिंतन अधिक अमूर्त, अधिक क्रमबद्ध, लचीला और तार्किक हो जाता है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था में बच्चे वैज्ञानिकों की तरह तार्किक सोच रखते हैं। वे निगमनात्मक परिकल्पना, तर्क का प्रयोग समस्या हल करने में करते हैं। अर्थात् वे समस्या के संभावित उत्तरों का परीक्षण करके बेहतर संभावित उत्तर को निष्कर्ष के रूप में खोजते हैं।

192. लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति किस अवस्था में है जब वह विश्वास करता है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली को सक्रियतापूर्वक बनाए रखने से धनात्मक मानवीय संबंध और सामाजिक वर्ग सुरक्षित रहता है?

(a) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास
(b) सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास
(c) दंड और आज्ञापालन अभिविन्यास
(d) सामाजिक-क्रम व्यवस्था अभिविन्यास

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (d) : लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार, सामाजिक-क्रम व्यवस्था अभिविन्यास अवस्था में व्यक्ति यह विश्वास करता है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली को सक्रियतापूर्वक बनाये रखने से धनात्मक मानवीय सम्बन्ध और सामाजिक वर्ग सुरक्षित रहता है। सामाजिक-क्रम व्यवस्था अभिविन्यास, परम्परागत नैतिकता स्तर का दूसरा सोपान है। इस सोपान स्तर पर बच्चों का नैतिक निर्णय सामाजिक व्यवस्था के नियमों एवं रीति-रिवाजों के द्वारा नियंत्रित होता है। इस सोपान में बालक क्रियात्मक समाज को बनाये रखने में अपने महत्व को सीखते हैं। अर्थात् वह समझता है कि सामाजिक नियम-कानून बनाये रखना, उसका और समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

193. निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक ने प्रस्तावित किया है कि बच्चों का चिंतन गुणात्मक रूप से वयस्कों की अपेक्षा अलग होता है?

(a) हॉवर्ड गार्डनर (b) लॉरेंस कोहलबर्ग
(c) जीन पियाजे (d) लेव वायगोत्स्की

CTET (VI-VIII) 31/01/2021

Ans. (c) : जीन पियाजे के अनुसार, बच्चों का चिंतन गुणात्मक रूप से वयस्कों की अपेक्षा अलग होता है। पियाजे का मानना है कि बच्चों में वास्तविकता के स्वरूप का चिंतन करने, उसकी खोज करने, उसके बारे में समझ बनाने तथा उसके बारे में सूचनाएँ एकत्रित करने की क्षमता, उनके परिपक्वता स्तर तथा अनुभवों की पारस्परिक अंतःक्रिया द्वारा निर्धारित होती है। इससे पता चलता है कि चिंतन में परिपक्वता और अनुभव की पारस्परिक अंतःक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चूँकि बालक के परिपक्वता स्तर और अनुभव, वयस्क के परिपक्वता स्तर और अनुभव से अलग होता है, इसलिए इन दोनों का चिंतन भी गुणात्मक रूप से अलग होता है।

194. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, परिकल्पित निगमनात्मक तर्क किस अवधि में विकसित होता है?

(a) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(b) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(c) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(d) संवेदी-चालक अवस्था

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (c) जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार, परिकल्पित निगमनात्मक तर्क अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में विकसित होता है। अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था है, जो लगभग 11-15 वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था के दौरान बालक अमूर्त बातों के संबन्ध में तार्किक चिंतन करने की योग्यता विकसित कर लेता है। ध्यातव्य है कि मूर्त वस्तुओं तथा सामग्री के स्थान पर शाब्दिक तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति का प्रयोग तार्किक चिंतन में किया जाता है।

195. वायगोत्स्की के अनुसार, जब एक वयस्क बच्चे के निष्पादन के वर्तमान स्तर को सहयोग द्वारा विस्तारित करता है तो इसे क्या कहते हैं ?

(a) समीपस्थ विकास का क्षेत्र(b) पाड़ (ढांचा)
(c) अंतः व्यक्तिनिष्ठता (d) खोजपूर्ण अधिगम

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (b) वाइगोत्स्की के अनुसार, जब एक वयस्क बच्चे के निष्पादन के वर्तमान स्तर को सहयोग द्वारा विस्तारित करता है तो इसे पाड़ या ढाँचा निर्माण (Scaffolding) कहते हैं। दूसरे शब्दों में जब कोई बड़ा व्यक्ति जैसे कि माता-पिता या शिक्षक बालक को कोई खेल या व्यवहार सिखाता है तो उससे अंतःक्रिया या संवाद करता है, इस क्रिया को ढाँचा निर्माण कहा जाता है। इसमें संवाद या अंतःक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

196. नूर विद्यालय में अपना लंच बॉक्स लाना भूल गई तथा यह कहते हुए तान्या से उसका लंच साझा करने के लिए कहा, ''तुम्हें आज अपना लंच मेरे साथ साझा करना चाहिए क्योंकि कल मैंने तुम्हारे साथ अपना लंच साझा किया था।''
लॉरेंस कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के अनुसार नूर का कथन ..... अभिविन्यास प्रारूप को ..... अवस्था पर दर्शाता है।

(a) आज्ञापालन; पूर्व-परम्परागत
(b) अच्छा होना; परम्परागत
(c) आदान-प्रदान; परम्परागत
(d) कानून एवं व्यवस्था; पश्च-परम्परागत

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (c) यदि नूर विद्यालय में अपना लंच बॉक्स लाना भूल गयी तथा यह कहते हुए तान्या से उसका लंच साझा करने के लिए कहती है कि ''तुम्हें आज अपना लंच मेरे साथ साझा करना चाहिए क्योंकि कल मैंने तुम्हारे साथ अपना लंच साझा किया था।''
लॉरेंस कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार नूर का यह कथन आदान-प्रदान, (Exchange) अभिविन्यास प्रारूप को परम्परागत (Conventional) अवस्था पर दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, परम्परागत स्तर के प्रथम उप-सोपान पारस्परिक संबन्ध स्तर या परस्पर एकरूप अभिमुखता में बच्चों में विश्वास, दूसरों का ख्याल रखना, दूसरों के प्रति निष्पक्ष व्यवहार करना आदि उसके नैतिक व्यवहार का आधार होते हैं।

197. ..... के अनुसार, बच्चों के चिंतन के बारे में सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सांस्कृतिक संदर्भ के प्रभाव को समझना आवश्यक है।

(a) जीन पियाजे (b) लेव वायगोत्स्की
(c) अलबर्ट बैन्डुरा (d) लॉरेंस कोह्लबर्ग

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (b) लेव वायगोत्स्की के अनुसार बच्चों के चिंतन के बारे में सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सांस्कतिक संदर्भ के प्रभाव को समझना आवश्यक है। वाइगोत्स्की का मानना है कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबन्धों से ही संज्ञानात्मक कौशल का विकास होता है। उनके अनुसार अधिगम व विकास सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण के मध्य साथ-साथ चलते हैं। उनका कहना है कि बालक का विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से अलग नहीं किया जा सकता है।

198. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत से निहितार्थ निकालते हुए एक ग्रेड 6-8 के शिक्षक को अपनी कक्षा में क्या करना चाहिए?

(a) ऐसी समस्याएँ प्रस्तुत करनी चाहिए जिसमें तर्क आधारित समाधान की आवश्यकता होती है।

(b) एक अवधारणा को पढ़ाने के लिए केवल मूर्त सामग्रियों का प्रयोग करना चाहिए।

(c) केवल निर्धारित पाठ्यक्रम पर निर्भर रहना चाहिए।

(d) तार्किक बहस के प्रयोग को हतोत्साहित करना चाहिए।

CTET (VI-VIII) 08/12/2019

Ans. (a) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से निहितार्थ निकालते हुए एक ग्रेड 6-8 के शिक्षक को अपनी कक्षा में ऐसी समस्याएँ प्रस्तुत करनी चाहिए, जिसमें तर्क आधारित समाधान की आवश्यकता होती है क्योंकि पियाजे का मानना है कि बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं इसलिए उनके समक्ष ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना चाहिए जिसमें वे स्वयं खोज के द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करें।

199. निम्नलिखित वर्णन को पढ़िए तथ कोहलबर्ग के नैतिक तर्क की अवस्था को पहचानिए।

वर्णन :

अंतःकरण के स्व–चयनित नैतिक सिद्धांतों के द्वारा सही कार्य परिभाषित किया जाता है जो कानून एवं सामाजिक समझौते पर ध्यान दिए बिना सम्पूर्ण मानवता के लिए वैध होता है।

(a) सामाजिक– अनुबंधन अभिविन्यास

(b) सामाजिक – क्रम व्यवस्था अभिविन्यास

(c) सार्वभौम नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास

(d) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (c) : कोहलबर्ग के अनुसार सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास सोपान में किशोर उचित-अनुचित का निर्णय ऐसे स्वनिर्धारित नैतिक सिद्धांतों के आधार पर करता है जो तार्किक व्यापकता, सार्वभौमिकता तथा एकरूपता से युक्त होते हैं। इस अवस्था में किशोर सार्वभौमिक मानवाधिकार पर आधारित नैतिक मापदण्ड बनाता है। जब कोई व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की आवाज के द्वंद के बीच फंसा होता है तो वह व्यक्ति यह तर्क देता है कि अपनी अंतरात्मा की आवाज के आधार पर कार्य करना चाहिए, चाहे उसका परिणाम कुछ भी हो। इसी प्रकार इस अवस्था में अंतःकरण के स्व–चयनित नैतिक सिद्धांतों के द्वारा सही कार्य परिभाषित किया जाता है जो कानून एवं सामाजिक समझौते पर ध्यान दिये बिना सम्पूर्ण मानवता के लिए वैध होता है।

200. निम्नलिखित में से कौन सा मूर्त क्रियात्मक अवस्था के प्रमुख कौशलों में से एक है?

(a) सुरक्षित रखने की योग्यता

(b) परिकल्पित निगमनात्मक तर्क

(c) द्वितीयक वर्तुल प्रतिक्रियाएँ

(d) सजीवात्मक चिंतन

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (a) : मूर्त–क्रियात्मक अवस्था लगभग 7-12 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था का एक प्रमुख कौशल सुरक्षित रखने की योग्यता है। इसे संरक्षण का सिद्धांत भी कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार किसी वस्तु की मात्रा पर उस वस्तु के आकार में परिवर्तन करने अथवा उस वस्तु को कई हिस्सों या टुकड़ों में विभक्त कर देने का कोई प्रभाव नहीं होता है। पियाजे के अनुसार संरक्षण के ज्ञान के लिए विलोमीयता तथा तार्किक गुणिता नामक दो पूर्व योग्यताओं का होना आवश्यक है। विलोमीयता से आशय किसी वस्तु को मानसिक स्तर पर उसके आकार को समझने से है। तार्किक गुणिता से आशय किसी वस्तु या समस्या की दो या दो से अधिक विमाओं या विशेषताओं पर एक साथ ध्यान देने से है। बच्चे इस अवस्था में तरल, लम्बाई, भार इत्यादि के संरक्षण से संबंधित समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होते हैं।

201. जीन पियाजे एवं लेव वायगोट्स्की जैसे संरचनावादी अधिगम को किस रूप में देखते हैं?

(a) प्रतिक्रियाओं का अनुबंधन

(b) निष्क्रिय आवृत्तीय प्रक्रिया

(c) सक्रिय विनियोजन से अर्थ–निर्माण की प्रक्रिया

(d) कौशलों का अर्जन

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (c) : जीन पियाजे एवं लेव वाइगोत्सकी जैसे संरचनावादी अधिगम को सक्रिय विनियोजन से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

जीन पियाजे विकासात्मक मनोविज्ञान में शोध के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अधिगम प्रक्रिया को योजना द्वारा, सामंजस्य द्वारा, आत्मसात द्वारा पूर्ण होना बताया। उनके अनुसार अधिगमकर्ता को एक आदर्श अधिगम वातावरण प्रदान करने पर वह एक अर्थपूर्ण ज्ञान का निर्माण करता है।

लेव वाइगोत्सकी सामाजिक निर्मितवाद के जनक हैं और मानते हैं कि अधिगम एवं विकास एक सामंजस्यकारी गतिविधि है जिससे बच्चे शिक्षा और समाजीकरण के संदर्भ में ज्ञान का निर्माण करते हैं। इस प्रकार जीन पियाजे और लेव वाइगोत्सकी दोनों ही बच्चों द्वारा सक्रिया रहकर ज्ञान निर्माण पर बल देते हैं और बच्चे को सक्रिय अधिगमकर्ता के रूप में देखते हैं।

202. पियाजे के अनुसार, विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संरचनाएँ (अनुभव से सही अर्थ निकालने के व्यवस्थित तरीके) को क्या कहा जाता है?

(a) स्कीमा (b) प्रतिमान

(c) मानसिक मैप (d) मानसिक उपकरण

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (a) : पियाजे के अनुसार, स्कीमा से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक संरचना से लिया जाता है जिसका सामान्यीकरण किया जा सके। दूसरे शब्दों में स्कीमा जानने व समझने में शामिल मानसिक व शारीरिक क्रियाओं दोनों का वर्णन है। स्कीमा ज्ञान की श्रेणियाँ हैं जो संसार की समझ और व्याख्या में हमारी मदद करती हैं। जैसे–जैसे बच्चें के अनुभव में विस्तार होता है वैसे–वैसे नवीन अनुभवों व जानकारी के आधार पर पूर्ववर्ती स्कीमा में संशोधन, जोड़ना या परिवर्तन या नये स्कीमा बनाने की प्रक्रिया होती जाती है। इसीलिए पियाजे ने स्कीमा को विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संरचना कहा है।

203. 'एक उचित प्रश्न/सुझाव के द्वारा बच्ची की समझ को उस बिंदु से बहुत आगे ले जाया जा सकता है जिस पर वह अकेले पहुँच सकती है।''
निम्नलिखित में से कौन सी संरचना उपरोक्त कथन को प्रकाशित करती है?
(a) साम्यधारण
(b) संरक्षण
(c) बुद्धि
(d) समीपस्थ/निकटस्थ विकास का क्षेत्र

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (d) : समीपस्थ/निकटस्थ विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development)– वाइगोत्सकी के अनुसार बालक क्षमताओं की सीमाओं में बंधा है इसलिए वह कुछ कार्य अकेले नहीं कर पाता है। परन्तु जब उसे अपने से अधिक कुशल बालक या परिवार का सदस्य जैसे– माता–पिता, बड़े भाई–बहन या शिक्षक उसकी सहायता करते हैं तो उसकी क्षमता और अधिक हो जाती है। अर्थात् बच्चा जो कर रहा है और जो करने की क्षमता रखता है, के बीच के क्षेत्र को संभावित विकास का क्षेत्र कहा जाता है। अतः यह उदाहरण कि ''एक उचित प्रश्न/सुझाव के द्वारा बच्ची के समझ को उस बिन्दु से बहुत आगे ले जाया जा सकता है, जिस पर वह अकेले पहुँच सकती है।'' को समीपस्थ विकास का क्षेत्र कहा जायेगा।

204. लेव वायगोट्स्की के अनुसार, आधारभूत मानसिक क्षमताओं को मुख्य रूप से किसके द्वारा उच्चतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में बदला जाता है?
(a) सामाजिक पारस्परिक क्रिया
(b) उद्दीपन–अनुक्रिया संबंध
(c) अनुकूलन एवं संघटन
(d) पुरस्कार एवं दण्ड

CTET (VI-VIII) 07/07/2019

Ans. (a) : लेव वाइगोत्सकी के अनुसार, आधारभूत मानसिक क्षमताओं को मुख्य रूप से सामाजिक पारस्परिक क्रिया द्वारा उच्चतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में बदला जाता है। वाइगोत्सकी ने पियाजे के मत के विपरीत जैविक कारक से ज्यादा सामाजिक कारक को उच्चतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे भाषा, स्मृति व अमूर्त चिंतन में महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में देखा। इस प्रकार सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को उन्होंने बालक के विकास में महत्त्वपूर्ण माना है।

205. किसी वस्तु के स्थायित्व की अवधारणा पियाजे के विकास के ..... चरण में प्राप्त हो जाती है।
(a) संवेदी–गामक (b) पूर्व–परिचालन
(c) मूर्त परिचालन (d) औपचारिक परिचालन

CTET (VI-VIII) 09/12/2018

Ans. (a) : किसी वस्तु के स्थायित्व की अवधारणा पियाजे के विकास के संवेदी–गामक चरण में प्राप्त हो जाती है। अर्थात् बालक इस अवस्था में यह जान पाता है कि घटनाएँ एवं वस्तुएँ तब भी उपस्थित रहती हैं जब वे हमारे सामने नहीं होती हैं। संज्ञानात्मक विकास की संवेदी गामक अवस्था जन्म से 2 वर्ष तक होती है।

206. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भाषा और विचार के बारे में पियाजे और वाइगोत्स्की के दृष्टिकोण का सही वर्णन करता है?
(a) दोनों भाषा को बच्चे के विचारों से जन्म लेती हुई मानते हैं।
(b) वाइगोत्स्की के अनुसार पहले विचार जन्म लेता है और पियाजे के अनुसार भाषा का विचार पर भारी प्रभाव पड़ता है।
(c) पियाजे के अनुसार पहले विचार जन्म लेता है और वाइगोत्स्की के अनुसार भाषा का विचार पर भारी प्रभाव पड़ता है।
(d) दोनों मानते हैं कि बच्चे की भाषा से विचार जन्म लेते हैं।

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (c) पियाजे के अनुसार पहले विचार जन्म लेता है और वाइत्गोस्की के अनुसार भाषा का विचार पर भारी प्रभाव पड़ता है।

207. लेव वाइगोत्स्की के अनुसार–
(a) बच्चे भाषा अर्जन की एक युक्ति से कोई भाषा सीखते हैं
(b) वयस्कों और साथियों से अन्योन्यक्रिया करने का भाषा के विकास में कोई प्रभाव नहीं पड़ता
(c) भाषिक विकास मानव चिंतन के स्वभाव को बदल देता है
(d) भाषिक विकास में संस्कृति की भूमिका बहुत कम होती है

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (c) वायगोत्सकी के अनुसार भाषा समाज द्वारा दिया गया प्रमुख सांकेतिक उपकरण है जो कि बालक के विकास में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। क्योंकि भाषा का विकास मानव चिंतन के स्वभाव को बदल देता है।

208. लॉरेंस कोलबर्ग के नैतिक तर्क के सिद्धांत की अनेक बातों के लिए आलोचना की जाती है। इस आलोचना के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(a) कोलबर्ग ने अपने अध्ययन को मूलतः पुरुषों के नमूनों पर आधृत रखा है।
(b) कोलबर्ग ने नैतिक तर्क के प्रत्येक सोपान के लिए विशेष उत्तर नहीं दिया है।
(c) अपनी सैद्धांतिक रूपरेखा पर पहुँचने के लिए कोलबर्ग ने पियाजे के सिद्धांतों को दोहराया है।
(d) कोलबर्ग का सिद्धांत बच्चों के प्रत्यउत्तरों पर ध्यान-केंद्रित नहीं करता।

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (c) लारेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त की कई विसंगतियों को लेकर आलोचना की जाती है। इसी में से एक यह भी है कि इन्होंने पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को ही दोहरा दिया है।

209. जीन पियाजे के द्वारा प्रस्तुत 'संरक्षण' के प्रत्यय से तात्पर्य है कि –
(a) दूसरों के परिदृश्य को ध्यान में रखना एक महत्त्वपूर्ण संज्ञानात्मक क्षमता है
(b) वन्यजीवन और वनों का संरक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है
(c) कुछ भौतिक गुणधर्म वही रहते हैं चाहे बाहरी आकृतियाँ बदल जाएँ
(d) परिकल्पना पर विधिवत् परीक्षण से सही निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (c) जीन पियाजे द्वारा प्रस्तुत संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाओं में से तीसरी अवस्था मूर्त संक्रिया अवस्था है। इस अवस्था के दौरान बालक तीन गुणात्मक मानसिक योग्यताओं में पर्याप्त निपुणता हासिल कर लेता है। ये योग्यताएँ हैं– विचारों की विलोमीयता, संरक्षण तथा क्रमबद्धता, पूर्ण-अंश संम्प्रत्ययों का उपयोग। संरक्षण सम्प्रत्यय के अंतर्गत बालक यह समझने लगता है कि किसी भी भौतिक वस्तु की आकृति बदल देने पर भी उनके मूल गुणों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

210. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों में से सही कथन कौन-सा है?

(a) बच्चों के सांस्कृतिक आधार के अनुसार इन चरणों का क्रम बदला जा सकता है।

(b) पियाजे का तर्क है कि संज्ञानात्मक विकास, चरणों में आगे बढ़ने की अपेक्षा निरंतर होता है।

(c) पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के पाँच स्पष्ट चरण प्रस्तावित किए हैं।

(d) किसी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि ये चरण स्थिर हैं।

CTET (VI-VIII) 18/09/2016

Ans. (d) पियाजे ने कहा है कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी बच्चों में विकासात्मक चरण एक ही समय पर दिखाई पड़े, परन्तु यह निश्चित है कि सभी बच्चों को विकास के सभी चरणों से गुजरना पड़ता है। अर्थात् संज्ञानात्मक विकास के किसी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि ये सभी चरण निश्चित व स्थिर है।

211. पियाजे तथा वाइगोत्स्की के अनुसार, एक रचनात्मक कक्षा-कक्ष में अधिगम

(a) शिक्षार्थियों द्वारा स्वयं सृजित किया जाता है, जो एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं

(b) शिक्षक द्वारा पुनर्बलन किया जाना

(c) शिक्षक द्वारा लिखवाया जाता है तथा शिक्षार्थी निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं

(d) उद्दीपक तथा अनुक्रिया के जोड़ से होता है

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (a) पियाजे तथा वाइगोत्स्की द्वारा बालक के संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या की गई है। इनके अनुसार एक रचनात्मक कक्षा-कक्ष में अधिगम प्रक्रिया का सृजन छात्र द्वारा स्वयं अपने अध्यापक की सहायता से किया जाना चाहिये जो उनके रचनात्मक अधिगम में सक्रिय भूमिका निभाते है।

212. पियाजे के अनुसार, विकास को प्रभावित करने में निम्नलिखित कारकों में से किसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है?

(a) भाषा (b) पुनर्वलन

(c) भौतिक विश्व के साथ अनुभव (d) अनुकरण

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (c) जिन पियाजे के अनुसार विकास को प्रभावित करने में भौतिक/सांसारिक अनुभवों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि पियाजे के अनुसार अलग-अलग अवस्थाओं में बालक अपनी मानसिक क्षमता के द्वारा आस-पास की वस्तुओं को देखकर अपने बौद्धिक विकास को अग्रसर करता है।

213. पूर्व-संक्रियात्मक काल में आने वाली संज्ञानात्मक योग्यता है

(a) अमूर्त चिंतन की योग्यता

(b) अभिकल्पनात्मक निष्कर्ष चिंतन

(c) लक्ष्य-उद्दिष्ट व्यवहार की योग्यता

(d) दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की योग्यता

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (c) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था की अवधि 2 से 6 वर्ष तक माना गया है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था में बच्चे अहंकेन्द्रित हो जाते है, वे चीजों को स्वयं से सम्बद्ध करके देखने लगते है। इस अवस्था में बच्चे लक्ष्य उद्दृष्ट व्यवहार की योग्यता सीख लेते है। इसी अवस्था में संकेतात्मक कार्यों का प्रादुर्भाव तथा भाषा का प्रयोग प्रारम्भ हो जाता है।

214. निम्नलिखित में से किस एक जोड़े का मिलान ठीक हुआ है?

(a) दंड देना और आज्ञापालन अभिविन्यास-नियम तय नहीं है, किंतु समाज के हित में बदले जा सकते हैं

(b) सामाजिक संविदा अभिविन्यास-किसी कार्य के भौतिक परिणाम निर्धारित करते हैं कि वह अच्छा है या बुरा

(c) अच्छा लड़का व अच्छी लड़की अभिविन्यास-अच्छा बनकर कोई स्वीकृति प्राप्त करता है

(d) नियम और आदेश अभिविन्यास-मानवाधिकारों के मूल्य के आधार पर नैतिक सिद्धान्त स्वयं चुने जाते हैं

CTET (VI-VIII) 21/02/2016
CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (c) कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास के पूर्व परम्परागत स्तर पर बच्चे अच्छा लड़का व अच्छी लड़की बनकर कोई स्वीकृति प्राप्त करना चाहते हैं। वे अच्छे बालक अथवा अच्छी बालिका जैसा व्यवहार करने में रुचि लेते हैं, जो कुछ दूसरों को अच्छा लगे या दूसरों की सहायता करे या दूसरों के द्वारा स्वीकृत हो, वही उत्तम माना जाता है।

215. वाइगोत्स्की के अनुसार, सीखने को पृथक् नहीं किया जा सकता

(a) उसके सामाजिक संदर्भ से

(b) अवबोधन और अवधानात्मक प्रक्रियाओं से

(c) पुनर्बलन से

(d) व्यवहार में मापने योग्य परिवर्तन से

CTET (VI-VIII) 21/02/2016

Ans. (a) वाइगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास से सम्बन्धित सामाजिक सांस्कृतिक विकास की अवधारणा को बताया। इसके अनुसार संज्ञानात्मक विकास एक अंतर्वैयक्तिक सामाजिक परिस्थितियों में सम्पन्न होता है तथा बालक जो कुछ सीखता है उस पर उसके सामाजिकता मूल्यों का प्रभाव अवश्य होता है। अतः सीखने को समाजिकता से पृथक नहीं किया जा सकता।

216. अमूर्त वैज्ञानिक चिन्तन के लिए क्षमता का विकास निम्नलिखित अवस्थाओं में से किसकी एक विशेषता है?

(a) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

(b) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

(c) संवेदी-गतिक अवस्था

(d) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (b) पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था है। इस अवस्था के दौरान बालक अमूर्त बातों के सम्बन्ध में तार्किक चिंतन करने की योग्यता विकसित करता है। मूर्त वस्तुओं तथा सामग्री के स्थान पर शाब्दिक तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति का प्रयोग तार्किक चिंतन में करता है।

217. एक बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है- 'आप यह मेरे लिए करें और मैं वह आपके लिए करूँगा।' यह बच्चा कोहलबर्ग की नैतिक तर्कणा की किस अवस्था के अंतर्गत आएगा?

(a) 'अच्छा लड़का-अच्छी लड़की' अभिमुखीकरण
(b) सामाजिक-अनुबंध अभिमुखीकरण
(c) सहायक उद्देश्य अभिमुखीकरण
(d) दण्ड और आज्ञापालन अभिमुखीकरण

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (d) एक बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है ''आप यह मेरे लिए करें और मैं वह आपके लिए करुँगा।'' यह बच्चा कोहलबर्ग की नैतिक तर्कणा के पूर्व परम्परागत स्तर पर है। इस अवस्था में बच्चों का व्यवहार दण्ड तथा आज्ञाकारिता और स्वयं के लाभ की भावना से संचालित होता हैं इस स्तर पर बच्चों के नैतिक निर्णय आत्म रुचि एवं दूसरे इसके बदले में क्या कर सकते हैं, की मान्यताओं पर आधारित होते हैं।

218. 'मानसिक संरचनाएँ जो चिन्तन के निर्माण प्रखंड हैं'- इसके लिए पियाजे ने किस शब्द/पद का प्रयोग किया है?

(a) जीन (b) परिपक्वन प्रखंड
(c) स्कीमा (अवधारणाएँ) (d) विकास के क्षेत्र

CTET (VI-VIII) 20/09/2015

Ans. (c) जीन पियाजे ने मानसिक संरचनाओं के लिए स्कीमा (अवधारणाएँ) शब्द का प्रयोग किया है। स्कीमा से तात्पर्य ऐसी मानसिक संरचना से है जो व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में सूचनाओं को संगठित तथा व्याख्यायित करने हेतु विद्यमान होती है। यह स्कीमा दो प्रकार की होती हैं - पहला साधारण और दूसरा जटिल।

219. पियाजे अनुमोदन करते हैं पूर्व-संक्रियात्मक बच्चे याद रखने में असमर्थ होते हैं। निम्नलिखित कारकों में से किसको उन्होंने इस असमर्थता के लिए जिम्मेदार ठहराया है?

(a) परिकल्पित-निगमनात्मक तार्किकता की अयोग्यता
(b) व्यक्तिगत कल्पित कथा
(c) विचार की अनुत्क्रमणीयता (पलट न सके)
(d) उच्च-स्तर की अमूर्त तार्किकता की कमी

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (c) पियाजे के अनुसार बच्चे पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में याद रखने में असमर्थ होते है क्योंकि बच्चे विचारों की अनुक्रमणियता या अविलोमियता (Irreversible) में सक्षम नही होते है। अर्थात बालक मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः नहीं लौट पाता है।

220. पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार, बच्चे निम्न में से किसके द्वारा सीखते हैं?

(a) सही प्रकार से ध्यान लगाकर जानकारी को याद करना
(b) समाज के आर्थिक योग्य सदस्यों के द्वारा उपलब्ध कराए गए सहारे के आधार पर
(c) अनुकूलन की प्रक्रियाएँ
(d) उपयुक्त पुरस्कार दिए जाने पर अपने व्यवहार में परिवर्तित करना

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (c) पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार बच्चे अनुकूलन से की प्रक्रियाओं के द्वारा सीखते है। अनुकूलन समायोजन में सहायता पहुँचता है कि इसमें आत्मसातन एवं समंजन नामक दो प्रक्रम सन्निहित होते है।

221. वाइगोत्स्की के अनुसार, समीपस्थ विकास का क्षेत्र है –

(a) अध्यापिका के द्वारा दिए गए सहयोग की सीमा निर्धारित करना।
(b) बच्चे के द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले तथा सहायता के साथ करने वाले कार्य के बीच अंतर।
(c) बच्चे को अपना सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए उपलब्ध कराए गए सहयोग की मात्रा एवं प्रकृति।
(d) बच्ची अपने आप क्या कर सकती है जिसका आकलन नहीं किया जा सकता है।

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (b) वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे के द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले तथा सहायता के साथ करने वाले कार्य के बीच अन्तर समीपस्थ विकास का क्षेत्र है।

222. वाइगोत्स्की तथा पियाजे के परिप्रेक्ष्यों में एक प्रमुख विभिन्नता है –

(a) व्यवहारवादी सिद्धान्तों की उनकी आलोचना।
(b) बच्चों को एक पालन-पोषण का परिवेश उपलब्ध कराने की भूमिका।
(c) भाषा एवं चिंतन के बारे में उनके दृष्टिकोण।
(d) ज्ञान के सक्रिय निर्माताओं के रूप में बच्चों की संकल्पना

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (c) वाइगोत्सकी तथा पियाजे के परिप्रेक्ष्यों में भाषा एवं चिंतन के बारे में उनके दृष्टिकोणों में एक प्रमुख विभिन्नता थी। वाइगोत्सकी के अनुसार जहाँ संज्ञानात्मक विकास सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में घटित होता है तथा उससे प्रभावित भी होता है वहीं पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के प्रतिमान सार्वभौमिक स्तर पर प्रदर्शित होते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक असमानताओं का आसमान प्रभाव नहीं पड़ता है।

223. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा वाइगोत्स्की के द्वारा प्रस्तावित विकास तथा अधिगम के बीच सम्बन्ध का सर्वश्रेष्ठ रूप में सार प्रस्तुत करता है?

(a) विकास अधिगम से स्वाधीन है।
(b) विकास-प्रक्रिया अधिगम-प्रक्रिया से पीछे रह जाती है।
(c) विकास अधिगम का समानार्थक है।
(d) अधिगम एवं विकास समानान्तर प्रक्रियाएँ हैं।

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (b) लिव सिमनोविच वाइगोत्सकी का सामाजिक दृष्टिकोण संज्ञानात्मक विकास का एक प्रगतिशील विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वस्तुतः रूसी मनौवैज्ञानिक वाइगोत्सकी ने बालक के संज्ञानात्मक विकास में समाज एवं उसके सांस्कृतिक संबन्धों के बीच संवाद को एक महत्वपूर्ण आयाम घोषित किया। अतः वाइगोत्सकी के द्वारा प्रस्तावित विकास तथा अधिगम के बीच सम्बन्ध का सर्वश्रेष्ठ सार विकास-प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया से पीछे रह जाती है प्रस्तुत करता है।

224. कोह्लबर्ग के सिद्धान्त की एक प्रमुख आलोचना क्या है?

(a) कोह्लबर्ग ने बिना किसी अनुभूतिमूलक आधार के सिद्धान्त प्रस्तुत किया।
(b) कोह्लबर्ग ने प्रस्ताव किया कि नैतिक तार्किकता विकासात्मक है।

(c) कोह्लबर्ग ने पुरुषों एवं महिलाओं की नैतिक तार्किकता में सांस्कृतिक विभिन्नताओं को महत्व नहीं दिया।
(d) कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास की स्पष्ट अवस्थाओं का उल्लेख नहीं किया।

CTET (VI-VIII) 22/02/2015

Ans. (c) कोह्लबर्ग ने पुरूषों एवं महिलाओं की नैतिक तार्किकता में सांस्कृतिक विभिन्नताओं को महत्व नहीं दिया, जबकि जन्म पश्चात् अवस्था परिवर्तन के साथ ही यह दृष्टिगोचर होने लगती है। अतः यह कोह्लबर्ग के सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना है।

225.वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के अनुसार –
(a) संस्कृति और भाषा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं
(b) बच्चे अलग क्षेत्र में चिंतन करते हैं और वे पूर्ण परिप्रेक्ष्य नहीं लेते
(c) यदि निम्न आयु पर अमूर्त सामग्री को प्रस्तुत किया जाए तो बच्चे अमूर्त तरीके से चिंतन करते हैं
(d) स्व-निर्देशित वाक् सहयोग का निम्नतम स्तर है

CTET (VI-VIII) 21/09/2014

Ans. (a) संस्कृति और भाषा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यह कथन वाइगोत्सकी ने अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के अनुसार दिया है। यह एक रशियन मनो-वैज्ञानिक थे, इन्होंने सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर अधिक बल देते हुए बालक के मानसिक विकास पर कार्य किया है।

226.यह तथ्य कि बच्चों को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है, निम्नलिखित में से किस व्यक्ति से सम्बन्धित है?
(a) चार्ल्स डार्विन (b) बी. एफ. स्किनर
(c) यूरी ब्रोनफैनब्रैनर (d) लैव वाइगोत्स्की

CTET (VI-VIII) 21/09/2014

Ans. (d) बच्चों को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह तथ्य लैव वाइगोत्सकी के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धान्त से संम्बधित है।

227.भाषा-विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र पियाजे के द्वारा कम कर आँका गया?
(a) आनुवंशिकता
(b) सामाजिक अंतःक्रिया
(c) अहं-केंद्रित भाषा
(d) विद्यार्थी द्वारा सक्रियात्मक रचना

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (b) पियाजे भाषा विकास में सामाजिक अंतःक्रिया को कम महत्व देते हैं जबकि वाइगोत्सकी भाषा विकास में सामाजिक अंतःक्रिया को विशेष महत्व देते हैं।

228.निम्नलिखित में से कौन-सा कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के चरणों का लक्षण है?
(a) चरणों का परिवर्तनशील अनुक्रम
(b) विभिन्न चरण अलग-अलग प्रत्युत्तर हैं न कि सामान्य प्रतिमान
(c) सभी संस्कृतियों से सम्बद्ध चरणों की सार्वभौम श्रृंखला
(d) विभिन्न चरण एक गैर-पदानुक्रम रूप में आने की ओर बढ़ते हैं

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (c) कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास सार्वभौमिक गोचर है, क्योंकि सामाजिक प्राणी बनने के लिए मान्य व्यवहार संहिता को आत्मसात् करना ही पड़ता है। इसीलिए सभी संस्कृतियों से सम्बद्ध चरणों की सार्वभौम श्रृंखला होती है।

229.निम्नलिखित में से कौन-सा निहितार्थ पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से नहीं निकाला जा सकता?
(a) बच्चों की अधिगमनात्मक तत्परता के प्रति संवेदनशीलता
(b) वैयक्तिक भेदों की स्वीकृति
(c) खोजपूर्ण अधिगम
(d) शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (d) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिन्द्रात से शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता के निहितार्थ को नहीं निकाला जा सकता क्योंकि पियाजे ने अपने सिद्धान्त में कहीं भी शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता पर बल नहीं दिया है। पियाजे के सिद्धान्त में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि संज्ञानात्मक विकास मुख्यतया व्यक्ति की जन्मजात संरचना एवं प्रक्रियाओं के साथ अनुभवों की अंन्तर्क्रिया पर निर्भर करता है।

230.पियाजे के विकासात्मक सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य – में निम्नलिखित में से कौन-सा आरेख विकास को समुचित रूप से स्पष्ट करता है।

(a)

(b)
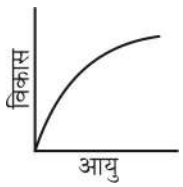

(c)
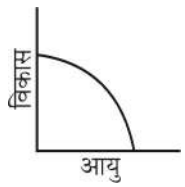

(d)
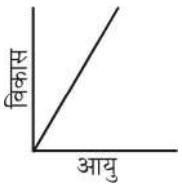

CTET (VI-VIII) 16/02/2014

Ans. (a)
जीन पियाजे के विकासात्मक परिप्रेक्ष्य में जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है उसी अनुपात में बालक का विकास भी होता है।

231.'बच्चे फिल्मों में दिखाए गए हिंसात्मक व्यवहार को सीख सकते हैं।' यह निष्कर्ष निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक द्वारा किए गए कार्य पर आधारित हो सकता है?
(a) जे. बी. वाटसन (b) एल्बर्ट बंडूरा
(c) जीन पियाजे (d) एडवर्ड एल. थार्नडाइक

CTET (VI-VIII) 28/07/2013

Ans. (b) एल्बर्ट बंडूरा ने सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम के स्थान पर अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अर्थात अवलोकनात्मक अधिगम का सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक स्थान है। यही कारण है कि बच्चे फिल्मों में दिखाये गये हिंसात्मक व्यवहार को जल्दी सीख सकते है।

232.बाल-केंद्रित शिक्षा का समर्थन निम्नलिखित में से किस विचारक द्वारा किया गया?

(a) एरिक इरिकसन (b) चार्ल्स डार्विन
(c) बी. एफ. स्किनर (d) जॉन ड्यूवी

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (d) जॉन ड्यूवी द्वारा बाल केन्द्रित शिक्षा का समर्थन किया गया।

233.लॉरेंस कोहलबर्ग के द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित चरणों में से प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे किन चरणों का अनुसरण करते हैं?

A. आज्ञापालन और दण्ड-उन्मुखीकरण
B. वैयक्तिकता और विनिमय
C. अच्छे अंत:वैयक्तिक सम्बन्ध
D. सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार

(a) a और b (b) b और d
(c) a और d (d) a और c

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (a) कोहलबर्ग के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे नैतिक विकास के पूर्व-परम्परागत स्तर पर होते है। इस स्तर पर बच्चे आत्मकेन्द्रित निर्णय लेते है, उनमें दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता होती है, यांत्रिक सापेक्ष अभिमुखता और वैयक्तिकता तथा विनिमय की भावना होती है।

234.'एक महिला ने भोजन प्राप्त करने के लिए अपने बच्चे को बेच दिया।' इस खबर को ..... के आधार पर अच्छी तरह समझा जा सकता है।

(a) मनोसामाजिक सिद्धान्त
(b) पुनर्वलित आकस्मिकताओं का सिद्धान्त
(c) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त
(d) पदानुक्रमिक आवश्यकताओं का सिद्धान्त

CTET (VI-VIII) 18/11/2012

Ans. (d) 'एक महिला ने भोजन प्राप्त करने के लिए बच्चे को बेच दिया' यह मैस्लो द्वारा दिये गये सिद्धान्त प्रदानुक्रमित आवश्कताओं के सिद्धान्त को सिद्ध करता है, जिसके अनुसार दैहिक माँगों को व्यक्ति सबसे उपर रखता है जिसमे भोजन, पानी आदि आते है उसके बाद अन्य माँगों जैसे सुरक्षा की माँग, सामाजिक माँग, सम्मान माँग, आत्मानुभूति माँग आता है।

235.पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है?

(a) मूर्त संक्रियात्मक चरण
(b) औपचारिक संक्रियात्मक चरण
(c) संवेदीप्रेरक चरण
(d) पूर्व-संक्रियात्मक चरण

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (c) संवेदी प्रेरक चरण में शिशु असहाय जीवधारी से गतिशील, अर्द्धभाषी तथा सामाजिक दृष्टि से चतुर व्यक्ति बन जाते हैं वे आवाज तथा प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करते है, रूचिकर कार्यों को करते रहने की कोशिश करते रहते हैं तथा वस्तुओं को स्थिर मानते हैं। वे ऐसे वस्तुओं के बारे में भी कल्पना करना प्रारम्भ कर देते हैं जो प्रत्यक्ष नहीं होती है।

236.कोह्लबर्ग के अनुसार, सही और गलत के प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन-प्रक्रिया को कहा जात है –

(a) सहयोग की नैतिकता (b) नैतिक तर्कणा
(c) नैतिक यथार्थवाद (d) नैतिक दुविधा

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (c) कोहलवर्ग के अनुसार, सही और गलत में प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन प्रक्रिया को नैतिक यथार्थवाद कहा जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति सार्वभौमिक मानवाधिकार पर आधारित नैतिक मापदण्ड बनाता है। जब भी कोई व्यक्ति अंतरआत्मा की आवाज के द्वन्द्व के बीच फँसा होता है तो वह व्यक्ति अन्तरआत्मा की आवाज सुनता है और नैतिक यथार्थवाद का रास्ता अपनाता है।

237.पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है, ... कहलाती है।

(a) प्रत्यक्षण (b) समायोजन
(c) समावेशन (d) स्कीमा

CTET (VI-VIII) 29/01/2012

Ans. (c) पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है, समावेशन कहलाती है।

238.पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था (जन्म से लगभग 2 वर्ष आयु) के दौरान बच्चा .... सबसे बेहतर सीखता है।

(a) अमूर्त तरीके से चिंतन द्वारा
(b) भाषा के नए अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग द्वारा
(c) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा
(d) निष्क्रिय (neutral) शब्दों को समझने के द्वारा

CTET (VI-VIII) 26/06/2011

Ans. : (c) पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था संवेदी पेशीय अवस्था होती है। इस अवस्था में बालक देखने, छूने, पहुँचने, पकड़ने, चूसने आदि की स्वतः सहज क्रियाओं से व्यवस्थित प्रयासरत क्रियाओं की ओर अग्रसित होता है। भाषा का अनुकरण करने लगता हैं, आवाज, प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करता हैं आदि।

239. लेव-वाइगोत्स्की के अनुसार बच्चे_____के साथ अंत:क्रिया के अनुभव से लाभान्वित होते हैं और उन कार्यों को कर पाते हैं जो उनके समीपदुराभिमुख विकास के क्षेत्र के_____हैं।

(a) अधिक जानकार अन्य; अंदर
(b) अधिक जानकार अन्य; बस बाहर
(c) भौतिक वातावरण; अंदर
(d) भौतिक वातावरण; बस बाहर

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (a) : वाइगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त से संबंधित है। इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चे के विकास में सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चे अधिक जानकार अन्य (MKO) के साथ अंत:क्रिया के अनुभव से लाभान्वित होते हैं और उन कार्यों को कर पाते हैं जो उसके समीप दुराभिमुख विकास के क्षेत्र (ZPD) के अंदर है।

240. जीन पियाजे के अनुसार चिह्नों का प्रयोग करने की क्षमता जैसे कि अक्षर X को अज्ञात अंक के लिए मानने की क्षमता_____ के दौरान विकसित होती है और विद्यार्थियों को _____सीखने में सक्षम बनाती है।

(a) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था; बीजगणित और गणना
(b) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था; संरक्षण और क्रमबद्धता
(c) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था; बीजगणित और गणना
(d) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था; संरक्षण और क्रमबद्धता

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (c) : जीन पियाजे के अनुसार चिह्नों का प्रयोग करने की क्षमता जैसे कि अक्षर x को अज्ञात अंक के लिए मानने की क्षमता, औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष से वयस्कता तक) में विकसित होती है। इस अवस्था में, विद्यार्थी अमूर्त अवधारणाओं तार्किक सोच और समस्याओं का विश्लेषण करने में सक्षम होते हैं। वे बीजगणित समीकरणों का उपयोग करके समस्याओं को हल कर सकते हैं और गणना के माध्यम से निर्णय ले सकते हैं।

241. निम्न में से कौन सा एक महारत लक्ष्य अभिविन्यास का वर्णन करता है?

(a) दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक निश्चित स्तर के प्रदर्शन को प्राप्त करने पर ध्यान देना।
(b) किसी कार्य के लिए अपनी कौशल और समझ को सुधारने पर ध्यान देना।
(c) बाहरी पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उच्च ग्रेड प्राप्त करने पर ध्यान देना।
(d) अपमान के डर से असफलता या सजा से बचने पर ध्यान देना।

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (b) : महारत लक्ष्य अभिविन्यास का वर्णन करने वाला उन्मुख व्यक्ति उच्च स्तर के प्रयास करके किसी कार्य में अपनी समझ और क्षमता विकसित करने का प्रयास करते हैं। वे अपने आप को चुनौती देते हैं और अपनी सीखने की प्रक्रिया का आनंद लेते हैं।

242. कोहलबर्ग के नैतिक विकास की किस अवस्था में बच्चों का तर्क कानून की नैतिकता के इर्द-गिर्द घूमता है?

(a) पूर्व-पारंपरिक नैतिकता (b) पारंपरिक नैतिकता
(c) विषम नैतिकता (d) स्वायत्त नैतिकता

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (b) : कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार, पारंपरिक नैतिकता के स्तर में, बच्चे नियमों और अधिकार का पालन करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि यह समाज के लिए अच्छा है। वे कानून को नैतिकता का आधार मानते हैं और गलत सही के बारे में निर्णय लेने के लिए इसका उपयोग करते हैं। इसके दो चरण हैं-

- अच्छे लड़के/लड़की नैतिकता।
- अधिकार और कानून का उन्मुखीकरण।

243. कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत की कैरोल गिलिगन की आलोचना का केंद्रीय तर्क है :

(a) देखभाल की नैतिकता और नारीवादी दृष्टिकोण।
(b) बच्चों की नैतिक क्षमताओं को अधिक आंकना।
(c) बच्चों के अध्ययन में प्रायोगिक शोध प्रणाली का उपयोग।
(d) स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ।

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)
CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)
CTET (VI-VIII) 23/12/2021
CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)
CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)
CTET (VI-VIII) 24/12/2021

Ans. (a) : कैरोल गिलिमन ने कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि यह पुरुष-केंद्रित है और महिलाओं के नैतिक दृष्टिकोण को ध्यान में नहीं रखता है। उन्होंने कहा कि महिलाएँ ''देखभाल की नैतिकता'' पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं, जो रिश्तों और जिम्मेदारी पर आधारित होती है, जबकि पुरुष ''न्याय की नैतिकता'' पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं, जो निष्पक्षता और नियमों पर आधारित होती है।

244. जीन पियाजे का मानना था कि ज्ञान है :

(a) पर्यावरण से निष्क्रिय रूप से पारित होने के बजाय बच्चे द्वारा निर्मित किया जाता है।
(b) अंतःक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त करने के बजाय जन्मजात और दिया हुआ होता है।
(c) अधिक जानकार अन्य लोगों के साथ बातचीत से सह-निर्मित होता है।
(d) एक दृश्य व्यवहार परिवर्तन है जिसे विश्वसनीयता के साथ मापा जा सकता है।

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (a) : जीन पियाजे का मानना था कि ज्ञान पर्यावरण से निष्क्रिय रूप से पारित होने के बजाय बच्चे द्वारा निर्मित किया जाता है। यह कथन पियाजे के ज्ञान के निर्माण के सिद्धान्त को सही ढंग से दर्शाता है।

245. वाइगोत्स्की के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास को सुगम बनाने में शिक्षक की क्या भूमिका है?

(a) छात्र को जानकारी और ज्ञान प्रदान करना।
(b) आलम्बन के माध्यम से छात्र के सीखने का मार्गदर्शन और समर्थन करना।
(c) छात्र को पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से सीखने की अनुमति देना।
(d) केवल उन्हीं कार्यों को देना जो विद्यार्थी वर्तमान में स्वतंत्र रूप से कर सकता है।

CTET (VI-VIII) 21/01/2024 (Shift-II)

Ans. (b) : वाइगोत्सकी एक रूसी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। संज्ञानात्मक विकास सामाजिक अंतः क्रिया, भाषा और संस्कृति के प्रभाव से होता है। वाइगोत्स्की ने ZPD का आविष्कार किया जिसे आलम्बन (Scaffolding) में, शिक्षक छात्र को उसकी क्षमताओं से थोड़ा ऊपर के कार्यों में सहायता प्रदान करता है। यह धीरे-धीरे कम होती जाती है क्योंकि छात्र स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सक्षम हो जाता है।

246. निम्नलिखित में से किसने 'सामान्य' बुद्धि की अवधारणा की आलोचना की और बुद्धि का एक वैकल्पिक सिद्धांत प्रस्तावित किया ?

(a) जीन पियाज़े (b) हॉवर्ड गार्डनर
(c) लेव वायगोत्स्की (d) चार्ल्स स्पीयरमैन

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : हॉवर्ड गार्डनर ने 'सामान्य' बुद्धि की अवधारणा की आलोचना की और बुद्धि का एक वैकल्पिक सिद्धान्त प्रस्तावित किया जिसे गार्डनर का बहुबुद्धि का सिद्धान्त कहते हैं। जिसमें उन्होंने बताया कि बुद्धि कई क्षमताओं के समूह में आती है। इसमें उन्होने बुद्धि के आठ प्रकार बताए जो निम्न हैं-
(1) भाषाई बुद्धि, (2) संगीतिक बुद्धि (3) तार्किक गणितीय बुद्धि (4) स्थानिक बुद्धि (5) शारीरिक गतिज बुद्धि (6) अंतः वैयक्तिक बुद्धि (7) अंतरवैयक्तिक बुद्धि (8) प्रकृतिवादी बुद्धि।

247. पियाजे के अनुसार, गुणात्मक रूप से चार विभिन्न अवस्थाएँ :

(a) दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों में व्यापक रूप से भिन्न होती हैं।
(b) उदाहरण देकर समझाती हैं कि बच्चों का मन लघु वयस्क मन होता है।
(c) बच्चों के जेनेटिक कोड पर निर्भर होती हैं।
(d) बच्चों के विकास के सार्वभौमिक पैटर्नों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)
CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : पियाजे के अनुसार, गुणात्मक रूप से चार विभिन्न अवस्थाएँ बच्चों के विकास के सार्वभौमिक पैटर्नों का प्रतिनिधित्व करती है। ये अवस्थाएँ हमेशा एक ही क्रम में होती हैं तथा प्रत्येक अवस्था पूर्व अवस्था में सीखने पर आधारित होती है।
ये अवस्थाएँ है।
* संवेदी गामक अवस्था (जन्म से 2 वर्ष)
* पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2 से 7 वर्ष)
* मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7 से 11 वर्ष)
* औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 से 15 वर्ष)

248. निम्नलिखित में से कौन-सी पियाज़े के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत की सीमा है ?

(a) वह संज्ञानात्मक विकास में भाषा की भूमिका पर अत्यधिक बल देता है।
(b) वह संज्ञानात्मक विकास में व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में नहीं रखता है।
(c) वह संज्ञानात्मक विकास में जैविक कारकों की भूमिका को ध्यान में नहीं रखता है।
(d) वह संज्ञानात्मक विकास पर संस्कृति और सामाजिक कारकों के प्रभाव को ध्यान में नहीं रखता है।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (d) : पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की सीमा है कि वह संज्ञानात्मक विकास पर संस्कृति और सामाजिक कारकों के प्रभाव को ध्यान में नहीं रखता है। पियाजे के अनुसार बच्चों में बुद्धि का विकास जन्म से जुड़ा हुआ है। प्रत्येक बालक अपने जन्म के समय कुछ जन्म जात प्रवृत्तियाँ एवं सहज क्रियाओं को करने सम्बन्धी योग्यताओं जैसे-चूसना, देखना, वस्तुओं को पकड़ना आदि को लेकर पैदा होता है जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है। वैसे-वैसे उसकी भौतिक क्रियाओं का दायरा भी बढ़ जाता है। अतः पियाजे के अनुसार, विकास में भौतिक वातावरण तथा जैविक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

249. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए :

अभिकथन (A) : बच्चों में संज्ञानात्मक विकास पर भाषा के प्रभाव पर जीन पियाज़े और लेव वायगोत्सकी के दृष्टिकोण में भिन्नता है।

कारण (R) : खोज अधिगम में, शिक्षक अवसर प्रदान करता है और विद्यार्थी स्वयं जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्मुख होते है।

(a) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं हैं।
(c) (A) और (R) दोनों गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

CTET (VI-VIII) 20/08/2023 (Shift-II)

Ans. (b) : बच्चों में संज्ञानात्मक विकास पर भाषा के प्रभाव पर जीन पियाज़े और लेव वायगोत्सकी के दृष्टिकोण में भिन्नता है। पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास भाषा से स्वतंत्र है और विचार भाषा को निर्धारित करते हैं अर्थात् विचार पहले उभरते हैं और भाषा का विकास बाद में होता है। जबकि वाइगोत्सकी के अनुसार बालक में पहले भाषा का विकास होता है उसके बाद उसमें विचार उत्पन्न होते हैं। खोज अधिगम में, शिक्षक अवसर प्रदान करता हैं और विद्यार्थी स्वयं जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्मुख होते हैं। अतः (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं हैं।

250. व्यागोत्सकी के अनुसार निम्न में से क्या बच्चों को समीपस्थ विकास के क्षेत्र की दूरी तय करने में मदद करेगा?

(a) पाड़ (b) अनुकूलन
(c) पूर्वाभ्यास (d) निष्क्रिय अनुसरण

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (a) : वायोगोत्स्की के अनुसार पाड़ बच्चों को समीपस्थ विकास के क्षेत्र की दूरी तय करने में मदद करेगा। वायगोत्स्की का मचान (पाड़ या आधारभूत सहायता) का एक सिद्धांत है जो एक अधिक सक्षम व्यक्ति की मदद से एक छात्र की जानकारी को सीखने की क्षमता पर केंद्रित हैं। यह जब प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है, तो मचान एक छात्र को उस विषयवस्तु को सीखने में मदद कर सकता है जिसे वे स्वयं संसाधित करने में सक्षम नहीं होते हैं। यहाँ शिक्षक एक सुविधादाता के रूप में कार्य करते हैं और समस्या को हल करते समय बच्चों के किसी बिंदु पर अटकने पर संकेत और सहायता प्रदान करते हैं।

251. रमेश को अपने मित्र का पेन बहुत आकर्षित लगता है, वह उसे चुराने का विचार करता है परन्तु वह उसे नही चुराता क्योंकि यदि उसके अभिभावकों को पता चलेगा तो वे उसे बुरा बालक कहेगें। कोहलबर्ग के अनुसार रमेश नैतिक विकास की किस चरण में है?

(a) यांत्रिक सापेक्षता अभिनिन्यास
(b) सजा व आज्ञाकारिता अभिविन्यास
(c) सामाजिक अनुबंधन अभिविन्यास
(d) अच्छा लड़का-अच्छी लड़की अभिविन्यास

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (d) : रमेश को अपने मित्र का पेन बहुत आकर्षित लगता है, वह उसे चुराने का विचार करता है परन्तु वह उसे नहीं चुराता क्योंकि यदि उसके अभिभावकों को पता चलेगा तो वे उसे बुरा बालक कहेगें। कोहलबर्ग के अनुसार रमेश नैतिक विकास के अच्छा लड़का-अच्छी लड़की अभिविन्यास चरण में हैं। कोहलबर्ग के अनुसार 'अच्छा लड़का-अच्छी लड़की अभिविन्यास' 'पारंपरिक नैतिकता' को इंगित करता है क्योंकि इस अवस्था के दौरान बच्चे के नैतिक व्यवहार का कारण 'स्वीकृति प्राप्त करना और दूसरों द्वारा निंदा से बचाना' है।

परम्परागत नैतिकता, नैतिकता का एक चरण है जिसमें :

★ बच्चे दूसरों को खुश करने के लिए निर्णय लेते हैं।

★ बच्चे पारस्परिक संबंधों को बनाए रखने की कोशिश करते हैं।

★ बच्चे दूसरों के अनुमोदन पर प्रयास करते हैं।

252. अभिकथन (A) : जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की एक प्रमुख आलोचना उनका यह विश्वास है कि सभी बच्चे चार चरणों के क्रम में एक ही तरीके से प्रगति करते हैं।

तर्क (R) : सामाजिक-सांस्कृतिक कारक संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सही विकल्प चुनें :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) की (R) सही व्याख्या करता है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (A) की (R) सही व्याख्या नहीं करता है।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (a) : सामाजिक-सांस्कृतिक कारक शिक्षार्थी के संज्ञानात्मक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, केवल शारीरिक और जैविक कारक बच्चे के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ आधारों पर इसकी आलोचना भी की जाती है जैसे कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यह सिद्धांत सभी संस्कृतियों एवं सामाजिक अवस्थाओं में बच्चों में संज्ञानात्मक विकास की समुचित व्याख्या नहीं कर पाता क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि सभी बच्चों में एक ही आयु में सभी चीजों का समान रूप से विकास हो जाए। प्रतिभाशाली बालक कम उम्र में औपचारिक परिचालन को प्राप्त कर लेते हैं परन्तु मंद बुद्धि बालक बाद में। अतः इस संदर्भ में (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) की (R) सही व्याख्या करता हैं।

253. किस चरण में बच्चों की तर्कशीलता समस्या को एक ही पहलू से प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली अनुभूति पर सीमित रहती है?

(a) औपचारिक पारंपारिक (b) पूर्व संक्रियात्मक

(c) मूर्त संक्रियात्मक (d) अमूर्त संक्रियात्मक

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (b) : पूर्व संक्रियात्मक चरण में बच्चों की तर्कशीलता समस्या को एक ही पहलू से प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली अनुभूति पर सीमित रहती हैं।

★ पूर्व-संक्रियात्मक सोच स्वकेन्द्रित होती है।

★ पूर्व-संक्रियात्मक सोच एक समय में समस्या के केवल एक पहलू या आयाम पर ध्यान केंद्रित करती है। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु की ऊंचाई को देखते हुए, बच्चा अपनी चौड़ाई में किसी भी बदलाव पर विचार करने में असमर्थ होता हैं। बच्चा कई विशेषताओं को संभालने में असमर्थ हैं।

★ पूर्व-संक्रियात्मक बच्चा संबंधित शब्दों जैसे कि चीजें आंतरिक रूप से कैसे संचालित होती हैं या चीजें एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं, इसको समझने में सक्षम नहीं होता हैं।

254. निम्न में से कौन लेव वायगोत्स्की के सिद्धांत से उत्पन्न होने वाला एक कक्षा निहितार्थ है?

(a) शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के समर्थन के लिए दिए जाने वाली मदद की स्तर और मात्रा में बदलाव करें।

(b) शिक्षकों को उद्धीपन और प्रतिक्रिया के अनुकूलन को सक्षम करना चाहिए।

(c) शिक्षकों को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के सुदृढ़ीकरण को बढ़ावा देना चाहिए।

(d) शिक्षकों को स्मृति रणनीतियों को बढ़ाने के तरीके तैयार करने चाहिए।

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (a) : लेव वायगोत्स्की के अनुसार, शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के समर्थन के लिए दिए जाने वाली मदद की स्तर और मात्रा में बदलाव करें। उन्होंने पाड़ शब्द का इस्तेमाल किया जो शिक्षकों द्वारा छात्रों को उत्तरोत्तर मजबूत समझ और अंततः सीखने की प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्रता की ओर ले जाने के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रकार की निर्देशात्मक सामग्री को संदर्भित करता हैं।

255. बच्चों में नैतिक विकास का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया है?

(a) बी.एफ. स्कीनर (b) लॉरेंस कोहलबर्ग

(c) लेव व्यागोत्सकी (d) अल्बर्ट बंडुरा

CTET (VI-VIII) 29/12/2022 (Shift-II)

Ans. (b) : एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोहलबर्ग ने 1969 में नैतिक विकास के सिद्धांत का प्रस्ताव दिया। उन्होंने अपने सिद्धांत में नैतिक विकास का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया है जिसे 3 स्तरों और 6 अवस्थाओं में वर्गीकृत किया गया है-

(1) पूर्व परंपरागत अवस्था (Pre-conventional stage) ⇒ 4 से 10 वर्ष
   (i) दंड एवं आज्ञापलन उन्मुखता
   (ii) साधनात्मक सापेक्षवादी उन्मुखता

(2) परंपरागत अवस्था (Conventional Stage) ⇒ 10 से 13 वर्ष
   (i) अच्छा लड़का या अच्छी लड़की बनने की उन्मुखता
   (ii) कानून एवं व्यवस्था उन्मुखता

(3) उत्तर परंपरागत स्तर (Past-conventional stage) ⇒ 13 वर्ष से अधिक
   (i) सामाजिक अनुबंधन उन्मुखता
   (ii) सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत

256. जीन पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में बच्चे तर्कपूर्ण ढ़ंग से सोच पाते हैं पर उन्हें _____ में कठिनाई आती है।

(a) प्रतिकात्मक प्रतिनिधित्व

(b) संरक्षण के कार्य

(c) परिकल्पित निगमनात्मक तर्क

(d) क्रमबद्धता के कार्य

CTET (VI-VIII) 09/01/2023 (Shift-II)